जब सुरेश ने अपने चित्र को देखा तो वह मुग्ध होकर उसे देखता ही रह गया। एकबारगी उसे विश्वास नहीं हुआ कि वह इतना सुन्दर है। उसके मुख से अनायास ही निकला, "काश, आयु के साथ-साथ यह चित्र भी बदल जाता और मेरे शरीर में रूप और यौवन सदा इसी प्रकार अठखेलियाँ करता रहता।" और उसकी आकांक्षा पूरी हुई। उसने पाप किये, हत्या की, भोली और असहाय बालिकाओं की लाज लूटी, किन्तु वह फिर भी उसी प्रकार रूपवान और आकर्षक बना रहा, लेकिन उसका चित्र बदलता रहा, कुरूप और बूढ़ा होता रहा और एक दिन जब उसने उस चित्र को फाड़ना चाहा ...।

'आस्कर वाइल्ड' के उपन्यास "दि पिक्चर आफ डोरियन ग्रे" की कथा पर आधारित इस पुस्तक में प्रेम-विरह, घृणा ममता और रहस्य-रोमांच का अनूठा चित्रण देखिये।

पाप की छाया

रमेश चन्द्र 'प्रेम'

किताब महल : इलाहाबाद : बम्बई

पुस्तक
पाप की छाया
विषय
उपन्यास
लेखक
रमेश चन्द्र 'प्रेम'
प्रकाशक
किताब महल, इलाहाबाद
मुद्रक
यूनियन प्रेस, इलाहाबाद

१

हेमन्त की चित्रशाला गुलाब के पुष्पों की मीठी सुगन्धि से भर गई। आकाश पर बादल छाने लगे और हल्की-हल्की बयार ने वातावरण को उतावला बना दिया।

कमरे के मध्य में हेमन्त हाथ में तूलिका लिये एक चित्र बनाने में व्यस्त था। कुँवर राजेन्द्र आराम से सोफे पर लेटा हुआ उसे बहुत देर तक देखता रहा। फिर उसने कहा, 'यह तुम्हारा सबसे सुन्दर चित्र है, हेमन्त! ऐसा चित्र तुमने पहले कभी नहीं बनाया। तुम्हें इस चित्र को इस वर्ष प्रदर्शनी में अवश्य भेजना चाहिये।'

'लेकिन मैं इसे कहीं नहीं भेजूँगा', हेमन्त ने चित्र की ओर देखकर खोये से स्वर में कहा।

कुँवर राजेन्द्र की भौंहें तन गई। उसने आश्चर्य से पूछा, 'तुम इसे कहीं नहीं भेजोगे? क्या इसका कोई विशेष कारण है? तुम कलाकार भी बड़े विचित्र होते हो। तुम दुनिया में अपनी प्रसिद्धि के लिए सभी कुछ करते हो और जब तुम्हें प्रसिद्धि मिल जाती है तो तुम उसे बनाये रखना नहीं चाहते। यह कोरा पागलपन है। दुनिया में प्रचार होना बहुत बुरी बात है, लेकिन उससे भी बुरी बात प्रचार का न होना है। यह चित्र तुम्हें सारे भारत के युवकों में प्रसिद्ध कर देगा और यदि वृद्धों में भी कोई भावना होती है तो वे तुमसे ईर्ष्या करेंगे।'

हेमन्त ने कहा, 'मैं जानता हूँ तुम मुझ पर हँसोगे, किन्तु मैं उसे प्रदर्शित नहीं कर सकता। मेरी आत्मा इसमें पूर्णतया समा गई है।'

कुँवर राजेन्द्र सोफे पर उठ कर बैठ गया। उसने हँस कर कहा, 'मैं

नहीं जानता था कि तुम इतने घमंडी हो। इस चित्र की ओर देखो। क्या तुम बता सकते हो कि इस चित्र और तुममें कहीं भी कोई समानता है? तुम्हारा चेहरा भद्दा और मोटा है। तुम्हारे बाल हलके और भूरे हैं। किन्तु इस युवक का चेहरा गुलाब की पंखरियों के समान सुन्दर है। यह चित्र तुम्हारी आत्मा का प्रतिबिम्ब मात्र है, किन्तु जहाँ आत्मा का प्रतिबिम्ब आरम्भ होता है वहाँ वास्तविक सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। दुनिया के किसी भी प्रसिद्ध और सफल आदमी को देखो, वह अवश्य ही कुरूप होगा। मैं विश्वास से कह सकता हूँ कि तुम्हारा यह रहस्यमय युवक मित्र कभी भी गम्भीरता से नहीं सोच सकता। तुमने उसका नाम मुझे कभी नहीं बताया, किन्तु उसके चित्र ने वास्तव में ही मेरा मन मोह लिया है। वह बुद्धिहीन सुन्दर युवक है। तुम जरा भी उसकी समानता नहीं कर सकते।'

हेमन्त ने चित्र की ओर अपलक निहारते हुए उत्तर दिया, 'मैं मानता हूँ, मैं उसकी समानता नहीं कर सकता। तुम्हारा पद और संपत्ति, मेरी बुद्धि और मेरी कला सुरेश के सौंदर्य के सामने बहुत तुच्छ हैं।'

'सुरेश? क्या यही उसका नाम है?' कुँवर राजेन्द्र ने पूछा।

'हाँ, उसका यही नाम है, लेकिन मैं तुम्हें वह नाम बताना नहीं चाहता था।'

'क्यों?'

'वह बात मैं तुम्हें नहीं बता सकता। जब मैं किसी को हृदय से स्नेह करता हूँ तो मैं किसी को उसका नाम नहीं बताता। यदि कोई साधारण सी बात को भी छिपाने में सफल हो जाय तो वह कम आनन्ददायक नहीं होती। मैं जानता हूँ इसके लिए तुम मुझे अवश्य ही मूर्ख समझोगे।'

'नहीं, कभी नहीं', कुँवर राजेन्द्र ने कहा, 'शायद तुम भूल गये हो कि मैं विवाहित हूँ और विवाह का सबसे बड़ा आकर्षण यह है कि वह पति-पत्नी को आपस में धोखा देना सिखाता है। मैं नहीं जानता

कि मेरी पत्नी कहाँ है। मेरी पत्नी भी नहीं जानती कि मैं क्या कर रहा हूँ। हम अक्सर एक दूसरे से मिलते हैं। और जब हम मिलते हैं तो साथ-साथ घूमने जाते हैं और एक साथ बैठ कर भोजन करते हैं। हम गम्भीर मुद्रा में एक दूसरे को बनावटी कहानियाँ सुनाते हैं। किन्तु मेरी पत्नी मुझसे अधिक बातें बना सकती है।'

'तुम्हें अपने विवाहित जीवन के विषय में ऐसी घृणित बात नहीं करनी चाहिये, राजेन्द्र। तुम विचित्र आदमी हो। तुम कभी नैतिकता की बात सोच ही नहीं सकते। और इस पर भी कहते हो कि तुम कोई गलत काम नहीं करते,' हेमन्त ने चित्रशाला के द्वार से बाहर निकलते हुए कहा।

कुँवर राजेन्द्र भी उसके साथ उठ कर बाहर उद्यान में चला आया। जब दोनों आम के पेड़ के नीचे पड़ी बेंत की कुर्सियों पर बैठ गये तो राजेन्द्र ने पूछा, 'मैं जानना चाहता हूँ कि तुम इस चित्र को प्रदर्शित क्यों नहीं करोगे? मैं वास्तविक कारण जानना चाहता हूँ।'

हेमंत ने राजेन्द्र की आँखों में देखते हुए कहा, 'इसका कारण मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ। मैंने इसमें अपनी आत्मा का सारा रहस्य चित्रित कर दिया है। जब प्रथम बार मेरी सुरेश से भेंट हुई तो उसे देख कर मैं स्तब्ध रह गया। वह बहुत सुन्दर था। मुझे अनुभव हुआ कि मेरी आत्मा, और मेरी सारी कला उसी में समा जायगी। जब तक मैं उससे नहीं मिला था तब तक मेरे जीवन में बाहरी प्रभाव का कोई स्थान नहीं था। किन्तु आज मुझे लग रहा है कि मैं जीवन के सबसे बड़े सङ्कट के निकट पहुँच गया हूँ।'

'क्या सुरेश से तुम्हारी भेंट अक्सर होती है?'

'वह मुझसे रोज मिलता है। जिस दिन भी वह मुझे नहीं मिलता उसी दिन मेरे जीवन में भारी निराशा छा जाती है। उससे भेंट करना मेरे लिए बहुत जरूरी है।'

'बड़ी विचित्र बात है। मैं तो समझता था कि तुम अपनी कला के सिवा और किसी बात की चिन्ता ही नहीं करते।'

हेमन्त ने गम्भीरता से कहा, 'वही मेरी सच्ची कला है, राजेन्द्र। मैं उसका चित्र बनाता हूँ किन्तु वह केवल चित्रकार का 'माडल' ही नहीं है। इसके अतिरिक्त भी वह बहुत कुछ है। उससे मिलने के बाद मैंने जिस कला का संचय किया है वह मेरे जीवन की सबसे सुन्दर कला है। तुम नहीं जानते राजेन्द्र, सुरेश मेरे लिये क्या है?'

'तब तो मैं उससे अवश्य भेंट करूँगा,' कुँवर राजेन्द्र ने कहा।

हेमन्त कुछ देर तक खिले हुये गुलाब के फूलों की ओर देखता रहा। फिर उसने कहा, 'सुरेश मुझे कला की प्रेरणा देता है। सम्भव है तुम उसमें कुछ भी न देख पाओ। किन्तु मुझे उसमें सच्ची कला का दर्शन होता है।'

'तब तुम इस चित्र को प्रदर्शित क्यों नहीं करते?' कुँवर राजेन्द्र ने पूछा।

'क्योंकि इस चित्र में मैंने अनजाने में ही कुछ ऐसी भावनाएँ भर दी हैं, जो सुरेश को मैंने कभी नहीं बताईं। वह इस बारे में कभी कुछ भी नहीं जान सकता, लेकिन दुनिया तो उसका अनुमान लगा सकती है। मैं दुनिया के सामने अपने हृदय को खोलना नहीं चाहता। मैं कभी इसे सहन नहीं कर सकता।'

'मेरे मत में तुम्हारा सिद्धान्त गलत है, हेमन्त। किन्तु मैं बहस करना नहीं चाहता। मैं पूछता हूँ कि क्या सुरेश भी तुमसे स्नेह करता है?'

हेमन्त कुछ देर तक सोचता रहा, फिर उसने कहा, 'वह मुझसे स्नेह करता है। मैं जानता हूँ कि वह मुझसे स्नेह करता है। हम चित्रशाला में बैठ कर घंटों बातें करते हैं। मुझे लगता है राजेन्द्र कि मैंने अपना सम्पूर्ण हृदय किसी को दे दिया है।'

कुँवर राजेन्द्र हँसा। उसने कहा, 'एक दिन आयेगा, जब उसका सौन्दर्य नष्ट हो जायगा। उस दिन तुम उससे तनिक भी प्रेरणा प्राप्त नहीं

कर सकोगे। तुम किसी दिन उसकी ओर देखोगे तो तुम्हें लगेगा कि वह अब चित्र बनाने योग्य नहीं है। तुम्हारे हृदय में द्वन्द उठेगा और तुम्हें मालूम होगा कि उसने तुम्हारे साथ बहुत बुरा व्यवहार किया है। जब दूसरी बार वह तुम्हें मिलेगा तो तुम्हारे हृदय में उसके लिये कोई स्थान शेष नहीं बचेगा। मैं जानता हूँ, वह दिन तुम्हारे जीवन को पूर्णतया बदल डालेगा।'

'नहीं, ऐसा न कहो, राजेन्द्र। मैं जानता हूँ कि जब तक मैं जीवित रहूँगा सुरेश का व्यक्तित्व सदा ही मुझ पर अधिकार जमाये बैठा रहेगा। जो मैं अनुभव करता हूँ, वह तुम अनुभ्व नहीं कर सकते। तुम बहुत जल्द बदल जाते हो। मैं चाहता हूँ कि तुम सुरेश से कभी न मिलो।'

'तुम चाहते हो कि मैं उससे कभी न मिलूँ!'

'हाँ,' हेमन्त ने कहा।

तभी हेमन्त के पुराने नौकर ने आकर सूचना दी, 'सुरेश बाबू चित्रशाला में आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं हुजूर।'

'तुम्हें उससे अभी मेरा परिचय कराना होगा, हेमन्त,' राजेन्द्र ने जोर से हँस कर कहा।

हेमन्त ने उसकी ओर देखा। उसके मुख पर विचित्र-सा भाव अंकित था। हेमन्त ने कहा, 'सुरेश मेरा प्यारा मित्र है। उसका स्वभाव बहुत सरल है। उसे नष्ट मत करो। उसे प्रभावित करने का प्रयत्न मत करो। तुम्हारा प्रभाव बहुत बुरा होगा। दुनिया बहुत बड़ी है। उसमें तुम्हें बहुत से अच्छे आदमी मिल जायँगे। इसे मुझसे छीनने का प्रयत्न मत करो। मेरा कला का जीवन उसी पर निर्भर है। मैं तुम पर विश्वास करता हूँ, राजेन्द्र।' हेमन्त का कण्ठ अवरुद्ध हो गया।

कुँवर राजेन्द्र ने हँस कर कहा, 'कैसी बेवकूफी की बातें करते हो।' और वह उसका हाथ पकड़ कर सीधा चित्रशाला में ले गया।

हेमन्त को देखते ही सुरेश ने कहा, 'मैं अब और तुम्हारे सामने नहीं बैठ सकता। मैं बहुत थक गया हूँ। मैं अपना चित्र बनवाना नहीं

चाहता।' किन्तु तभी उसकी निगाह कुँवर राजेन्द्र पर पड़ी। उसे देखते ही सुरेश के गालों पर लालिमा दौड़ गई। उसने लजा कर कहा, 'मैं क्षमा चाहता हूँ हेमन्त, मैं नहीं जानता था कि तुम्हारे साथ कोई और भी है।'

'तुमसे मिल कर मुझे बहुत खुशी हुई,' कुँवर राजेन्द्र ने आगे बढ़ कर सुरेश से हाथ मिलाते हुए कहा।

राजेन्द्र ने उसकी ओर देखा। सचमुच वह बहुत सुन्दर था। उसके होठ लाल और आँखें नीली थीं। उसके बाल सुनहरे थे। उसके चेहरे पर कुछ ऐसा भाव था कि कोई भी व्यक्ति उसकी ओर आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकता था।

कुँवर राजेन्द्र ने सोफे पर बैठते हुए कहा, 'तुम सचमुच बहुत सुन्दर हो, सुरेश।'

हेमन्त तूलिका हाथ में लिये रंग मिला रहा था। आज वह बहुत चिंतित दिखाई देता था। उसने कहा, 'मुझे आज ही यह चित्र समाप्त कर देना है राजेन्द्र, क्या तुम यहाँ से बाहर नहीं जा सकते?'

राजेन्द्र हँसा। उसने सुरेश की ओर देख कर पूछा, 'क्या मुझे यहाँ से चले जाना होगा?'

'नहीं, नहीं, तुम यहीं ठहरो। कभी-कभी हेमन्त बहुत गम्भीर हो जाता है। मुझे उसकी यह गम्भीरता अच्छी नहीं लगती।'

हेमन्त ने होठ काट लिये। उसने कहा, 'यदि सुरेश चाहता है तो तुम्हें जरूर ठहरना चाहिये।'

किन्तु राजेन्द्र उठ खड़ा हुआ। उसने कहा, 'मुझे अब चले ही जाना चाहिये। अभी मुझे एक सज्जन से मुलाकात करनी है।'

'नहीं,' सुरेश ने चिल्ला कर कहा, 'यदि कुँवर राजेन्द्र यहाँ से गये तो मैं भी उन्हीं के साथ चला जाऊँगा। तुम चित्र बनाते समय मुझसे एक शब्द भी नहीं बोलते। मैं तुम्हारे सामने चुपचाप खड़ा नहीं रह सकता।'

हेमन्त ने चित्र की ओर अपलक नेत्रों से निहारते हुए कहा, 'ठहर जाओ' राजेन्द्र। यह ठीक है कि चित्र बनाते समय मैं कभी नहीं बोलता। इसीलिये प्रार्थना करता हूँ कि तुम ठहर जाओ।'

राजेन्द्र फिर से सोफे पर बैठ गया।

हेमन्त ने सुरेश से कहा, 'अब तुम मेरे सामने खड़े हो जाओ। लेकिन तुम्हें राजेन्द्र की बातों पर ध्यान नहीं देना है। मुझे छोड़ कर उसके सभी मित्रों पर उसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है।'

सुरेश हेमन्त के सामने खड़ा हो गया। हेमन्त मन्त्रमुग्ध सा चित्र बना रहा था।

कुछ देर बाद सुरेश ने वाणी में उत्सुकता भर कर कहा, 'क्या तुम्हारा प्रभाव सचमुच ही बहुत बुरा है, राजेन्द्र?'

'दुनियाँ में अच्छे प्रभाव जैसी कोई चीज नहीं है, सुरेश। संसार के सभी प्रभाव अनैतिक हैं। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से ही नहीं, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी अनैतिक हैं।'

'क्यों?'

'क्योंकि किसी व्यक्ति को प्रभावित करने का अभिप्राय होता है उसे अपनी आत्मा प्रदान कर देना। तब वह स्वाधीनता से सोच भी नहीं सकता। तब उसके पाप भी, यदि पाप जैसी कोई चीज दुनिया में है, उसके अपने नहीं होते। वह किसी दूसरे के संगीत की प्रतिध्वनि मात्र रह जाता है। मेरा विश्वास है कि यदि कोई आदमी अपनी प्रत्येक भावना को वाणी का रूप दे, अपने प्रत्येक विचार को दुनिया के सामने प्रकट करे और अपने प्रत्येक सपने को साकार बना ले, तो दुनिया में एक नये सुख का संचार होगा और हम पुराने युग के अपने सभी दुखों को भुला देंगे। किन्तु दुनिया का सबसे बहादुर आदमी स्वयं अपने से ही भयभीत रहता है। यदि हम प्रकृति की किसी भी प्रेरणा को अस्वीकार करते हैं तो हमें उसका दण्ड मिलता है।'

'जरा अपना चेहरा दाहिनी ओर को तो घुमाओ सुरेश,' अपनी धुन में खोये हुये हेमन्त ने चित्र पर तूलिका चलाते हुये कहा।

कुँवर राजेन्द्र उसकी ओर देख कर हँसा। फिर उसने सुरेश से कहा, 'इच्छाओं से छुटकारा पाने का केवल यही एक मार्ग है कि तुम उनके सामने आत्म-समर्पण कर दो। यदि तुम वासनाओं से छुटकारा पाने का प्रयत्न करोगे तो तुम्हारी आत्मा उन्हें आलिंगन में बाँधने के लिये और तेजी से दौड़ने लगेगी। मनुष्य के मस्तिष्क में ही दुनिया का बड़े से बड़ा पाप जन्म लेता है। तुम अपनी ओर ही देखो। क्या तुम्हारे मन में कभी ऐसी कामनाएँ जाग्रत नहीं हुईं जिन्होंने तुम्हें भयभीत कर दिया हो। क्या तुम्हारे मस्तिष्क में कभी ऐसे विचार उत्पन्न नहीं हुये जिनसे तुम आतंकित हो गये हो। क्या तुमने कभी ऐसे स्वप्न नहीं देखे जिनकी स्मृति मात्र से ही तुम्हारे कपोलों पर लज्जा की लाली दौड़ आई हो······।'

'नहीं, नहीं,······' सुरेश ने चिल्ला कर कहा, 'अब मुझसे कुछ मत कहो। तुमने मुझे पागल बना दिया है। मैं कुछ भी सोचना नहीं चाहता।'

दस मिनट तक सुरेश चुपचाप खड़ा रहा। उसके होट खुले थे और उसकी आँखों में एक विचित्र प्रकार की चमक थी, उसके भीतर द्वन्द उठ रहा था। कुँवर राजेन्द्र के शब्दों ने उसके हृदय की उन गुप्त भावनाओं को जगा दिया था जो अब तक सोई पड़ी थीं। एक अजीब-सी सिहरन से उसका शरीर काँप उठा।

उसके बचपन में ऐसी बहुत-सी बातें हुई थीं जिन्हें वह उस समय नहीं समझ सका था। किन्तु अब वह उन्हें खूब समझ रहा है। आज उसे लगता है मानो वह आग पर चल रहा है। अब तक उससे ये बातें कैसे छिपी रहीं?

होठों पर विजय की मुस्कान लिये राजेन्द्र उसे चुपचाप देख रहा था। वह सुरेश पर अपने आकस्मिक प्रभाव को देख कर मन ही मन आनन्दित

होने लगा। उसने हवा में ही तीर छोड़ा था। क्या वह ठीक निशाने पर लगा है? यह लड़का कितना उत्तेजित हो गया है!

हेमन्त को किसी भी बात का कुछ पता नहीं था। वह चित्र बनाने में खोया हुआ था।

तभी सुरेश ने कहा, 'मैं थक गया हूँ, हेमन्त। मैं बाग में बैठना चाहता हूँ। यहाँ मेरा दम घुट रहा है।'

'मैंने तुम्हारा आज जैसा रूप पहले कभी नहीं देखा था, सुरेश। आज मैंने तुम्हारे मुस्कराते हुए होठों और तुम्हारी आँखों की चमक को चित्रित कर लिया है। मैं नहीं जानता कि कुँवर राजेन्द्र तुमसे क्या कह रहा था। किन्तु उसने चाहे जो भी कहा हो, तुम उस पर बिल्कुल विश्वास मत करना।'

कुछ देर रुक कर हेमन्त ने राजेन्द्र से कहा, 'तुम सुरेश को लेकर बाग में जा सकते हो राजेन्द्र, मैं अभी यहाँ से नहीं हट सकता। मुझे आज जैसी प्रेरणा कभी नहीं मिली। निश्चय ही यह चित्र मेरा सबसे सुन्दर चित्र होगा।'

कुँवर राजेन्द्र ने सुरेश की ओर देखा। उसकी आँखों में भय समाया हुआ था, जैसे वह अभी कोई भयंकर स्वप्न देख कर जगा हो।

राजेन्द्र उसका हाथ पकड़ कर बाहर ले आया। बाग में आकर दोनों फूलों की लम्बी-लम्बी क्यारियों के बीच घूमने लगे। सुरेश अब भी मौन था। उसके हृदय में तूफान मच रहा था।

कुँवर राजेन्द्र ने कहा, 'यही जीवन का सबसे बड़ा रहस्य है, सुरेश। हमें बुद्धि से आत्मा का और आत्मा से बुद्धि का उपचार करना चाहिये। तुम जितना समझते हो उससे बहुत अधिक जानते हो।'

राजेन्द्र की आवाज में जाने कैसा जादू था जो सुरेश को निरन्तर पागल बनाता जा रहा था। वह हेमन्त को कई महीने से जानता है किन्तु उसकी मित्रता ने उसके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं किया। लेकिन तभी किसी ने जाने कहाँ से आकर उसके सामने उसके जीवन का सारा

रहस्य खोल दिया। नहीं, उसे डरना नहीं चाहिये, वह निर्बल नहीं है। उसे डरना नहीं चाहिये।

सुरेश को विचारमग्न देख कर राजेन्द्र ने कहा, 'तुम्हें यहाँ धूप में नहीं खड़ा होना चाहिये, सुरेश। इससे तुम्हारा शरीर झुलस जायगा।'

'मैं इसकी चिन्ता नहीं करता,' सुरेश ने हँस कर उत्तर दिया।

'लेकिन तुम्हें विशेष रूप से इसकी चिन्ता करनी चाहिये।'

'क्यों?'

'क्योंकि तुम बहुत सुन्दर हो और सौन्दर्य जीवन की सबसे बहुमूल्य वस्तु है।'

'लेकिन मैं ऐसा अनुभव नहीं करता।'

'ठीक है। अभी तुम्हें इसका अनुभव नहीं होगा। लेकिन एक दिन आयेगा जब तुम बूढ़े और कुरूप हो जाओगे, जब तुम्हारे चेहरे और माथे पर झुर्रियाँ पड़ जायँगी, तब तुम इसका अनुभव करोगे। तब तुम्हारे हृदय से एक वेदना उठेगी। आज तुम जहाँ भी जाते हो विश्व को मुग्ध कर लेते हो। किन्तु क्या सदा ऐसा ही होता रहेगा? तुम बहुत सुन्दर हो। विश्व पर अधिकार जमाने का तुम्हें दैवी-अधिकार मिला है। आज तुम हँसते हो, लेकिन जब तुम्हारा सौन्दर्य नष्ट हो जायगा तब तुम हँस भी नहीं सकते। लोग अक्सर कहा करते हैं कि सौन्दर्य क्षणिक और बाहरी चीज है। वे ऐसा कह सकते हैं। किन्तु मेरे लिये सौन्दर्य ही दुनिया की सबसे आनन्ददायक वस्तु है। ईश्वर जो देता है, वह उसे शीघ्र ही वापस भी ले लेता है। वह हमारे पास अच्छी तरह जीवित रहने के लिये केवल कुछ ही वर्ष छोड़ देता है। एक दिन तुम्हारे यौवन के साथ तुम्हारा सौन्दर्य भी समाप्त हो जायगा। तब जीवन की मंजिल पर पहुँच कर तुम पीछे मुड़ कर देखोगे तो तुम्हें लगेगा कि तुम्हारे पास कुछ भी शेष नहीं बचा है। जीवन का प्रत्येक दिन और प्रत्येक मास तुम्हें उसी भयकर क्षण के समीप घसीटे ले जा रहा है। एक दिन तुम्हारे दाँत

टूट जायँगे और तुम्हारी आँखों का तेज समाप्त हो जायगा। उस दिन तुम्हें स्वयं अपने से घृणा होने लगेगी।'

सुरेश चुपचाप सुन रहा था। उसके मन में जाने कैसी उथल-पुथल मची हुई थी।

कुँवर राजेन्द्र ने कहा, 'तुम्हें यौवन का वरदान मिला है। तुम्हें उसकी शक्ति को समझना चाहिये। अपने जीवन के सुनहरे दिनों को बरबाद मत करो। तुम्हारे युग के सभी आदर्श झूठे हैं। सभी उद्देश्य गलत हैं। इसीलिये कहता हूँ कि नये संघर्षों की खोज करो। दुनिया में ऐसी कोई बात नहीं है जो तुम नहीं कर सकते। तुम नहीं जानते कि तुम क्या हो और तुम क्या बन सकते हो। यौवन एक बार जाकर फिर कभी वापस नहीं आता। दुनिया में यौवन के सिवा और कुछ है ही नहीं सुरेश।'

सुरेश आश्चर्य से कुँवर राजेन्द्र की बातें सुन रहा था। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया कि वह क्या कहे। उसे लगा जैसे जो कुछ भी कुँवर राजेन्द्र ने कहा है उसमें जरा भी झूठ नहीं है। जरा भी गलत नहीं है।

कुछ देर बाद राजेन्द्र ने फिर कहा, 'मैं जानता हूँ तुम मुझ से मिल कर अवश्य प्रसन्न हुए होंगे।'

सुरेश ने राजेन्द्र की ओर देखा। उसने कहा, 'हाँ, मैं बहुत खुश हूँ। इस परिचय के लिए मैं सदा ही प्रसन्न रहूँगा।'

'सदा! यह बड़ा भयंकर शब्द है। जब मैं इसे सुनता हूँ तो मेरा हृदय काँप उठता है। महिलाएँ इस शब्द का प्रयोग बहुत करती हैं। और इसका प्रयोग करके वे अपना सारा आकर्षण समाप्त कर देती हैं। इस शब्द का कोई अर्थ नहीं है।'

हेमन्त ने आधे घण्टे के भीतर ही चित्र समाप्त कर लिया। वह बहुत देर तक उसे अपलक नेत्रों से निहारता रहा। फिर उसने राजेन्द्र को

चित्रशाला में बुला कर कहा, 'मेरा चित्र समाप्त हो गया। सचमुच ही यह मेरा सबसे सुन्दर चित्र है।'

कुँवर राजेन्द्र ने चित्र को देखा। वह बहुत सुन्दर था। हेमन्त की कला उसमें सजीव हो उठी थी।

कुँवर राजेन्द्र ने कहा, 'मैं तुम्हें बधाई देता हूँ हेमन्त। आधुनिक युग का यह सबसे सुन्दर चित्र है।'

सुरेश आश्चर्य से चित्र की ओर देख रहा था। उसकी आँखों में खुशी नाचने लगी। उसे लगा मानो उसने प्रथम बार ही अपने को पहचाना है। उसे आज पता लगा है कि वह वास्तव में कितना सुन्दर है। उसके कानों में कुँवर राजेन्द्र के शब्द गूँजने लगे। हाँ, एक दिन आयेगा जब उसके मुख पर झुर्रियाँ पड़ जायँगी। जब उसके नेत्र ज्योतिहीन हो जायँगे और उसके शरीर का गठन बिगड़ जायगा। तब वह कितना कुरूप हो जायगा। तब लोग उससे घृणा करेंगे।

उसके अन्तर में एक विचित्र-सी पीड़ा कसकने लगी। उसका हृदय बैठने लगा।

उसने चित्र पर आँखें गड़ा कर कहा, 'यह कितने बड़े दुख की बात है। मैं बूढ़ा और कुरूप हो जाऊँगा लेकिन यह चित्र इसी तरह जवान बना रहेगा। आज यह जितना जवान है उससे अधिक बूढ़ा वह कभी नहीं होगा। काश, मैं सदा जवान रहता और यह चित्र बूढ़ा हो जाता। इसके लिये मैं अपना जीवन, अपनी सारी आत्मा बलिदान कर देता।'

हेमन्त को आश्चर्य लगा। सुरेश आज कैसी बातें कर रहा है? उसे क्या हुआ है?

सुरेश कह रहा था, 'लेकिन हेमन्त, तुम मुझसे अधिक अपनी कला को प्यार करते हो। तुम अपनी कला को सदा प्यार करते रहोगे। किन्तु मुझसे तुम कब तक स्नेह करोगे? शायद तभी तक जब तक मेरे चेहरे पर पहली झुर्री न पड़ जाय। मैं आज समझ गया हूँ कि जब किसी का सौन्दर्य नष्ट हो जाता है तो उसके पास कुछ भी शेष नहीं रहता। तुम्हारे

चित्र ने ही मुझे वह शिक्षा दी है। कुँवर राजेन्द्र ठीक कहते हैं। उन्होंने कहा है कि जब मैं वृद्धावस्था का अनुभव करूँ तो मुझे आत्महत्या कर लेनी चाहिये।'

हेमन्त का चेहरा पीला पड़ गया। उसने सुरेश का हाथ पकड़ कर कहा, 'इस तरह की बातें मत करो। तुम्हारे जैसा मित्र मुझे कभी नहीं मिला। मैं जीवन में तुम्हें कभी खोना नहीं चाहता।'

'मैं उन सभी चीजों से ईर्ष्या करता हूँ हेमन्त, जिनका सौन्दर्य अक्षय होता है। मैं तुम्हारे चित्र से भी ईर्ष्या करता हूँ। मैं नहीं चाहता कि मेरा सौन्दर्य नष्ट हो जाय और उसका सौन्दर्य सदा इसी प्रकार बना रहे। हर बीतने वाला क्षण मुझसे कुछ छीन कर इस चित्र को प्रदान कर रहा है, काश, इससे बिल्कुल उल्टी बात हो जाती। यदि यह चित्र बदल जाता और मैं सदा इसी प्रकार बना रहता। तुमने यह चित्र क्यों बनाया? किसी दिन यह मेरा उपहास करेगा और तब मेरी व्यथा की सीमा नहीं रहेगी।' सुरेश की आँखों से आँसू बहने लगे। उसका कण्ठ अवरुद्ध हो गया। उसने सोफे पर बैठ कर दोनों हाथों से अपना मुँह ढक लिया।

हेमन्त ने कठोर स्वर में कहा, 'यह तुम्हारी ही बातों का प्रभाव है, राजेन्द्र।'

कुँवर राजेन्द्र ने अपने कन्धे हिला कर कहा, 'यही वास्तविक है सुरेश। इससे अधिक वह कुछ भी नहीं है।'

'मैं तुमसे झगड़ा नहीं करना चाहता, किन्तु आज मैं अपनी इस सबसे सुन्दर कृति से घृणा करता हूँ। मैं उसे नष्ट कर दूँगा। आज मेरे लिये यह कपड़े और रंगों के सिवा और कुछ भी नहीं है।' हेमन्त के स्वर में भारी निराशा भरी थी। उसने चित्र बनाने का चाकू उठा लिया। वह चित्र को फाड़ने जा ही रहा था कि सुरेश ने चिल्ला कर कहा, 'नहीं, ऐसा कभी मत करना हेमन्त। तुम्हारा यह काम हत्या से भी अधिक भयंकर होगा।'

हेमन्त का हाथ रुक गया। उसने सुरेश की ओर देखा। उसकी आँखों में दीनता भरी थी। हेमन्त ने शान्त स्वर में कहा, 'तो तुम मेरे चित्र को पसन्द करते हो? मैं सोचता था कि तुम कभी इसे पसन्द नहीं करोगे।'

सुरेश ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप सोफे पर बैठा अपलक नेत्रों से चित्र की ओर निहार रहा था।

२

दूसरे दिन सुबह जब राजेन्द्र अपने चचा कुँवर भुवनेन्द्र के यहाँ पहुँचा तो वे अपने बँगले के बरामदे में बैठे समाचारपत्र पढ़ रहे थे। कुँवर भुवनेन्द्र अधेड़ उम्र के अविवाहित व्यक्ति हैं। दुनिया उन्हें स्वार्थी कहती है, क्योंकि वह उनसे कोई भी फायदा नहीं उठा सकती। किन्तु जो व्यक्ति उनका मनोरंजन करता है उस पर वे सब कुछ न्योछावर करने को तैयार रहते हैं।

राजेन्द्र को देखते ही उन्होंने कहा, 'आज तो बड़ी जल्दी उठ आये, राजेन्द्र। मैं तो समझता था तुम दोपहर के दो बजे से पहले कभी नहीं उठते और चार बजे से पहले बाहर नहीं निकलते।'

'हाँ', हमारे पारिवारिक स्नेह ने ही मुझे यहाँ आने को विवश कर दिया। मैं आज आपसे कुछ प्राप्त करने आया हूँ।'

'शायद तुम्हें रुपये की जरूरत है?' कुँवर भुवनेन्द्र ने कहा, 'आजकल के युवक रुपये को ही सब कुछ समझते हैं।'

'और जब वे बूढ़े हो जाते हैं तभी अपनी उस गलती को पहचानते हैं। लेकिन मैं आपसे रुपये लेने नहीं आया। रुपये की जरूरत उन्हीं लोगों को पड़ती है जो अपना कर्जा चुकाते हैं लेकिन मैं कभी अपना कर्जा नहीं चुकाता। मैं आपसे कुछ सूचना प्राप्त करना चाहता हूँ। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या आप सुरेश को जानते हैं?'

'सुरेश,' कुँवर भुवनेन्द्र ने कहा, 'क्या तुम्हारी उससे भेंट हुई ?'

'हाँ, वह अच्छा लड़का है। मैं उसी के बारे में पूछना चाहता था।'

'मैं उसकी माँ को जानता था। वह बहुत सुन्दर थी। उस समय नगर में उससे सुन्दर लड़की दूसरी नहीं थी। सौन्दर्य के साथ ही साथ उसके पास धन की भी कमी नहीं थी। सुरेश उसी का पुत्र है। मैंने उसे देखा है। वह अपनी माँ की तरह ही सुन्दर है। अगर तुम उसे जानते हो, तो उसे अच्छे रास्ते पर चलना सिखाना।'

'मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा,' कुँवर राजेन्द्र ने हँस कर कहा, 'मैं अपने नये मित्रों के बारे में सब कुछ जानना चाहता हूँ लेकिन अपने पुराने मित्रों की मैं अधिक चिन्ता नहीं करता।'

'अम्मा सुरेश के सम्बन्ध में तुम्हें बहुत कुछ बता सकती हैं। वे उससे भली-भाँति परिचित हैं। वे धर्म का प्रचार करती हैं और मन्दिरों के लिये रुपया इकट्ठा करती हैं। इसके लिये वह संगीत सम्मेलनों का आयोजन करती हैं और सुरेश उनमें गाना गाता है। वह कहा करती हैं कि सुरेश बहुत अच्छा गाता है।'

कुँवर राजेन्द्र ने प्रसन्न होकर कहा, 'यही ठीक रहेगा। दादी उसके सम्बन्ध में अवश्य ही बहुत कुछ जानती होंगीं।'

कुँवर भुवनेन्द्र से विदा लेकर राजेन्द्र दादी के कमरे में जा पहुँचा। वह जमीन पर बैठी रामायण का पाठ कर रहीं थीं।

राजेन्द्र ने उन्हें नमस्कार करके कहा, 'तुम रात-दिन रामायण पढ़ कर अपना समय क्यों गँवाया करती हो, दादी। क्या दुनिया में अच्छे कामों की कोई कमी है ?'

दादी की भौंहें तन गईं। उन्होने कुछ कठोर स्वर में कहा, 'तुम्हें मालूम है मैं पूजा करते समय किसी से नहीं बोलती। फिर इस समय तुम मेरा समय बरबाद करने यहाँ क्यों आये हो ?'

'मैं सुरेश के बारे में कुछ जानना चाहता हूँ, दादी। मैं चाहता हूँ कि वह तुम्हारे उन संगीत सम्मेलनों में भाग लेना छोड़ दे।'

दादी को आश्चर्य-सा लगा। उन्होंने कहा, 'तुम ऐसा क्यों चाहते हो राजेन्द्र। सुरेश बहुत अच्छा गाता है। अपने संगीत से वह लोगों को मुग्ध कर लेता है।'

कुँवर राजेन्द्र ने हँस कर कहा, 'लेकिन मैं चाहता हूँ कि मैं उसे मुग्ध कर लूँ। मैं हर चीज से सहानुभूति रख सकता हूँ, लेकिन दुखों से नहीं। दुख बहुत ही कुरूप और भयंकर होते हैं। मैं सौन्दर्य, जीवन के उल्लास और आनन्द से सहानुभूति रख सकता हूँ लेकिन दुखों की ओर कभी भी मेरी आसक्ति नहीं होती।'

'क्या तुम समझते हो कि सुरेश को इन सम्मेलनों में भाग लेने से कष्ट होता है? और फिर धर्म का प्रचार भी तो बहुत जरूरी है।'

'धर्म का प्रचार दासता का प्रचार है दादी! और तुम दासों का मनोरंजन करके धर्म की समस्या को हल करना चाहती हो।'

दादी ने अपने दोनों हाथ कानों पर रख लिये। उन्होंने ईश्वर का नाम लेकर कहा, 'यह बड़ी भयंकर बात है राजेन्द्र, तुम्हें धर्म के लिये ऐसा नहीं कहना चाहिये। मैं देखती हूँ कि तुम्हारा निरन्तर नैतिक पतन होता जा रहा है। मैं नहीं जानती कि इस समय तुम्हारी इन बातों का क्या उत्तर दूँ। लेकिन मैं विश्वास से कह सकती हूँ कि तुम्हारे सभी सिद्धान्त गलत हैं, तुम्हारी सभी धारणाएँ झूठी हैं।'

कुँवर राजेन्द्र ने खड़े होकर कहा, 'आज तो मैं जा रहा हूँ दादी। लेकिन इतना कहे जाता हूँ कि एक दिन आयेगा जब तुम्हें मेरी बातों का महत्व मालूम होने लगेगा और तब तुम समझोगी कि जो कुछ मैंने कहा है, उसमें लेशमात्र भी झूठ नहीं है।'

दादी ने एक शब्द भी नहीं कहा। कुँवर राजेन्द्र तुरन्त ही कमरे से बाहर निकल आया। किन्तु जैसे ही वह कमरे से बाहर निकला सुरेश ने उसका हाथ पकड़ कर कहा, 'मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा राजेन्द्र।'

'अरे, तुम यहाँ कब से खड़े हो सुरेश?' कुँवर राजेन्द्र ने उसकी ओर देख कर पूछा।

सुरेश ने खोये से स्वर में उत्तर दिया, 'मैं काफी देर से यहाँ खड़ा तुम्हारी बातें सुन रहा हूँ। मुझे तुम्हारी बातें बहुत अच्छी लगती हैं।'

'लेकिन आज तो तुम्हें हेमन्त के यहाँ भोजन करना है।'

'नहीं, मैं वहाँ नहीं जाऊँगा। मुझे तुम्हारा साथ बहुत पसन्द है। मुझे तुम्हारी बातें बहुत अच्छी लगती हैं। तुम्हारी बातें सुनकर लगता है जैसे सदा उन्हें ही सुनता रहूँ।'

'आज मैं काफी बोल चुका हूँ,' कुँवर राजेन्द्र ने हँस कर कहा, 'किन्तु यदि तुम चाहो तो मेरे साथ चल सकते हो।'

३

'मुझे बहुत देर तो नहीं हुई सुरेश। आशा है तुम मेरी प्रतीक्षा करते-करते थक नहीं गये होगे,' राजेन्द्र ने अपने पुस्तकालय में प्रवेश करते हुए कहा।

सुरेश बहुत देर से वहाँ बैठा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। कुँवर राजेन्द्र को देख कर उसने कहा, 'मैं भी यहाँ बैठा-बैठा सचमुच ही थक गया था। क्या तुम कहीं बाहर चले गये थे।'

'हाँ, मैं आज कुछ खरीदारी करने बाजार चला गया था। उन चीजों के लिये आज मुझे बड़ी सौदेबाजी करनी पड़ी। आजकल लोग कीमत तो हर चीज की जानते हैं लेकिन महत्त्व किसी चीज का नहीं जानते।'

सुरेश ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। राजेन्द्र आराम से पाँव फैला कर सोफे पर बैठ गया। कुछ देर बाद उसने कहा, 'मनुष्य को विवाह कभी नहीं करना चाहिये सुरेश, पुरुष इसलिये विवाह करता है क्योंकि वह थक जाता है और स्त्रियाँ इसलिये विवाह करती हैं क्योंकि वे उत्सुक रहती हैं। ये दोनों ही निराश होते हैं।'

'किन्तु मैं एक स्त्री से प्रेम करता हूँ, क्या मुझे उससे भी विवाह नहीं करना चाहिये।'

'तुम प्रेम करते हो, लेकिन किससे?' राजेन्द्र ने उत्सुकता से पूछा।

सुरेश के गालों पर लज्जा की लाली सिमट आई। उसने बहुत धीमे स्वर में कहा, 'एक अभिनेत्री से।'

राजेन्द्र ने अपने कन्धे हिलाये। उसने कहा, 'तब तो वह एक बहुत साधारण स्त्री होगी।'

'नहीं, तुम उसे देखोगे तो तुम्हें अपनी धारणा बदलनी पड़ेगी।'

'लेकिन वह कौन है?'

'उसका नाम पार्वती है। मैं उसे पारो कहता हूँ।'

'मैंने उसका नाम कभी नहीं सुना।'

'हाँ, अभी उसे कोई नहीं जानता। लेकिन एक दिन आयेगा जब उसकी ख्याति सारे संसार में फैल जायगी। वह सच्ची कलाकार है। वह 'देवदास' की 'पारो' की तरह ही सुन्दर है। उसी की तरह मधुर है।'

कुँवर राजेन्द्र हँसा। उसने कहा, 'स्त्रियाँ भी कभी सच्ची कलाकार हो सकती हैं सुरेश? वे तो केवल श्रृंगार करना ही जानती हैं। उनके पास कहने योग्य कोई बात ही नहीं होती किन्तु जो वे कहती हैं, वह बड़े आकर्षक ढंग से कहती हैं। जहाँ तक स्त्री का सम्बन्ध है वह मस्तिष्क पर शरीर की विजय का प्रतिनिधित्व है किन्तु पुरुष चरित्र पर मस्तिष्क की विजय का प्रतीक होता है।'

'यह तुम क्या कह रहे हो राजेन्द्र।'

'मैंने ठीक ही कहा है। आज यदि कोई स्त्री अपने मुँह पर रंग पोत कर अपनी आयु से दस वर्ष छोटी लगने लगे तो वह सन्तुष्ट हो जाती है। लेकिन तुम मुझे अपनी उस सच्ची कलाकार के विषय में बताओ। तुम उसे कब से जानते हो?'

'तुम्हारे विचार मुझे भयभीत कर रहे हैं।'

'तुम उसकी चिन्ता मत करो। बताओ तुम उसे कब से जानते हो?'

'तीन सप्ताह पूर्व उससे प्रथम बार मेरा परिचय हुआ था।'

'तुम उससे कहाँ मिले थे।'

'मैं तुम्हें सब बताऊँगा। यदि तुमसे मेरी भेंट न हुई होती तो यह सब कुछ भी न हुआ होता। उस दिन तुमने मेरे मन में जीवन के हर पहलू को जानने की जाने कैसी उत्सुकता जागृत कर दी। एक विचित्र सी इच्छा से मेरा हृदय भर उठा। मेरे अन्तर में तूफान मचलने लगा। और एक दिन शाम को मैं जीवन में कोई नई हलचल बसाने घर से निकल पड़ा। मुझे तुम्हारी सभी बातें ज्यों की त्यों याद थीं। तुमने कहा था कि सौन्दर्य की खोज में ही जीवन का सच्चा रहस्य निहित है। मैं नहीं जानता कि मैं क्या चाहता था। किन्तु मुझे अनुभव हो रहा था कि जीवन में कोई नई हलचल जरूर होनी चाहिये। तभी मैं एक नाटक-गृह के सामने पहुँचा। अनजाने में ही मैं टिकिट लेकर भीतर चला गया। आज मैं नहीं जानता कि मैंने ऐसा क्यों किया। किन्तु यदि मैं वहाँ न गया होता तो मैं अपने जीवन का सबसे बड़ा रोमान्स खो देता। तुम हँस क्यों रहे हो। तुम्हारी ऐसी हँसी से मुझे भय लगता है।'

'मैं हँस नहीं रहा हूँ सुरेश, कम से कम मैं तुम पर नहीं हँस रहा हूँ। किन्तु तुम्हें इसे जीवन का सबसे बड़ा रोमान्स नहीं कहना चाहिये। तुम इसे जीवन का पहला रोमान्स कह सकते हो। लड़कियाँ तुमसे सदा ही प्रेम करेंगी और तुम भी उनके प्रेम का प्रेम से उत्तर दोगे। भयभीत न हो। अभी तो जीवन में तुम्हें बहुत कुछ करना है। यह तो केवल प्रारम्भ है।'

'क्या तुम मुझे इतना छिछला समझते हो,' सुरेश ने क्रोध से चिल्ला कर कहा।

'नहीं, मैं तुम्हें बहुत गम्भीर मानता हूँ।'

'तुम्हारा अभिप्राय क्या है?'

कुँवर राजेन्द्र एक बार धीमे से हँसा। उसने सुरेश के कुछ और पास खिसक कर कहा, 'जो लोग जीवन में केवल एक ही बार प्रेम करते हैं,

वास्तव में वे ही लोग छिछले होते हैं। वे सदा ही अपनी भक्ति और एकनिष्ठा की दुहाई देते रहते हैं। किन्तु वास्तव में वे या तो लकीर के फ़कीर होते हैं और या फिर उनमें आगे बढ़ने की योग्यता ही नहीं होती। एकनिष्ठा के राग अलापकर वे अपनी असफलताओं को स्वयं ही स्वीकार किया करते हैं। अच्छा, तो तुम क्या कह रहे थे?'

सुरेश ने कहना आरम्भ किया, 'उस दिन वह नाटक मुझे बहुत अच्छा लगा। वह कोई सुन्दर प्रेम कथा थी और उसकी नायिका वह तो सचमुच ही कल्पना से परे की चीज थी। उसका चेहरा फूल की तरह सुन्दर था। उसके केश काली घटाओं की तरह गहरे और लम्बे थे। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी और स्वप्निल थीं। उसके होंठ गुलाब की पंखु-रियों की तरह कोमल थे। मैंने जीवन में वैसा सौन्दर्य पहले कभी नहीं देखा। जब मैंने उसका अभिनय देखा तो मेरी आँखों से अविरल अश्रु-धारा बह चली और उन्हीं आँसुओं के आवरण में वह ऐसी छिपी कि मैं उसे ठीक से देख भी न सका। मैं केवल उसका मधुर स्वर सुनता रहा। मुझे लगा मानो सारे संसार की मधुरता उसी स्वर में सिमट कर रह गई हो। तुम जानते हो, स्वर मनुष्य के हृदय को कैसा आन्दोलित कर सकता है। तुम्हारे और पार्वती के स्वर को मैं जीवन में कभी भी नहीं भुला सकता। जब मैं रात्रि के समय अपने बिस्तरे पर एकाकी लेटे-लेटे अपनी आँखें बन्द करता हूँ तो मुझे वे दोनों स्वर सुनाई पड़ते हैं। वे स्वर मुझे दो विभिन्न मार्गों की ओर खींच ले जाना चाहते हैं। मैं नहीं जानता कि कौन से स्वर का अनुसरण करूँ। मैं सोचता हूँ कि मैं उससे स्नेह क्यों नहीं कर सकता। नहीं, मैं उससे स्नेह करता हूँ। मुझे लगता है कि उसे निकाल कर मेरे जीवन में और कुछ भी शेष नहीं रह जायगा। एक दिन तुमने कहा था कि दुनिया में केवल अभिनेत्री ही प्रेम करने योग्य होती है।'

'हाँ, क्योंकि मैंने बहुत-सी अभिनेत्रियों से प्रेम किया है। हमें रँगे

हुए बालों और पुते हुए चेहरों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। कभी-कभी उनमें भी भारी सौन्दर्य देखने को मिल जाता है।'

सुरेश का चेहरा पीला पड़ गया। उसने कहा, 'यदि मैंने तुम्हें पार्वती के बारे में न बताया होता तो कितना अच्छा होता।'

'लेकिन तुम मुझसे कुछ भी नहीं छिपा सकते सुरेश। तुम जीवन में जो भी करोगे, मुझे जरूर बता दोगे।'

'हाँ, राजेन्द्र, मुझे लगता है कि यही ठीक है। मैं तुमसे कुछ भी नहीं छिपा सकता। तुमने मुझ पर जाने कैसा जादू कर दिया है। यदि जीवन में मैं कभी भी कोई पाप करूँगा तो उसे तुम्हारे सामने अवश्य ही स्वीकार कर लूँगा।'

'तुम्हारे जैसे लोग कभी कोई पाप नहीं करते सुरेश। तुम्हें सभी कुछ करने का अधिकार है। और मनुष्य को अपने अधिकारों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। लेकिन पार्वती से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है?'

सुरेश के गालों पर लज्जा की लालिमा दौड़ आई। उसने जमीन पर आँखें गड़ाते हुए कहा, 'पार्वती बहुत पवित्र है।'

राजेन्द्र ने उसकी ओर देखा। लज्जा के मारे सुरेश की आँखें ऊपर नहीं उठ रही थीं। राजेन्द्र ने उसका हाथ पकड़ कर कहा, 'लेकिन दुनिया की सबसे पवित्र चीज ही छूने योग्य होती है सुरेश। मुझे विश्वास है कि एक दिन वह तुम्हारे सामने अवश्य ही आत्म-समर्पण कर देगी। जब कोई व्यक्ति प्रेम करना शुरू करता है तो वह अपने को धोखा देता है और जब वह उस प्रेम-बन्धन को तोड़ता है तो वह दूसरे को छलता है। उसी को दुनिया रोमांस कहती है। क्या तुम्हारा पार्वती से परिचय हो गया है?'

'हाँ, मैं उसे जानता हूँ। नाटक के मालिक ने तीसरे दिन स्वयं ही उससे मेरा परिचय कराया था। उसने कहा था कि मैं कला का सच्चा पारखी हूँ और मुझे पार्वती से अवश्य ही परिचय कर लेना चाहिये। उस दिन मैंने पार्वती को एक अँगूठी भेंट की।'

'क्या उसने तुम्हारी भेंट स्वीकार की ?'

'उस दिन लज्जा के मारे उसकी बड़ी-बड़ी आँखें जमीन पर ही झुकी रहीं। वह बहुत भोली है, राजेन्द्र। उसमें बालकपन का औत्सुक्य है। वह स्वयं नहीं जानती कि वह क्या है। जब मैंने उसे बताया कि उसका अभिनय कितना सुन्दर होता है तो वह आश्चर्य से मेरी ओर देखती रह गई। जाने कब तक हम दोनों बालकों की भाँति एक दूसरे को देखते रहे। बहुत देर बाद पार्वती ने कहा, 'तुम बिल्कुल राजकुमार की तरह दिखाई देते हो। मैं तुम्हें 'राजा' कह कर पुकारूँगी।'

'वह जानती है कि दूसरों को किस प्रकार प्रसन्न किया जाता है।'

'तुम उसे नहीं समझे, राजेन्द्र। वह जीवन और उसकी रङ्गीनियों के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानती। वह अपनी बूढ़ी माँ के साथ रहती है। उसकी माँ भी कभी-कभी नाटकों में अभिनय कर लिया करती है। नाटक का मालिक मुझे पार्वती के जीवन का इतिहास बताना चाहता था किन्तु मैंने उसे सुनने से इन्कार कर दिया।'

'तुमने ठीक ही किया सुरेश। जिन लोगों का जीवन दुखों से भरा होता है, दुनिया उनकी कभी परवाह नहीं करती।'

'नहीं राजेन्द्र, मैं पार्वती से प्रेम करता हूँ। वह चाहे कोई भी हो, मैं उसकी चिन्ता नहीं करता। मैं जानता हूँ वह बहुत पवित्र है। मैंने जितनी बार भी उसे देखा है उसने मुझे पहले से अधिक आकर्षित किया है। मैं चाहता हूँ कि अतीत के मृत प्रेमी हमारी हँसी का स्वर सुनें और हमसे ईर्ष्या करने लगें। हमारी वासना की एक साँस उनकी मिट्टी में नया जीवन फूँक दे। मैं नहीं जानता कि उसके सौन्दर्य ने मुझ पर कैसा जादू कर दिया है।' सुरेश उत्तेजित होकर कमरे में टहलने लगा। उसका चेहरा लाल हो गया।

कुँवर राजेन्द्र के मन में गुदगुदी मची हुई थी। वह आनन्द से सुरेश की ओर देख रहा था। आज सुरेश के मन में कैसा परिवर्तन आ खड़ा हुआ है। उस दिन के उस लजीले और भोले सुरेश में और आज

के इस उत्सुक सुरेश में कहीं भी कोई समानता नहीं है। कली अब फूल बन गई है। उसकी सुरभि अब सारे संसार में फैलेगी। उसे कोई नहीं रोक सकता। कोई नहीं रोक सकता।

कुँवर राजेन्द्र बहुत देर तक सुरेश को देखता रहा। फिर उसने कहा, 'तो अब तुम्हारा क्या करने का विचार है?'

'मैं चाहता हूँ कि एक दिन तुम और हेमन्त पार्वती के अभिनय को देखो। मुझे विश्वास है कि तुम अवश्य ही उसकी प्रतिभा को स्वीकार कर लोगे। तब हम उसे नाटक के मालिक के चंगुल से छुड़ा लेंगे। उसके बाद हम पार्वती को लेकर एक नये नाटक मंडल का निर्माण करेंगे और तब पार्वती अपनी कला से सारी दुनिया को उस तरह पागल बना देगी जिस तरह उसने मुझे बना दिया है।'

'नहीं, यह असम्भव है।'

'लेकिन मुझे उस पर विश्वास है, राजेन्द्र। उसमें केवल कला ही नहीं है, उसमें अगाध सौन्दर्य भी भरा पड़ा है। तुम तो सदा ही कहा करते हो कि युग को सौन्दर्य ही बदल सकता है, सिद्धान्त नहीं।'

'तो हमें किस दिन उसका अभिनय देखना है?'

'मेरे विचार में कल ठीक रहेगा। हमें साढ़े छै बजे से पूर्व ही वहाँ पहुँच जाना चाहिये। क्या तुम हेमन्त को सूचना दे दोगे?'

'मैं चाहता था कि तुम स्वयं ही उसे निमंत्रण दे आते। क्या उसे पार्वती के सम्बन्ध में कुछ भी पता नहीं?'

'नहीं, वह अभी इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता। मैं एक सप्ताह से उससे भेंट करने नहीं गया। मैं जानता हूँ यह बहुत अनुचित है। हेमन्त मुझसे बहुत स्नेह करता है। किन्तु मुझे अवकाश ही नहीं मिला। उसने मेरा चित्र विशेष रूप से सजा कर मेरे पास भेज दिया है। मैं स्वीकार करता हूँ कि उस चित्र को देख कर मुझे ईर्ष्या होती है। क्योंकि वह मुझसे एक मास छोटा है किन्तु फिर भी उसे देखने में मुझे आन्तरिक

सुख का अनुभव होता है। मैं चाहता हूँ कि हेमन्त को तुम ही सूचित कर दो। मैं उससे अकेले मिलना नहीं चाहता। वह ऐसी बातें करता है जिससे मुझे क्रोध आ जाता है। वह मुझे अच्छी सलाह देता है।'

कुँवर राजेन्द्र हँसा। उसने कहा, 'जिन सलाहों की लोगों को स्वयं जरूरत होती है उन्हें वे दूसरों को देकर बहुत प्रसन्न होते हैं। मैं इसे उनकी उदारता मानता हूँ।'

सुरेश ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया।

कुँवर राजेन्द्र ने फिर कहा, 'हेमन्त 'के मन में जितनी भी सुन्दर और मधुर भावनाएँ थीं, उसने वे सभी अपनी कला में लगा दी है और इसीलिये अब उसके जीवन में उसके नीरस संस्कारों और सिद्धान्तों को छोड़ कर और कुछ भी शेष नहीं बचा है। अच्छे कलाकारों का अस्तित्व उनकी कला तक ही सीमित है। इसीलिये वे अपने वास्तविक जीवन में किसी को भी अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकते।'

सुरेश ने अपने रूमाल में इत्र लगा कर उसे कोट की जेब में रखते हुए कहा, 'मैं नहीं जानता कि तुम्हारी बात ठीक है या नहीं। किन्तु जब तुम कह रहे हो तो वह अवश्य ही ठीक होगी। अच्छा, अब मैं जा रहा हूँ। कल शाम को नाटक-गृह के सामने मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।'

सुरेश चला गया। कुँवर राजेन्द्र के मस्तिष्क में विचारों की बाढ़ उमड़ने लगी। सुरेश किसी दूसरे से स्नेह करता है यह बात जान लेने के बाद भी उसे ईर्ष्या नहीं हुई, तनिक भी क्रोध नहीं आया, यह सोच कर उसका मन भीतर ही भीतर आनन्दित होने लगा कि इस नये सुरेश का निर्माण उसने स्वयं अपने ही हाथों से किया है। उसने उसे समय से पहले ही विकसित कर दिया है। यह बहुत बड़ी बात है। साधारण व्यक्ति तब तक प्रतीक्षा करते हैं जब तक कि प्रकृति स्वयं ही अपने रहस्य उनके सामने नहीं खोल देती किन्तु कुछ लोगों को जीवन का रहस्य यवनिका उठने से पहले ही ज्ञात हो जाता है।

उसने सुरेश पर एक परीक्षण किया और उसमें उसे पूर्ण सफलता मिली। उसी के कारण सुरेश को नये अनुभव प्राप्त करने की प्रेरणा मिली। उसी की प्रेरणा से कली विकसित होकर फूल बन गई। सुरेश उसी की कृति है, पूर्णतया उसी की। उसने वहीं बैठे-बैठे सामने वाली खिड़की से बाहर देखा। सड़कों पर सन्ध्या उतर आई थी। भीनी-भीनी बयार बहने लगी थी और पश्चिमी क्षितिज पर अस्त होते हुये सूर्य की लाली अभी बिल्कुल ही समाप्त नहीं हुई थी।

वह तुरन्त ही कपड़े पहन कर घर से बाहर निकल गया। जब रात्रि को साढ़े बारह बजे के बाद कुँवर राजेन्द्र घर लौटा तो उसे अपनी मेज पर रखा हुआ एक पत्र मिला। यह पत्र सुरेश का था। उसने लिखा था कि वह पार्वती को विवाह करने का वचन दे आया है।

४

'माँ, मैं आज बहुत खुश हूँ, माँ,' पार्वती ने अपना मुँह अपनी वृद्धा माँ की गोदी में छिपाते हुए कहा। पार्वती की माँ अपने कमरे में कुर्सी पर बैठी थके हुये नेत्रों से छत की ओर निहार रही थी। उसने पार्वती की इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया।

पार्वती ने उसकी गोदी में अपना मुँह छिपाते हुए कहा, 'मैं आज बहुत खुश हूँ, तुम्हें भी आज खुश होना चाहिये माँ।'

पार्वती की माँ ने अपने सफेद हाथ से उसके केशों को सहलाते हुए कहा, 'मैं तभी प्रसन्न होती हूँ पारो जब मैं तुम्हें अभिनय करते हुए देखती हूँ। तुम्हें अपने अभिनय को छोड़ कर और किसी बात की कल्पना भी नहीं करनी चाहिये। हमारे मालिक हमारे प्रति बहुत उदार हैं। वे हमें काफी धन देते हैं।' वृद्धा के स्वर में भारी व्यथा भरी पड़ी थी।

र्वती ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं। उसने कहा, 'क्या दुनिया

में धन ही सब कुछ है माँ। प्रेम के सामने धन का कोई भी महत्व नहीं होता।'

'लेकिन हमारे मालिक ने हमें पाँच सौ रुपये पेशगी दिये हैं पारो। तुम्हें उनकी उस कृपा को नहीं भूल जाना चाहिये। पाँच सौ रुपये बहुत होते हैं।'

'लेकिन वह अच्छा आदमी नहीं है माँ। वह मुझसे बहुत बुरी तरह बातें करता है। मैं उससे घृणा करती हूँ।' पार्वती की आँखों में निराशा नाचने लगी। वह उठ कर खिड़की पर जा खड़ी हुई।

वृद्धा ने कहा, 'मैं नहीं जानती कि उसकी सहायता के बिना हम कैसे जीवन व्यतीत कर सकेंगे।'

पार्वती ने हँस कर कहा, 'अब हम उसके साथ नहीं रह सकतीं माँ। अब हमारे जीवन पर सुरेश का अधिकार हो गया है। मैं उससे स्नेह करती हूँ।' पार्वती के कपोलों पर लज्जा की लाली दौड़ गई। उसकी आँखें जमीन पर झुक गई।

'पगली लड़की, पगली लड़की,' वृद्धा ने अपने सधे हुए स्वर में कहा।

पार्वती एक बार फिर मुस्करा दी। उसने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। माँ की बात उसे सुनाई ही नहीं दी। वह खिड़की पर खड़ी दूर तक फैले नीलाकाश को अपलक निहारती रही। एक क्षण को उसे यह भी सुधि न रही कि वह कहाँ है। एक विचित्र सी वासना उसके हृदय को बुरी तरह आन्दोलित किये हुए थी। उसे लगा मानों उसका 'राजा' धीरे-धीरे पग-संचार करके उसके समीप आ खड़ा हुआ है और उसके हृदय में झाँक-झाँक कर उसके जीवन के सारे रहस्य जानने का प्रयत्न कर रहा है। उसने उसकी गरम स्वासों का अपने कपोलों पर अनुभव किया। उसे लगा जैसे उसके अधर उसके चुम्बनों से जले जा रहे हैं। एक बार उसका सारा तन सिहर उठा। ओह, कितना मनोमुग्धकारी है यह स्पर्श।

पार्वती ने एक बार आँखें उठा कर माँ की ओर देखा। वह अब भी उसी प्रकार बैठी उसकी ओर देख रही थी। पार्वती माँ के पाँवों के समीप बैठ गई। उसने उसके हाथ पकड़ कर व्याकुल स्वर में कहा, 'बताओ माँ, वह मुझसे इतना स्नेह क्यों करता है? मैं जानती हूँ कि मेरा स्नेह उस पर क्यों है। मैं उससे प्रेम करती हूँ क्योंकि मुझे लगता है मानों वह स्वयं ही प्रेम का प्रतीक है। लेकिन उसके लिये मुझ में कौन सा आकर्षण है। मैं तो तनिक भी उसके योग्य नहीं। मैं उसकी समानता नहीं कर सकती। मैं उससे बहुत तुच्छ हूँ, किन्तु फिर भी मेरे मन के भीतर तुच्छता का अनुभव नहीं होता। उससे स्नेह करके मुझे गर्व का अनुभव होता है। तब मैं अपने को विश्व की सबसे भाग्यशालिनी नारी समझने लगती हूँ। बताओ माँ, क्या तुमने भी कभी पिताजी से उतना प्रेम किया है, जितना मैं 'राजा' से करती हूँ!'

वृद्धा का चेहरा एकदम से पीला पड़ गया। उसकी आँखों की निराशा और अधिक गहरी हो गई। व्यथा के मारे उसके कण्ठ से एक भी शब्द नहीं निकला।

पार्वती को लगा मानों उसने अनजाने में ही माँ के अन्तःस्थल के किसी कोमल भाग को छू दिया है। माँ की व्यथा ने उसके हृदय में उथल-पुथल मचा दी। उसने वृद्धा के पाँवों को बाहुओं में समेटते हुए कहा, 'मुझे क्षमा कर दो माँ। मैं जानती हूँ कि पिताजी की बातों से तुम्हें दुख होता है। किन्तु तुम्हें केवल इसीलिये कष्ट होता है क्योंकि तुम उनसे बहुत स्नेह करती थीं। उदास मत हो माँ, आज मैं उतनी ही खुश हूँ जितनी तुम बीस वर्ष पहले थीं। मुझे आशीर्वाद दो कि मेरा यह आज का सौभाग्य चिरकाल तक फलता-फूलता रहे।'

वृद्धा ने झुर्रियों वाले हाथ से पार्वती के बाल सहलाते हुए कहा, 'लेकिन अभी तो तुम बहुत छोटी हो पारो, अभी तो तुम्हें विवाह की कल्पना भी नहीं करनी चाहिये। इसके अतिरिक्त अभी तुम उस युवक के सम्बन्ध में कितना जानती हो? केवल तीन सप्ताह पूर्व ही उससे तुम्हारा

परिचय हुआ है। और फिर मधुकर भी तो विदेश जा रहा है। उसी की चिन्ता मुझे कम नहीं है। तुम्हें सारी स्थिति पर विचार कर लेना चाहिये। फिर भी यदि वह युवक अमीर है तो......।'

'नहीं, मुझे धन की चिन्ता नहीं है। मैं उसकी सम्पत्ति को कोई महत्त्व नहीं देती। मैं केवल सुखी रहना चाहती हूँ माँ।'

'सुखी!' वृद्धा के हृदय से एक बुभुक्षित चीत्कार-सा निकल पड़ा। निराशा की गहरी छाया उसके चेहरे पर स्पष्ट अंकित हो गई।

तभी द्वार खोल कर भारी शरीर के लम्बे से युवक ने कमरे में प्रवेश किया। उसके बाल लम्बे और घुँघराले थे। उसका चेहरा बिल्कुल पार्वती के समान था।

कमरे में प्रवेश करते ही मधुकर ने पार्वती से कहा, 'क्या आज मेरे साथ घूमने नहीं चलोगी पारो। मैं विदेश जा रहा हूँ, इसीलिये अपनी इस मातृभूमि को अन्तिम बार देख लेना चाहता हूँ। कौन जानता है, मैं फिर यहाँ कभी न लौटूँ और फिर मैं वापस आना भी तो नहीं चाहता पारो।'

'नहीं, ऐसी भयंकर बात मत करो मधुकर,' वृद्धा ने कहा, 'मुझे विश्वास है कि तुम जरूर लौट आओगे। जब तुम काफी धन कमा लोगे तो तुम्हें अपनी बूढ़ी माँ और बहन की याद जरूर आयेगी।'

'क्या कभी मेरी वह साध पूरी होगी माँ,' मधुकर ने एक गहरी साँस खींच कर कहा, 'मैं केवल इतना धन कमाना चाहता हूँ कि तुम्हें और पारो को इन नाटकों से मुक्ति दिला सकूँ। मैं इनसे घृणा करता हूँ।'

पार्वती ने हँस कर कहा, 'यह तुम्हारी कैसी बात है भैया। लेकिन क्या तुम सचमुच ही मेरे साथ घूमने चलोगे। मैं तो समझती थी कि आज तुम अपने मित्रों से विदा लेने जाओगे। अच्छा तुम कुछ देर ठहरो। मैं अभी कपड़े बदल कर आती हूँ।'

पार्वती चली गई और मधुकर विचारमग्न कमरे में टहलने लगा। कुछ देर बाद उसने माँ से कहा, 'मेरे चले जाने के बाद तुम्हें पारो का

ख्याल रखना होगा माँ। उसे कभी कोई कष्ट न होने देना। वह बहुत सरल है। तुम स्वयं ही उस पर निगरानी रखना।'

'तुम कैसी बातें करते हो मधुकर। क्या मैं उसकी देखभाल नहीं करती?'

'मैंने सुना है एक युवक प्रतिदिन नाटक देखने आता है। वह पारो के कमरे में जाकर उससे बातें भी करता है। क्या यह ठीक है? क्या तुम उस युवक के बारे में कुछ जानती हो?'

'इस पेशे में हमें बहुत से प्रशंसकों से मिलना पड़ता है। एक समय था जब मैं भी ऐसे अनेक लोगों से मिला करती थी। मैं अभी नहीं जानती कि पारो का उस युवक के प्रति आकर्षण कितना बढ़ गया है। किन्तु इस बात में कोई संदेह नहीं कि वह युवक बहुत सज्जन है। वह मुझसे बहुत विनीत होकर बातें करता है। इसके अतिरिक्त उसके कपड़ों से लगता है कि वह बहुत अमीर है। वह पारो को मूल्यवान वस्तुएँ भेंट करता है।'

'क्या इसके अतिरिक्त तुम उसके बारे में और कुछ भी नहीं जानती?'

'नहीं,' वृद्धा ने उत्तर दिया, 'अभी उसने अपने विषय में हमें कुछ भी नहीं बताया है। यह उसकी बड़ी विचित्र बात है। वह उन धनिकों की तरह नहीं है जो अपने बड़प्पन की सभी बातें बता देना चाहते हैं और दूसरों की महानता की कोई भी बात सुनना नहीं चाहते।'

मधुकर ने होंठ काट लिये। उसने चिंतित स्वर में कहा, 'तुम्हें पारो की बहुत निगरानी रखनी चाहिये माँ, मैं जानता हूँ वह बहुत भोली है।'

'ऐसी बातें कह कर मुझे दुखी मत करो मधुकर। मैं तो सदा ही पारो की विशेष रूप से चिन्ता रखती हूँ। किन्तु एक बात मेरी समझ में नहीं आती। यदि वह युवक वास्तव में अमीर है तो पारो को उससे अवश्य ही सम्बन्ध स्थापित कर लेना चाहिये। तुम उसे ऐसा करने से क्यों रोकते हो? धनिकों से सम्बन्ध रखने में ही हमारा हित है और मैं

विश्वास से कह सकती हूँ कि वह युवक बहुत अमीर है। उससे विवाह करके पारो जीवन भर सुखी रहेगी। जब मैं उन्हें पास-पास खड़ा देखती हूँ तो मैं स्तब्ध सी उन्हें देखती रह जाती हूँ। वह जोड़ा मुझे बहुत अच्छा लगता है। वह युवक बहुत सुन्दर है।'

इसके उत्तर में मधुकर ने क्या कहा यह वृद्धा को सुनाई नहीं पड़ा। वह खिड़की पर जा खड़ा हुआ था और नीचे सड़क पर आते-जाते लोगों को देख रहा था।

तभी द्वार खोल कर पार्वती ने कमरे में प्रवेश किया। उसने उन दोनों को विचारमग्न देख कर कहा, 'तुम लोग बहुत गम्भीर हो। क्या बात हुई ?'

'कुछ नहीं,' मधुकर ने सड़क पर से आँखें घुमा कर कहा, 'कभी-कभी हमें गम्भीर भी हो जाना चाहिये। क्या तुम चलने के लिये तैयार हो ?'

'हाँ, मैं तैयार हूँ,' पार्वती ने मधुकर के व्यवहार से चिढ़ कर कहा।

उस दिन घूमते-घूमते दोनों बहुत दूर निकल गये। संध्या का अँधियारा घिरने लगा। किन्तु उस लम्बी अवधि में कोई भी एक दूसरे से नहीं बोला। दोनों ही अपने-अपने विचारों में खोये हुए थे।

पार्वती की कल्पना में 'राजा' के सिवा और कुछ भी शेष नहीं रह गया था। वह निरन्तर उसी के सम्बन्ध में विचार कर रही थी। उसकी आँखों में स्वप्न नाच रहे थे। उसके मस्तिष्क में एक नशा था जो उसे बेसुध बनाता जा रहा था।

और मधुकर आने वाले दिनों की कल्पना कर रहा था। वह यहाँ से बहुत दूर जा रहा है। उस दूर देश में, जहाँ उसका अपना कोई भी नहीं है। वह एक जहाज पर छोटा सा नौकर ही तो है। वहाँ से उसे मिलता ही कितना है।

किन्तु वह धन कमाने के स्वप्न देख रहा है। केवल धन कमाने के

लिये ही वह अपने सगे-सम्बन्धियों से इतनी दूर जा रहा है। केवल पैसे के लिये ही वह पार्वती को यहाँ अकेली छोड़े जा रहा है। क्या उसके लिये धन इतना आकर्षक है? क्या उसका इतना महत्व है? उसे अपने से घृणा होने लगती है। किन्तु वह सोचता है कि दुनिया में ऐसे असंख्य दुखी आदमी हैं जो दो रोटी के लिये अपने सारे जीवन को बेच देते हैं। और वह भी तो रोटियों के दो टुकड़ों के लिये देश-विदेश घूमता रहता है। तो क्या पेट की चिन्ता करते-करते मर जाना ही उसका जीवन है! उसके मन में विद्रोह उठता है। वह ईश्वर से घृणा करने लगता है। किन्तु फिर भी वह नहीं जानता कि वह क्या करे। वह पार्वती की बात सोचता है। हो सकता है कि किसी दिन वह युवक भी उसे उसी प्रकार मझधार में छोड़ कर चला जाय, जिस प्रकार अधिकांश युवक चले जाते हैं। आज की परिभाषा में वह युवक भला आदमी है और इसीलिये मधुकर उससे घृणा करता है। वह भले कहलाने वाले हर धनिक से घृणा करता है।

मधुकर अपने विचारों में खोया चुपचाप चला जा रहा था। इस बीच में पार्वती ने उससे क्या कहा, वह भी उसे ठीक से सुनाई नहीं दिया।

अन्त में पार्वती ने झुँझला कर मधुकर का हाथ झकझोरते हुए कहा, 'तुम मेरी कोई भी बात नहीं सुन रहे हो भैया। क्या तुम मुझे अपनी योजनाओं के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं बताओगे?'

'तुम मुझसे क्या सुन लेना चाहती हो पारो?' मधुकर ने एक गहरी साँस खींच कर कहा।

'बस यही कि तुम हमें कभी नहीं भूलोगे।'

'मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूँगा पारो, लेकिन मैं जानता हूँ, तुम में से मुझे कोई भी याद नहीं रखेगा।'

पार्वती लजा गई। उसने कहा, 'मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझी भैया।'

'मैंने सुना है पारो, कि तुम किसी से प्रेम करने लगी हो। किन्तु उसके सम्बन्ध में तुमने मुझसे कभी भी कुछ नहीं बताया। हो सकता है कि किसी दिन वह तुम्हें धोखा दे।'

पार्वती स्तब्ध रह गई। उसने करुण स्वर में कहा, 'नहीं, तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिये, मधुकर। वह कभी भी मुझे धोखा नहीं दे सकता है। मैं उससे प्रेम करती हूँ।'

'लेकिन तुम तो उसके सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानती। तुम्हें उसका असली नाम भी मालूम नहीं है। मैं जानना चाहता हूँ कि वह कौन है।'

'मैं उसे 'राजा' कहती हूँ। जब तुम उसे देखोगे तो तुम्हें मालूम होगा कि उससे अच्छा आदमी दुनिया में दूसरा कोई है ही नहीं। जब एक दिन तुम विदेश से लौटोगे तो तुम्हारी उससे भेंट होगा। मैं विश्वास से कह सकती हूँ कि उस दिन तुम उससे अवश्य ही स्नेह करने लगोगे। दुनिया में ऐसा कोई भी नहीं है जो उसे प्यार न करता हो। मैं चाहती थी कि आज तुम मेरा नाटक देखते। वह भी वहाँ अवश्य आएगा। आज मैं शीरी का अभिनय करूँगी। यह कैसा संयोग है भैया। मैं प्रेम करती हूँ और आज मुझे शीरी का अभिनय करना है। आज मैं जैसा अभिनय करूँगी, वैसा मैंने पहले कभी नहीं किया। दर्शक मुझे देख कर पागल हो उठेंगे। नाटक का मालिक मेरे हर वाक्य पर 'शाबाश-शाबाश' चिल्लाएगा। और मेरा 'राजा!' वह मुझे देख कर मंत्रमुग्ध हो उठेगा। लोग कहा करते हैं कि जहाँ दारिद्र होता है वहाँ प्रेम नहीं होता। मैं उसके सामने बहुत निर्धन हूँ, किन्तु मैं जानती हूँ कि मेरी निर्धनता हमारे प्रेम के मार्ग में कभी बाधा बन कर खड़ी नहीं होगी।'

'तुम कहती हो कि वह बहुत धनिक है।'

'हाँ, वह किसी भी राजकुमार से कम नहीं। इससे अधिक तुम्हें और क्या चाहिए।'

'तब तो वह अवश्य ही तुम्हें अपने चंगुल में फँसा लेगा। तुम्हें उससे सावधान रहना चाहिये।'

'उसे देख कर उसकी पूजा करने को मन चाहता है भैया। और उसे जान कर उस पर विश्वास किये बिना नहीं रहा जा सकता।'

'तुम पागल हो गई हो पारो।'

पार्वती हँसी। उसने स्नेह से मधुकर का हाथ पकड़ कर कहा, 'एक दिन आयेगा भैया, जब तुम किसी से प्रेम करने लगोगे। केवल उसी दिन तुम प्रेम के महत्व को समझोगे। आज तुम दुखी हो रहे हो। मेरे सबसे बड़े सौभाग्य पर भी दुखी हो रहे हो। मैं सच कहती हूँ कि जीवन में मैं इतनी सुखी पहले कभी नहीं हुई। हम दोनों का जीवन सदा ही दुखों से भरा रहा है। किन्तु अब उसे आशा की एक झलक दिखाई दे गई है। तुम एक नई दुनिया में जा रहे हो और मैंने भी अपनी एक दुनिया ढूँढ़ निकाली है।'

मधुकर ने पार्वती की इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह क्षितिज के पास उमड़ते हुये गहरे अन्धेरे की छाया को अपलक निहार रहा था।

तभी पार्वती यकायक रुक गई। उसने अँगुली उठा कर कहा, 'वह देखो, वह जा रहा है।'

'कौन,' मधुकर ने उस ओर देख कर कहा।

''राजा,' उस बड़ी काली मोटर में।' पार्वती ने छोटा सा उत्तर दिया।

मधुकर उत्सुकता से उस ओर देखने लगा। उसने कहा, 'मैं उसे देखना चाहता हूँ, मैं उसे जरूर देखूँगा।'

किन्तु तभी वह बड़ी मोटर हार्न देती हुई तेजी से आगे निकल गई।

पार्वती नयनों में भारी निराशा लिये उसे देखती रह गई। कुछ देर

बाद उसने कहा, 'वह चला गया भैया। मैं चाहती थी कि तुम उसे देख लेते।'

'हाँ, मैं उसे देखना चाहता था बहन। किन्तु आज मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि यदि उसने कभी भी तुम्हें दुख पहुँचाया तो मैं उसकी हत्या कर दूँगा।'

पार्वती विस्फारित नेत्रों से उसकी ओर देखती रह गई। एक बार उसका हृदय भय से काँप उठा।

उसने आतंकित स्वर में कहा, 'तुम्हें ऐसा कभी नहीं कहना चाहिये भैया। मैं जानती हूँ, अपनी बहन के सौभाग्य से खिलवाड़ करो, तुम ऐसे नहीं हो। आज तुम नहीं जानते कि तुम क्या कह रहे हो। तुम उससे ईर्ष्या करते हो भैया। उसके प्रति अनुदार मत बनो।'

'आज मैं सोचता हूँ कि मैंने विदेश जाने का फैसला करके बड़ी भारी भूल की है। मैं अपनी यात्रा स्थगित करने का प्रयत्न करूँगा।'

'इतने गम्भीर मत बनो भैया। मुझे विश्वास है कि जिसे तुम्हारी पारो प्रेम करती है, उसका तुम कभी कोई भी अनर्थ नहीं करोगे।'

'हाँ, जब तक तुम उससे प्रेम करती रहोगी तब तक मैं उसका कोई भी अनर्थ नहीं करूँगा।'

'मैं उससे जीवन भर प्रेम करती रहूँगी।'

'और वह!'

'वह भी मुझसे सदा प्यार करेगा,' पार्वती ने दृढ़ स्वर में कहा।

'यह तो हमें भविष्य ही बताएगा।' मधुकर का स्वर अब भी गम्भीर बना था। कुछ देर बाद उसने कहा, 'अब हमें घर लौट चलना चाहिये पारो, बहुत देर हो गई है।'

५

'क्या तुमने सुरेश का फैसला सुन लिया है हेमन्त,' कुँवर राजेन्द्र ने उसकी चित्रशाला में प्रवेश करते हुये कहा।

'कौन-सा फैसला?' हेमन्त चित्र बनाने में लीन था। उसने अपनी तूलिका रोक कर पूछा।

'सुरेश विवाह कर रहा है।'

हेमन्त स्तब्ध रह गया। उसने आश्चर्य से कहा, 'सुरेश विवाह कर रहा है। नहीं, यह असम्भव है।'

'मैं तुमसे सच ही कह रहा हूँ हेमन्त।'

'लेकिन क्या उसने अपनी वधू को चुन लिया है।'

'हाँ, वह एक अभिनेत्री है।'

'मैं इस पर विश्वास नहीं करता। सुरेश बहुत समझदार है। वह बहुत ऊँचे कुल का लड़का है। उसके पास धन की भी कोई कमी नहीं। क्या उसके लिये एक अभिनेत्री से विवाह करना अनुचित नहीं होगा?'

'लेकिन सुरेश उससे प्रेम करता है। यह उसका पहला प्यार है,' कुँवर राजेन्द्र ने हँस कर कहा।

हेमन्त एक क्षण तक सोचता रहा। फिर उसने कहा, 'मुझे आशा है कि लड़की अवश्य ही सुन्दर होगी। मैं नहीं चाहता कि सुरेश किसी कुरूपा लड़की से विवाह करे। यदि कोई कुरूपा लड़की उसके गले मढ़ दी गई तो उसकी सारी अच्छी आदतें नष्ट हो जायँगी।'

'लेकिन वह लड़की अच्छी है। वह काफी सुन्दर है,' कुँवर राजेन्द्र ने पानी का गिलास होठों पर लगाते हुये कहा, 'सुरेश कहता है कि वह

बहुत सुन्दर है और उसकी परख कभी भी साधारण नहीं हो सकती। तुमने उसका जो चित्र बनाया है, उससे प्रेरणा पाकर वह दूसरों के व्यक्तित्व की प्रशंसा करना सीख गया है। यदि सुरेश को अपना वायदा याद रहा तो आज रात हम उस लड़की को देखेंगे।'

'क्या सचमुच हम लोग उसे देख सकेंगे? बताओ राजेन्द्र क्या तुम वास्तव में उसे सुरेश के योग्य समझते हो?'

'मैं कभी भी किसी चीज को योग्य या अयोग्य नहीं मानता। यह हमारे जीवन का बड़ा भद्दा दृष्टिकोण है। हम दुनिया में अपनी नैतिक महानता की डींग मारने नहीं आये हैं। दुनिया के आम लोग क्या कहते हैं मैं उसकी कभी चिन्ता नहीं करता और न मैं सृष्टि के सुन्दर व्यक्तियों के काम में हस्तक्षेप करता हूँ। सुरेश ने एक सुन्दर लड़की से प्रेम किया और उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। उसे ऐसा क्यों नहीं करना चाहिये था? दुनिया में प्रत्येक अनुभव का कोई मूल्य होता है। जब कोई व्यक्ति विवाह के विरुद्ध बोलता है तो हम उसके अनुभव की भी उपेक्षा नहीं कर सकते। मुझे आशा है कि सुरेश उस लड़की से विवाह करेगा और पाँच-छै मास तक उसे हृदय से प्यार करता रहेगा। किन्तु फिर अचानक ही वह किसी दूसरी लड़की पर मुग्ध हो जायगा। उसका यह बड़ा अच्छा अनुभव रहेगा।'

'मैं जानता हूँ राजेन्द्र कि जो कुछ तुम कहते हो, तुम स्वयं भी उस पर विश्वास नहीं करते। यदि किसी दिन सुरेश का जीवन नष्ट हो गया तो उसके लिये तुमसे अधिक दुख दुनिया में और किसी को नहीं होगा। तुम अपने को जितना बुरा प्रदर्शित करना चाहते हो वास्तव में तुम उससे कहीं अच्छे हो।'

कुँवर राजेन्द्र हँसा। उसने कहा, 'हम दूसरों के सम्बन्ध में जानना चाहते हैं हेमन्त, इसका केवल यही कारण है कि हम स्वयं अपने से भयभीत रहते हैं। हम दूसरों के प्रति उदार तभी होते हैं जब हमें यह आशा हो जाती है कि उनसे हमें लाभ होगा। यदि हमें लाभ की आशा

होती है तो हम 'समाज के डाकुओं' की भी प्रशंसा करते हैं। मेरे मत में केवल उन्हीं लोगों का जीवन नष्ट होता है जिनके विकास के सभी मार्ग बन्द कर दिये जाते हैं। जहाँ तक विवाह का प्रश्न है, वह एक बहुत मूर्खतापूर्ण कार्य है किन्तु नारी और पुरुष के कुछ दूसरे सम्बन्ध भी होते हैं। मैं उन सम्बन्धों को ही प्रोत्साहन देता हूँ। लो सुरेश भी यहीं आ गया। वह स्वयं ही तुम्हें सब कुछ बता देगा।'

'तुम लोगों को मुझे बधाई देनी चाहिये,' सुरेश ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा, 'मैं जीवन में कभी भी इतना सुखी नहीं हुआ। जिस बात ने अचानक ही मेरे जीवन में पदार्पण कर लिया है उससे मेरा मन सुख और शान्ति से परिपूर्ण हो उठा है। जिस क्षण की मैं जीवन में चिर प्रतीक्षा कर रहा था, अब वह मेरे सामने अनायास ही आ खड़ा हुआ है।' सुरेश का स्वर उत्तेजित था। आज वह बहुत सुन्दर लग रहा था।

हेमन्त ने कहा, 'मैं चाहता हूँ कि तुम सदा सुखी रहो, किन्तु तुमने मुझे अपने निर्णय की सूचना नहीं दी। इसके लिये मैं कभी तुम्हें क्षमा नहीं कर सकता। राजेन्द्र को तो तुमने इस सम्बन्ध में बता दिया था।'

'लेकिन इस समय ऐसी बातों का कोई मूल्य नहीं है,' कुँवर राजेन्द्र ने हँसकर सुरेश से कहा, 'पहले तुम यह बताओ कि यह सब कैसे हुआ?'

सुरेश ने कहा, 'मेरे पास अधिक कहने को कुछ भी नहीं है। कल शाम तुमसे विदा लेने के बाद मैं नाटक देखने गया। कल मैंने पार्वती को देखा तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। मैं सच कहता हूँ राजेन्द्र, दुनिया भर का सारा सौन्दर्य उसी में समा गया था। मैं चाहता था कि तुम कल उसे देखते। उसके असीम सौन्दर्य ने मुझे पागल बना दिया और उसकी कला। तुम आज उसे देखोगे तो उसकी सराहना किये बिना नहीं रह सकते। वह जन्मजात कलाकार है। नाटक समाप्त होने के बाद मैं उसके पास गया और हम एकान्त में बैठे बहुत देर तक बातें

करते रहे। मैं उसके अभिनय और सौन्दर्य की प्रशंसा कर रहा था और लज्जा के मारे उसकी आँखें ऊपर नहीं उठ रही थीं। तभी मुझे उसकी आँखों में एक विचित्र-सा भाव दिखाई दिया। ऐसा भाव मैंने पहले कभी नह' देखा था। मुझे लगा मानो मेरा सारा जीवन सिमट कर इन्हीं आँखों में समा गया है। तभी पार्वती उठी और उसने अपना आँचल सिर पर ढक कर मेरे पावों की धूलि अपने माथे पर लगा ली। मुझे ये बातें तुम्हें नहीं बतानी चाहिये थी, किन्तु मैं तुमसे कुछ भी नहीं छिपा सकता। हमारा विवाह का निर्णय अभी पूर्णतया गुप्त है। पार्वती ने अपनी माँ को भी अभी इसकी सूचना नहीं दी है।'

'क्या आज तुम्हारी पार्वती से भेंट हुई?' कुँवर राजेन्द्र ने पूछा।

'नहीं, अभी मैं उससे नहीं मिला हूँ।'

'तुमने उससे किस समय विवाह की चर्चा की और उसके उत्तर में उसने क्या कहा, शायद इस सम्बन्ध में तुम सब कुछ भूल चुके होगे।'

'मैं विवाह को कोई व्यापारिक सौदा नहीं मानता राजेन्द्र। मैंने उससे कहा कि मैं उसे प्यार करता हूँ। उसने कहा कि वह मेरी पत्नी बनने के योग्य नहीं है। उसकी यह बड़ी विचित्र बात है। उसके सामने तो सारे विश्व की अच्छाइयाँ भी बहुत तुच्छ हैं।'

'ठीक है,' कुँवर राजेन्द्र ने कहा, 'स्त्रियाँ सदा सावधान रहती हैं। वे हम लोगों से अधिक सतर्क होती हैं। ऐसी परिस्थिति में हमें विवाह के सम्बन्ध में कुछ भी याद नहीं रहता और वे सदा हमें इस बात की याद दिलाती रहती हैं।'

हेमन्त ने कुँवर राजेन्द्र का हाथ दबाते हुये कहा, 'ऐसी बातें मत करो राजेन्द्र। तुम सुरेश को क्रुद्ध कर दोगे। वह दूसरे आदमियों की तरह नहीं है। वह किसी को दुख नहीं दे सकता।'

राजेन्द्र ने सुरेश की ओर देखा। उसने कहा, 'सुरेश मुझसे कभी नाराज नहीं होता। मैंने यह प्रश्न अपनी उत्सुकता को शान्त करने के

लिये ही किया था। मेरा विश्वास है कि नारी ही पुरुष के सामने विवाह का प्रस्ताव रखती है। पुरुष स्वयं ऐसा प्रस्ताव कभी नहीं करता।'

सुरेश हँसा। उसने कहा, 'तुम्हारी यह बात अनुचित है राजेन्द्र, किन्तु मैं इसको बुरा नहीं मानता। तुमसे नाराज होना असम्भव है। जब तुम पार्वती को देखोगे तो तुम्हें मालूम होगा कि उसे धोखा देने वाला व्यक्ति हृदयहीन पशु के सिवा और कुछ भी नहीं हो सकता। मैं पार्वती से प्रेम करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि दुनिया उसकी पूजा करे। विवाह क्या है? वह एक अटूट प्रतिज्ञा मात्र ही तो है। मैं एक ऐसी ही प्रतिज्ञा करना चाहता हूँ। जब मैं उसके साथ होता हूँ तो मुझे उन सभी बातों पर दुख होता है जो तुमने मुझे सिखाई हैं। उस समय मैं वैसा नहीं रहता जैसा तुम मुझे देखते हो। पार्वती के स्पर्श मात्र से ही मैं तुम्हें, तुम्हारे पापों और तुम्हारे भयानक और विषैले सिद्धान्तों को भूल जाता हूँ।'

'कौन से सिद्धान्त?' कुँवर राजेन्द्र ने पूछा।

'जीवन के बारे में तुम्हारे सिद्धान्त, प्रेम के बारे में तुम्हारे सिद्धान्त और सुख के बारे में तुम्हारे सिद्धान्त, उस समय मैं उन सबको भूल जाता हूँ राजेन्द्र।'

'सुख के सम्बन्ध में मेरे सिद्धान्त कभी गलत नहीं हो सकते। जब आदमी खुशहाल होता है तो वह सदा अच्छा होता है किन्तु जब वह अच्छा होता है तो सदा खुशहाल नहीं होता।'

'लेकिन अच्छे आदमी से तुम्हारा क्या अभिप्राय है राजेन्द्र?' हेमन्त ने पूछा।

'अच्छा आदमी वही होता है जो अपनी आत्मा के स्वर से स्वर मिला कर चले। जो दूसरों से भयभीत होकर अपनी इच्छा के विरुद्ध दूसरों के इशारों पर नाचता है वह अच्छा आदमी नहीं है। हमारा जीवन हमारे लिये बहुत महत्वपूर्ण है।'

'किन्तु यदि किसी व्यक्ति का जीवन केवल उसी के लिये होता है तो उसे उसका बहुत मूल्य चुकाना पड़ता है,' हेमन्त ने कहा।

'हाँ, आजकल हमें हर चीज का अधिक मूल्य चुकाना पड़ता है,' कुँवर राजेन्द्र ने हँस कर कहा, 'मैं विश्वास से कह सकता हूँ कि धनिक मनुष्य को अपनी रँगरेलियों के लिये कभी पछताना नहीं पड़ता और गरीब व्यक्ति कभी जान भी नहीं सकता कि सुख क्या है।'

'मेरे मत में सबसे बड़ा सुख किसी की पूजा करना है,' सुरेश ने कहा।

'हाँ पूजा कराने से पूजा करना अधिक अच्छा है। किसी से अपनी पूजा कराना मूर्खता के सिवा और कुछ भी नहीं है। स्त्रियाँ हमसे वैसा ही व्यवहार करती हैं जैसा मनुष्य भगवान से करता है। वे हमारी पूजा करती हैं और हमसे निरन्तर माँग करती रहती हैं कि हम उनके लिये कुछ करें।'

'लेकिन वे जिस चीज की माँग करती हैं, उसे वे हमें पहले ही दे देती हैं,' सुरेश ने गम्भीरता से कहा, 'वे हमें प्रेम करना सिखाती हैं। फिर उन्हें उस प्रेम को वापस लेने का भी अधिकार है।'

'यह बिल्कुल सच है,' हेमन्त ने कहा।

'नहीं, इसमें जरा भी सच नहीं है,' कुँवर राजेन्द्र ने अपनी अँगुलियों को मेज पर नचाते हुए कहा।

'तुम बड़े भयंकर हो राजेन्द्र, मैं नहीं जानता कि मैं तुम्हें इतना अधिक क्यों चाहता हूँ।'

तुम मुझे सदा इसी प्रकार चाहते रहोगे सुरेश। मैंने तुम्हें वे सभी पाप करने की प्रेरणा दी है, जिन्हें करने का तुम पहले साहस भी नहीं कर सकते थे।'

'तुम कैसी व्यर्थ की बातें करते हो राजेन्द्र,' सुरेश ने खड़े होते हुये कहा। 'अब हमें नाटक-गृह की ओर रवाना हो जाना चाहिये। जब पार्वती मंच पर आएगी तब जीवन के प्रति तुम्हारा सिद्धान्त ही बदल जायगा।

वह तुम्हारे अन्तर में एक ऐसी भावना जगाएगी जिसका अनुभव तुम्हें पहले कभी नहीं हुआ होगा।'

'मुझे सभी बातों का अनुभव हो चुका है, किन्तु फिर भी मैं किसी नई भावना का स्वागत करूँगा। मैं अभिनय को पसन्द करता हूँ। वह जीवन से अधिक वास्तविक होता है। तो अब हमें चल देना चाहिये।'

तीनो ने अपने गरम कोट पहने और नाटक-गृह की ओर चल दिये। हेमन्त चुप था। उसके मन में जाने कैसी निराशा छाई हुई थी। उसकी आँखों के सामने अँधेरा छाने लगा। और सड़कों पर आते-जाते लोग उसे धुँधले दिखाई देने लगे। लेकिन अपने मन की इस अवस्था का कारण उसे लाख प्रयत्न करने पर भी ज्ञात नहीं हुआ।

६

उस रात नाटक में काफी भीड़ थी। पार्वती ने पहले भी अनेक बार शीरीं का अभिनय किया था किन्तु उसके अभिनय को देखने पहले कभी भी इतने लोग नहीं आये।

नाटक का वृद्ध मालिक आज बहुत खुश था। वह नगर के धनिकों से परिचय प्राप्त करता इधर-उधर घूम रहा था। कभी-कभी किसी कोने से सीटी का स्वर गूँज उठता था।

कुँवर राजेन्द्र ने नाटक-गृह के चारों ओर देखते हुये कहा, 'क्या हमको यहाँ कोई पवित्र आत्मा मिल सकती है?'

'हाँ,' सुरेश ने उत्तर दिया 'मैंने इन्हीं दीवारों के भीतर उसे खोज निकाला है। वह संसार की सभी चीजों से अधिक पवित्र है। जब वह अभिनय करेगी तो तुम्हें किसी और बात की सुधि ही नहीं रहेगी। जब वह मंच पर आयेगी तो ये अश्लील और भयंकर दिखाई देने वाले लोग बिलकुल ही बदल जायँगे। वे चुपचाप बैठ कर उसका अभिनय देखेंगे! पार्वती के एक इंगित पर वे हँसेंगे और दूसरे पर आँसू बहा देंगे।'

'मैं तुम्हारी भावनाओं को समझता हूँ सुरेश। मैं उस लड़की की कला और सौन्दर्य पर भी विश्वास करता हूँ। जिसे तुम प्यार करते हो, वह अवश्य ही बहुत सुन्दर होगी। ईश्वर ने पार्वती को तुम्हारे लिये ही बनाया है। मैं स्वीकार करता हूँ कि उसके बिना तुम अधूरे ही रह जाओगे,' हेमन्त ने बहुत धीमे स्वर में कहा। उसके कण्ठ से करुणा फूट रही थी।

सुरेश ने स्नेह से हेमन्त का हाथ दबाया। उसने कहा, 'मैं जानता था तुम अवश्य ही मेरी भावनाओं को समझोगे। राजेन्द्र बहुत कठोर है। वह मुझे भयभीत कर देता है।'

लगभग बीस मिनट के बाद मञ्च से वह गन्दा और साधारण पर्दा उठ गया और पार्वती ने धीरे-धीरे मञ्च पर प्रवेश किया। कुँवर राजेन्द्र ने उसे गौर से देखा। हाँ, वह सचमुच ही बहुत सुन्दर है। उसने ऐसा सौन्दर्य पहले कभी नहीं देखा। उसके चंचल नयनों में सचमुच ही बहुत आकर्षण है।

सुरेश अपलक पार्वती की ओर निहार रहा था। कुँवर राजेन्द्र ने उसके कानों के पास मुँह ले जाकर कहा, 'सुन्दर, बहुत सुन्दर!'

सुरेश ने राजेन्द्र की बात नहीं सुनी। उसे अपनी सुधि नहीं थी। हेमन्त जोर-जोर से तालियाँ बजा रहा था।

पार्वती निस्सन्देह बहुत सुन्दर थी, किन्तु उसका अभिनय। जब उसने फरहाद की ओर देखा तो उसकी आँखें शून्य थी, उनमें उल्लास का कोई भी चिन्ह नहीं था। उसने फरहाद को लक्ष्य करके जो वाक्य कहे, उसमें स्वाभाविकता का कहीं नाम भी नहीं था। उसका स्वर मधुर था किन्तु उसकी लय बिल्कुल ही गलत थी। उसकी वासना कृत्रिम मालूम होती थी।

सुरेश का चेहरा पीला पड़ गया। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया। आज पार्वती को क्या हो गया? हेमन्त और राजेन्द्र भी चुप थे।

उन्होंने सुरेश से कुछ भी नहीं कहा। उन्हें लगा जैसे पार्वती सुरेश के पूर्णतया अयोग्य है। वे निराश हो गये।

वे बहुत देर तक पार्वती का अभिनय देखते रहे। सुरेश प्रयत्न करता रहा कि वह उसके अभिनय में कहीं भी अच्छाई का कोई आभास पा ले। किन्तु आज पार्वती को जाने क्या हो गया था। उसका ऐसा कृत्रिम अभिनय उसने पहले कभी नहीं देखा था।

सुरेश ने सोचा कि शायद वह इतनी भीड़ को देख कर घबरा गई हो, किन्तु पार्वती ने सहस्रों नाटकों में अभिनय किया है। इस कला में वह परिपक्व है। भीड़ को देख कर घबराने का उसका स्वभाव नहीं है। निस्सन्देह यह कला का ही दोष है। आज वह पूर्णतया असफल रही है।

अन्य दर्शकों को भी नाटक में कोई दिलचस्पी नहीं रही। चारों ओर शोर मच रहा था। लोग जोर-जोर से सीटियाँ बजा रहे थे और बातें कर रहे थे। सारे नाटक-गृह में केवल एक ही व्यक्ति था, जिस पर इन सब बातों का प्रभाव नहीं पड़ा था और वह थी पार्वती।

दूसरा दृश्य समाप्त होते ही कुँवर राजेन्द्र उठ खड़ा हुआ। उसने कहा, 'वह बहुत सुन्दर है सुरेश, किन्तु वह अभिनय करना नहीं जानती। अब हमें चलना चाहिये।'

'किन्तु मैं नाटक समाप्त हुये बिना यहाँ से नहीं जा सकता,' सुरेश ने दृढ़ स्वर में कहा, 'मुझे दुख है कि मैंने तुम्हारा आज का दिन व्यर्थ में बरबाद किया। मैं तुम दोनों से क्षमा माँगता हूँ।'

हेमन्त ने स्नेह भरे स्वर में कहा, 'हो सकता है कि पार्वती आज अस्वस्थ हो। हम फिर किसी दिन आकर उसका अभिनय देखेंगे।'

'काश! वह बीमार होती, किन्तु मैं जानता हूँ वह पूर्ण स्वस्थ है। कल रात वह एक महान कलाकार थी और आज वह एक अति साधारण अभिनेत्री के सिवा और कुछ भी नहीं है।'

'अपनी प्रेयसी के बारे में ऐसी बातें मत करो सुरेश। प्रेम कला से बहुत ऊँचा होता है।'

'लेकिन अब हमें यहाँ से चले जाना चाहिये,' कुँवर राजेन्द्र ने खड़े होते हुये कहा, 'और अब तुम्हें भी यहाँ अधिक देर नहीं ठहरना चाहिये सुरेश। रद्दी अभिनय देखने से नैतिकता गिर जाती है और फिर तुम यह कभी नहीं चाहोगे कि तुम्हारी पत्नी अभिनय करे। पार्वती सचमुच ही बहुत सुन्दर है और यदि वह जीवन के सम्बन्ध में भी उतना ही थोड़ा जानती है जितना कि अभिनय के सम्बन्ध में, तो यह एक अच्छा अनुभव रहेगा। दुनिया में दो प्रकार के आदमी मनुष्य को आकर्षित करते हैं। एक तो वे जो सभी विद्याओं में पारंगत हैं और दूसरे वे जो कुछ भी नहीं जानते। लेकिन तुम इतने उदास क्यों हो गये। होठों पर सदा मुस्कान बनाए रखना ही युवा रहने का रहस्य है। चलो, किसी अच्छे से रेस्ट्राँ में बैठ कर चायपान करें। पार्वती सुन्दर है, तुम्हें इससे अधिक और क्या चाहिये।'

सुरेश की आँखों के सामने अँधेरा छाने लगा। उसने चिल्ला कर कहा, 'तुम चले जाओ राजेन्द्र, मैं अकेला रहना चाहता हूँ। काश, तुम देख सकते कि आज मेरी दुनिया कितनी सूनी हो गई है।' सुरेश के नयनों से अविरल अश्रुधारा बह चली। एक बार उसके होंठ हिले किन्तु उनसे एक भी शब्द नहीं निकला। उसने दोनों हाथों से अपना मुँह छिपा लिया। वह जोर-जोर से सिसकियाँ ले रहा था।

राजेन्द्र ने स्वर में जाने कैसा माधुर्य भर कर कहा, 'चलो हेमन्त।' और दोनों व्यक्ति तुरन्त ही वहाँ से उठ कर चले गये।

सुरेश ने एक बार फिर आँखें उठा कर पार्वती की ओर देखा। उसका अभिनय अब भी उसी प्रकार निर्जीव था। उसके स्वर में जरा भी आकर्षण नहीं था। सुरेश का चेहरा पीला पड़ गया। उसे वहाँ एक क्षण भी बैठना दूभर हो रहा था। उसने देखा कि दर्शक हँसते हुये नाटक को बीच में ही छोड़ कर बाहर जा रहे हैं।

सुरेश को यह सब असह्य लगने लगा। नाटक समाप्त होते ही वह मञ्च के पीछे जा पहुँचा। अपने कमरे में पार्वती अकेली उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसके मुख पर विजय का गर्व था। उसकी आँखों से तेज बरस रहा था। जाने कैसे उल्लास से उसके अधर मुस्करा रहे थे।

जैसे ही सुरेश ने उसके कमरे में प्रवेश किया वैसे ही पार्वती ने अपने स्वर में अपार आनन्द भर कर कहा, 'आज मैंने कितना बुरा अभिनय किया सुरेश।'

सुरेश ने आश्चर्य से उसकी ओर देख कर कहा, 'हाँ, तुम्हारा इतना रद्दी अभिनय मैंने पहले कभी नहीं देखा। क्या तुम अस्वस्थ हो? तुम नहीं जानती पार्वती कि मैंने आज कितना सहा है।'

पार्वती हँसी। उसकी उस मुस्कान में जाने कितना माधुर्य बरस पड़ा। उसने सुरेश की ओर देखते हुये बहुत ही धीमे स्वर में कहा, 'तुम्हें पहले ही समझ लेना चाहिये था सुरेश, लेकिन क्या तुम अब भी नहीं समझे?'

'तुम कौन सी बात समझने को कह रही हो,' सुरेश ने क्रोधित स्वर में पूछा।

'मैंने आज इतना बुरा अभिनय क्यों किया? मैं जीवन में आगे कभी भी अच्छा अभिनय नहीं कर सकूँगी।'

सुरेश ने अपने कन्धे हिलाये। 'शायद आज तुम अस्वस्थ हो। अस्वस्थ होने पर तुम्हें अभिनय कभी नहीं करना चाहिये। आज तो तुमने इतने लोगों के सामने अपने को हास्यास्पद बना डाला। मेरे मित्र तुम्हारा अभिनय देख कर ऊब गये। वे लोग तुम्हारे विषय में क्या सोचते होंगे।'

लेकिन पार्वती ने सुरेश की बात नहीं सुनी। आज उसका अङ्ग-अङ्ग आनन्द-विभोर हो उठा था। आज जाने कैसा उल्लास उस पर अधिकार बनाये बैठा था।

उसने स्नेह से सुरेश का हाथ पकड़ कर खोये से स्वर में कहना आरम्भ किया, 'जब तक तुमसे मेरा परिचय नहीं हुआ था सुरेश, तब तक अभिनय ही मेरे जीवन का आदर्श था। नाटक-गृह से दूर रह कर मैं जीवित ही नहीं रह सकती थी। मैं सोचा करती थी कि मेरे जीवन में अभिनय के सिवा और कुछ भी नहीं है। जब मैं किसी पुरुष के साथ अभिनय करती तो उसे ईश्वर समझने लगती। नाटक के उन रँगे हुये पर्दों को ही मैं अपनी दुनिया समझ बैठी थी। अपने जीवन में मैंने छाया को ही सत्य मान लिया था, लेकिन एक दिन तुम आये, और तुमने मेरे जीवन को कारागार से मुक्त कर दिया। तुम्हें देख कर मुझे लगा मानों मैं युगों से तुम्हारी खोज कर रही थी। मैं सोचा करती हूँ कि यदि तुम न आते तो मेरा जीवन अधूरा ही रह जाता। आज प्रथम बार ही मुझे लगा मानों जिन रंगीन पर्दों के बीच मैं सदा से वास्तविकता खोजती रही हूँ, वे सभी छिछले और झूठे हैं। आज प्रथम बार ही मुझे अनुभव हुआ कि 'फरहाद' कुरूप और बूढ़ा है। उसका चेहरा पुता हुआ है। मैंने देखा कि उद्यान में फैली हुई चाँदनी कृत्रिम है और प्रेम से सरोवर मेरे शब्द मेरे अपने नहीं हैं। आज मुझे यह सब एक बड़ा भारी धोखा लगा। तुमने मुझे बहुत कुछ दिया है। तुमने मुझे वह दिया है सुरेश, जिसके सामने कला प्रतिबिम्ब मात्र रह जाती है। तुमने मुझे प्रेम की पहचान बताई है। तुम मेरे लिये मेरी कला से भी अधिक हो। आज जब मैं मञ्च पर आई तो मुझे लगा मानों मेरी सारी कला समाप्त हो गई है। मेरे भीतर शून्य के सिवा और कुछ भी नहीं है। मैं अपने भीतर उसका कारण टटोलने लगी और जो कुछ मैंने पाया उससे मेरा मन आनन्द-विभोर हो उठा। मेरे अधरों पर मुस्कान फैल गई। मैंने सोचा कि हमारे प्रेम के सामने तो मञ्च का वह प्रेम और प्रेम का वह अभिनय बहुत छिछला और निर्जीव है। तब उसके प्रति मेरी जरा-सी भी आसक्ति नहीं रही। मैं आज मञ्च के जीवन से घृणा करती हूँ। मुझे यहाँ से दूर ले चलो सुरेश, जहाँ हम दोनों के सिवा और कोई न हो। आज मञ्च

पर मैं 'फरहाद' से प्रेम के ये झूठे शब्द नहीं कह सकी, वे शब्द मैं तुम्हारे सिवा और किसी से नहीं कह सकती, अब तुम समझ गये होगे कि मेरा अभिनय इतना रद्दी क्यों रहा।'

सुरेश सोफे पर गिर गया। उसने छत की ओर देखते हुए बहुत ही निराश और धीमे स्वर में कहा, 'तुमने मेरे प्रेम की हत्या कर दी पार्वती।'

पार्वती ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। वह उसके पास ही सोफे पर बैठ कर प्यार से उसके बालों पर हाथ फेरने लगी। किन्तु दूसरे ही क्षण सुरेश उठ कर बैठ गया। उसने कुछ कठोर स्वर में कहा, 'तुमने मेरे प्रेम की हत्या कर दी पार्वती। पहले तुम मेरी कल्पनायें जगाया करती थी किन्तु आज तुम मेरी उत्सुकता भी नहीं जगा सकती। तुम पूर्णतया प्रभावहीन हो गई हो। मैं तुमसे स्नेह करता था क्योंकि तुम एक सच्ची कलाकार थी, तुमने अपने अभिनय से कवियों के स्वप्नों को साकार कर दिया था, तुम कला की सच्ची प्रतीक थी। किन्तु आज तुम कुछ भी नहीं हो। आज मैं सोचता हूँ कि मैंने तुमसे प्रेम करके कितनी बड़ी भूल की। मेरा हृदय पश्चाताप से जला जा रहा है। अब मैं तुमसे कभी नहीं मिलूँगा, तुम्हारे बारे में कभी नहीं सोचूँगा, तुम्हारी कभी चर्चा नहीं करूँगा। तुम नहीं जानती, एक दिन तुम मेरे लिये क्या थीं। आज मैं उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता। काश, मैं तुमसे कभी न मिला होता। तुमने मेरे जीवन का सारा रोमान्स समाप्त कर दिया। यदि प्रेम तुम्हारी कला को नष्ट कर सकता है, तो तुम प्रेम को कभी समझ नहीं सकती। कला के बिना तुम कुछ भी नहीं हो। एक दिन मैं तुम्हें महान् कलाकार बना देता। दुनिया तुम्हारी पूजा करती। लेकिन अब तुम क्या हो ? सुन्दर चेहरे वाली एक साधारण अभिनेत्री।'

पार्वती विस्फारित नेत्रों से सुरेश की ओर देखती रह गई। व्यथा से उसका चेहरा पीला पड़ गया। उसके कण्ठ से एक भी शब्द नहीं

निकला। बहुत देर बाद उसने धीमे से स्वर में कहा, 'यह तुम क्या कह रहे हो सुरेश, क्या तुम अभिनय कर रहे हो ?'

'अभिनय ?' सुरेश ने कठोर स्वर में कहा, 'अभिनय मैं तुम्हारे लिये ही छोड़ता हूँ। तुम अभिनय बहुत अच्छा कर लेती हो ना।'

पार्वती उठी। उसके मुख पर वेदना और दीनता की छाप उभरती आ रही थी। उसने एक बार धीमे से सुरेश का हाथ पकड़ कर उसकी आँखों में देखा। किन्तु सुरेश ने उसका हाथ झटक दिया। उसने कहा, 'तुम्हें मुझे छूने का कोई अधिकार नहीं है।'

पार्वती बिखरे हुए फूल की भाँति जमीन पर गिर पड़ी। उसने दोनों हाथों से सुरेश के पाँव पकड़ लिये। कुछ देर बाद उसने बहुत ही व्यथित स्वर में कहा, 'तुम मुझे छोड़ कर मत जाओ सुरेश। मुझे दुख है कि आज मैं अच्छा अभिनय न कर सकी। मैं उस समय निरन्तर तुम्हारे विषय में ही सोच रही थी। एक दिन मैं अचानक ही तुमसे स्नेह करने लगी थी और आज······तुम नहीं जानते, मैं तुमसे कितना स्नेह करती हूँ। तुम्हारे बिना मेरे जीवन में उदासी और वीरानी के सिवा और कुछ भी शेष नहीं रह जायगा। तुम मुझसे दूर मत जाओ। मैं इसे कभी सहन नहीं कर सकती। क्या तुम आज की मेरी इस छोटी-सी भूल को कभी क्षमा नहीं कर सकते ? मैं अपने को सुधारने का प्रयत्न करूँगी। मैं तुमसे स्नेह करती हूँ, केवल इसीलिये मेरी उपेक्षा न करो। मैं तुम्हारी बात स्वीकार करती हूँ। मुझे अच्छा अभिनय करना चाहिये था। यह मेरी मूर्खता थी, किन्तु यह मेरे वश की बात नहीं थी। नहीं, तुम मुझे छोड़ कर नहीं जा सकते। कहीं नहीं जा सकते।' पार्वती की आँखों से आँसू बह रहे थे। सिसकियाँ लेते-लेते उसका कण्ठ अवरुद्ध हो गया। वह घायल पक्षी की भाँति पृथ्वी पर गिर पड़ी।

सुरेश ने उसकी ओर देखा। उसकी आँखों में दया का कोई भाव नहीं था। उसे लगा जैसे पार्वती अभिनय कर रही है। पार्वती की सिसकियों और आँसुओं ने उसे क्रोधित कर दिया।

अन्त में उसने अपने शान्त स्वर में कहा, 'मैं जा रहा हूँ। मैं तुम्हारे प्रति अनुदार होना नहीं चाहता। लेकिन यह हमारी अन्तिम भेंट है। तुमने मुझे निराश कर दिया है।'

पार्वती ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह पृथ्वी पर पड़ी चुपचाप रोती रही। सुरेश तुरन्त ही नाटक-गृह से बाहर निकल गया।

नाटक-गृह से निकलने के बाद सुरेश कहाँ गया यह उसे स्वयं भी नहीं मालूम। अँधेरी गलियों और सड़कों पर वह जाने कब तक घूमता रहा। फिर वह सड़क के किनारे लगी हुई एक लालटेन के नीचे बैठ गया और बहुत देर तक वहीं बैठा रहा। उसके मन में तूफान उठा हुआ था। ऐसा तूफान उसने कभी नहीं देखा। उसे लगा जैसे वह पागल हो जायगा। उसका मन जोर-जोर से चिल्ला कर रोने को कर रहा था। किन्तु व्यथा से उसके आँसू सूख गये और वह चुपचाप वहीं बैठा शून्य नेत्रों से आकाश की ओर निहारता रहा। बहुत देर बाद वह एक गहरी उसास लेकर उठा और घर की ओर चल दिया।

किन्तु जैसे ही उसने अपने कमरे में प्रवेश किया वैसे ही उसकी निगाह हेमन्त द्वारा बनाये गये उसके चित्र पर जा पड़ी। एक क्षण को आश्चर्यचकित-सा वह उसे देखता रह गया। उस पर से आँखें हटाने का उसे साहस नहीं हुआ। उसने सोचा कि यह उसके भ्रम के सिवा और क्या हो सकता है। उसने कपड़े उतारे और आराम से पलँग पर बैठ गया। किन्तु उसके मन में बेचैनी भर रही थी। वह कुछ भी निर्णय नहीं कर पा रहा था कि क्या करे।

सुरेश एक बार फिर उस चित्र के सामने जा खड़ा हुआ और उसका निरीक्षण करने लगा। कमरे के धुँधले प्रकाश में उसे चित्र का चेहरा कुछ बदला हुआ सा दिखाई दिया। निस्सन्देह उसकी मुद्रा बदली हुई थी। उसे देख कर कोई भी कह सकता था कि उसके चेहरे पर क्रूरता की भावना स्पष्ट अंकित है। सुरेश के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।

उसने खिड़की खोल दी। नये प्रभात का प्रकाश कमरे में भर गया।

सुरेश ने एक बार फिर चित्र की ओर देखा। उसके चेहरे पर अब भी क्रूरता की झलक नाच रही थी। अब सूर्य के सुनहरे प्रकाश में वह और स्पष्ट हो गई थी। उसे चित्र का चेहरा ऐसा लगने लगा मानों वह कोई भयंकर काम करके स्वयं शीशे में देख रहा हो।

उसने मेज पर रखा हुआ शीशा उठाया और अपना चेहरा देखने लगा। उसके होंठ अब भी उसी प्रकार लाल थे। उसकी आँखों में अब भी वैसी ही चमक थी। उसके अधरों पर अब भी मुस्कान नाच रही थी। इसका क्या अभिप्राय हो सकता है? कहीं यह स्वप्न तो नहीं है?

उसने अपनी आँखें मलीं और फिर चित्र के पास जाकर उसे गौर से देखने लगा। चित्र की मुद्रा उसे अब भी बदली हुई-सी दिखाई दी। उसे विश्वास हो गया कि यह उसका भ्रम नहीं है, चित्र का चेहरा अवश्य ही बदल गया है। यह बड़ी भयंकर बात थी।

वह विचारमग्न सा कुर्सी पर बैठ गया। अतीत की घटनाएँ चलचित्र की भाँति उसकी आँखों में नाचने लगी। उसे याद आया कि जिस दिन हेमन्त ने इस चित्र को पूरा किया था उस दिन उसने उससे क्या कहा था। उस बात को वह आज भी भूला नहीं है। उस दिन उसने हेमन्त के सामने अपने मन की उन्मादी आकांक्षा प्रकट की थी। उसने कहा था कि काश, यह चित्र बूढ़ा हो जाता और मैं सदा जवान बना रहता। मेरा सौन्दर्य निर्मल जल की भाँति सदा पवित्र बना रहता और इस चित्र का चेहरा मेरे पापों और वासना की आग से काला पड़ जाता। काश, इस चित्र के चेहरे पर दुखों और वेदना की छाप पड़ जाती और मैं उपवन के खिले फूल की भाँति सुन्दर और कोमल बना रहता। उसकी वह आकांक्षा तो कभी पूरी नहीं हो सकती। वे बातें तो असम्भव हैं। किन्तु उसके सामने जो चित्र टँगा है, उसके चेहरे पर क्रूरता का भाव स्पष्ट अंकित है। इस भाव की वह कभी उपेक्षा नहीं कर सकता।

क्रूरता! क्या उसने कोई क्रूरता का कार्य किया है। दोष पार्वती का था, वह उसमें क्या कर सकता था। उसने एक स्वप्न देखा था। पार्वती

एक महान् कलाकार की भाँति उसके सामने आई। वह पार्वती को प्यार करने लगा। लेकिन पार्वती ने स्वयं अपने ही हाथों से उस स्वप्न को छिन्न-भिन्न कर डाला। वह बहुत छिछली और अयोग्य निकली।

किन्तु साथ ही उसके मन में वेदना की जाने कैसी भावना उमड़ने लगी। उसे लगा मानो पार्वती अब भी उसके पावों पर पड़ी सिसकियाँ ले रही है। उसे याद आया कि उसने पार्वती के साथ बड़ी कठोरता का व्यवहार किया है। उसे स्वयं पर आश्चर्य होने लगा। उस समय वह ऐसा क्यों हो गया था? किन्तु उसने भी कम नहीं सहा है। पार्वती को पाकर उसने अपने को दुनिया का सबसे सुखी व्यक्ति समझ लिया था। इसके बदले में पार्वती ने उसे क्या दिया। उसने उसकी दुनिया जीवन भर के लिए सूनी कर दी। किन्तु अब वह पार्वती की चिन्ता नहीं करेगा। पार्वती से उसका अब कोई सम्बन्ध नहीं है।

लेकिन वह चित्र। उसकी मुद्रा में इतना परिवर्तन कैसे हो गया? इस चित्र में उसके जीवन का रहस्य विद्यमान है। वह सदा ही उसकी कहानी कहता रहेगा। इसी चित्र ने उसे उसके सौन्दर्य से स्नेह करना सिखाया है। किन्तु क्या वह उसे उसकी आत्मा से घृणा करना भी सिखायेगा? क्या वह फिर एक बार उस चित्र की ओर आँखें उठा कर देख सकेगा?

नहीं, यह उसका भ्रम है। उसके दुखों के प्रतिबिम्ब के सिवा यह और कुछ भी नहीं हो सकता। यह चित्र जरा भी नहीं बदल सकता। उसकी मुद्रा में तनिक भी परिवर्तन नहीं हो सकता।

किन्तु वह फिर भी अपलक नेत्रों से उसकी ओर निहार रहा था। चाँद के समान सुन्दर मुख पर वह क्रूरता की हँसी। सूर्य के प्रकाश में चित्र के चमकीले बाल चमक रहे थे। उसने चित्र की नीली आँखों में देखा। नहीं, उनमें वह चमक नहीं है। उन पर पाप की छाया पड़ चुकी है। चित्र बदल गया है। वह निरन्तर बदलता रहेगा। उसकी चमक धुँधली पड़ जायगी। उसका गुलाब के फूलों सा सौन्दर्य मर जायगा। वह

जो भी पाप करेगा उसका धब्बा चित्र के सौन्दर्य को कुरूप बना देगा। लेकिन वह पाप नहीं करेगा। वह इस चित्र को सदा ही अपनी आत्मा का प्रतीक मानता रहेगा। वह अपनी कामनाओं पर अंकुश लगा देगा। कुँवर राजेन्द्र से अब वह कभी भेंट नहीं करेगा। उसके विषैले सिद्धान्त अब वह कभी नहीं सुनेगा। वह पार्वती के पास जायगा, उससे क्षमा माँगेगा और विवाह कर लेगा। वह एक बार फिर उससे स्नेह करने का प्रयत्न करेगा। उसने बहुत सहा है। नारी चुपचाप सह लेती है, इसीलिये उसे उसका आभास नहीं मिला। उसने पार्वती के साथ सचमुच ही बहुत बुरा व्यवहार किया। जिस बन्धन को आज वह अपने हाथों से तोड़ आया है, उसे पार्वती के पावों पर गिर कर वह फिर से जोड़ लेगा। पार्वती बहुत महान है। वह उसे अवश्य क्षमा कर देगी।

वह उठा और उसने चित्र पर एक बड़ा सा सफेद पर्दा ढक दिया।

ठंडी बयार तन को पुलकित किये दे रही थी। इस समय वह केवल पार्वती के सम्बन्ध में सोच रहा था। उसका सोया हुआ प्यार एक बार फिर जाग रहा था। वह उन्मादी की भाँति बार-बार पार्वती का नाम लेने लगा।

७

सुरेश अँगड़ाई लेकर उठ बैठा। दिन काफी चढ़ आया था। सुरेश का पुराना नौकर सुखराज कई बार आकर उसे सोते हुए देख गया था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि आज सुरेश इतनी देर तक कैसे सो रहा है।

अन्त में मालिक को उठा देख वह चाय की ट्रे हाथ में लिये उसके सामने आ खड़ा हुआ।

सुरेश ने उसे देख कर आलस्य भरे स्वर में पूछा, 'क्या बजा होगा सुखराज ?'

'ग्यारह बजा है मालिक।'

ओह कितनी देर हो गई। सुरेश उठ खड़ा हुआ। उसने जल्दी से चाय का प्याला लेकर पी लिया और फिर उस दिन की डाक को उलट-पलट कर देखने लगा। उसमें एक पत्र कुँवर राजेन्द्र का था। उसका नौकर यह पत्र आज प्रातः ही वहाँ दे गया था। एक क्षण को सुरेश हिचका, फिर उसने पत्र को एक ओर फेंक दिया और दूसरे पत्र खोलने शुरू किये। उनमें से कोई तो किसी नाटक का कार्यक्रम था और कोई किसी सिनेमा का निमंत्रण। किन्तु आज उसे इन निमंत्रणों में कोई भी रस नहीं आया। उसने सभी पत्रों को खोल कर मेज की दराज में डाल दिया।

लगभग दस मिनट के बाद वह उठा और स्नानागार में चला गया। शीतल जल ने एक क्षण के लिये उसकी थकान और आलस्य को दूर कर दिया। उसे यह भी याद नहीं रहा कि कल रात उसके मन में कितना भयंकर तूफान उठ खड़ा हुआ था। उसे लगा मानों अतीत में कोई दुखद घटना घट गई थी और उसका अब जीवन में कोई मूल्य नहीं है।

किन्तु जैसे ही वह स्नानागार से बाहर निकला उसकी दृष्टि उस सफेद पर्दे पर जा पड़ी। यह पर्दा उसने स्वयं उस चित्र पर टाँग दिया था। वह चकित-सा उसे देखता रह गया।

क्या यह सच हो सकता है? क्या वह चित्र वास्तव में बदल गया है? या यह उसका भ्रम मात्र था। लेकिन चित्र तो कभी नहीं बदल सकता। यह बात सोचना भी मूर्खता है। एक दिन हेमन्त को वह इस चित्र की कहानी सुनाएगा। वह इसे सुन कर मेरी मूर्खता पर अवश्य हँस देगा। लेकिन वह उस बात की उपेक्षा भी कैसे कर सकता है? कल रात की चित्र की मुद्रा उसकी आँखों में स्पष्ट नाचने लगी। वह स्वप्न नहीं था। उसने अपनी आँखों से चित्र के होठों पर क्रूरता का अट्टहास देखा है। क्या यह सच था?

उसने सोचा कि एक बार चित्र से पर्दे को हटा कर उसका निरीक्षण

करे। उसके मन में फिर से संघर्ष उठ खड़ा हुआ। लेकिन उसके जानने से लाभ ही क्या है ? यदि वह सच हुआ तो वह सत्य बड़ा भयंकर होगा। और यदि यह सत्य नहीं है तो उसे उसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। लेकिन यदि किसी दिन हेमन्त आया और उसने अपने चित्र को देखने की इच्छा प्रकट की तो वह उससे क्या कहेगा। हेमन्त अपने चित्र को जरूर देखेगा। यह चित्र उसे अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय है। वह जब-तब आकर इसे देख लिया करता है। नहीं, वह एक बार उस चित्र को देखेगा। वह देखेगा कि उसके भीतर कौन सा रहस्य छुपा हुआ है।

सुरेश उठ खड़ा हुआ। उसने कमरे के दरवाजे भीतर से बन्द कर लिये। इसके बाद उसने जल्दी से चित्र का पर्दा हटा दिया और उसकी आँखों में देखने लगा। हाँ, वह सच था। चित्र की मुद्रा बदल गई थी। यह किसी भी भाँति उसका भ्रम नहीं हो सकता। क्या उस चित्र और उसकी आत्मा में कोई ऐसा सम्बन्ध है जो निरन्तर एक दूसरे पर अपना प्रतिबिम्ब डालता रहता है। क्या यह सम्भव हो सकता है कि उसकी आत्मा के अनुरूप ही यह चित्र अपना रूप बदल लेता है ? वह दुनिया में जो भी करेगा क्या उस सबकी छाप इस चित्र पर अंकित हो जायगी ?

भय से उसका हृदय काँप उठा। वह सामने पड़े हुए सोफे पर बैठ गया और विस्फारित नेत्रों से अपलक चित्र की ओर निहारने लगा।

उसने सोचा कि चाहे जो भी हो, उसके सामने एक बात स्पष्ट हो गई है। इस चित्र ने उसे अनुभव करा दिया है कि उसने पार्वती के साथ बड़ी निर्दयता और अन्याय का व्यवहार किया। अभी समय नहीं गया है। पार्वती अब भी उसकी पत्नी और प्रेयसी बन सकती है। वह अपने को सुधारेगा। वह अपने कलंकित और स्वार्थी प्रेम को सदा के लिये तिलांजली दे देगा। वह पार्वती के पावों पर गिर कर उससे क्षमा माँगेगा और पार्वती उसे क्षमा कर देगी। हेमन्त का यह चित्र जीवन में सदा ही उसका मार्ग-प्रदर्शन करता रहेगा।

संध्या का अँधियारा घिरने लगा। किन्तु सुरेश अब भी दरवाजे बन्द किये सोफे पर विचारमग्न बैठा था। उसके मन में कौन-कौन से विचार उठे और खो गये, यह उसे स्वयं भी नहीं मालूम।

अन्त में वह मेज पर जा बैठा और पार्वती को पत्र लिखने लगा। उसने कई पृष्ठ लिख डाले। उन पृष्ठों में उसने पार्वती से क्षमा माँगी थी। उसने लिखा था कि कल रात वह पागल बन गया था और उस पागलपन के लिये जो भी दण्ड पार्वती उसे देगी वह चुपचाप सिर झुका कर स्वीकार कर लेगा। उसने लिखा कि उसका हृदय वेदना और पश्चात्ताप से फटा जा रहा है।

जब सुरेश ने पत्र समाप्त किया तो उसे लगा जैसे पार्वती ने उसे वास्तव में ही क्षमा कर दिया है।

तभी सुरेश ने द्वार खटखटाने की आवाज सुनी।

कुँवर राजेन्द्र कह रहा था, 'मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ सुरेश। तुरन्त द्वार खोल दो। तुम इस प्रकार सुबह से शाम तक द्वार बंद करके कमरे के अँधेरे कोने में पड़े रहो, इस बात को मैं कभी सहन नहीं कर सकता।'

सुरेश ने सुना, किन्तु वह मौन बैठा रहा। कुँवर राजेन्द्र ने जोर-जोर से दरवाजों पर धक्का देना आरम्भ किया।

सुरेश कुछ देर तक चुपचाप बैठा सोचता रहा। फिर उसने उठ कर चित्र पर वह सफेद पर्दा ढक दिया और द्वार खोल दिये।

राजेन्द्र ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा, 'मुझे उस घटना पर बहुत दुख है सुरेश, लेकिन तुम्हें उसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। किस क्षण में कौन सी घटना घट जाती है, यदि मनुष्य यही सोचता रहे और उसी को लेकर आँसू बहाता रहे तो वह कभी उन्नति नहीं कर सकता। अभी तो आरम्भ है सुरेश, अभी तो तुम्हारे जीवन में जाने कितनी ऐसी ही घटनाएँ घटेंगी।'

'तुम्हारा अभिप्राय पार्वती से है?' सुरेश ने पूछा।

'हाँ, मैं उसी के बारे में कह रहा था,' राजेन्द्र ने गद्देदार सोफे पर बैठते हुए कहा, 'एक दृष्टि से यह बात बड़ी गम्भीर है, किन्तु इसमें तुम्हारा जरा भी दोष नहीं था। क्या तुम नाटक समाप्त होने पर पार्वती से मिले थे?'

'हाँ।'

'मैं जानता था कि तुम उससे अवश्य मिले होगे। तुमने उससे क्या कहा था?'

'मैंने उसके साथ बड़ी कठोरता का व्यवहार किया राजेन्द्र, मैं पशु बन गया था। किन्तु अब सब ठीक हो गया है। जो कुछ हो चुका है उसका मुझे तनिक भी दुःख नहीं है। इस घटना ने मुझे बता दिया है कि मैं क्या हूँ।'

आनन्द से कुँवर राजेन्द्र की आँखें चमकने लगीं। उसने उल्लसित होकर कहा, 'तुमने उस घटना को इस रूप में लिया, यह जान कर मुझे बड़ी खुशी हुई सुरेश। मैं तो सोचता था कि तुम व्यथा से पीड़ित होकर कमरे के किसी अँधेरे कोने में पड़े होगे और अपने उन सुन्दर बालों को धुन रहे होगे।'

'मैंने वह सभी कुछ किया है,' सुरेश ने मुस्करा कर कहा, 'लेकिन अब सब ठीक हो गया है। अन्धकार छिप रहा है और क्षितिज के उस पार एक नया सबेरा सिर उठा रहा है। उस नये सबेरे के नये प्रकाश से मेरी दुनिया आलोकित हो गई है। आज मैं बहुत खुश हूँ। आज मैंने प्रथम बार ही जाना है कि मेरी आत्मा क्या है? अब मैं समझ गया हूँ कि आत्मा की परिभाषा वह नहीं है जो तुमने मुझे बताई थी। आत्मा हमारे जीवन की सबसे पवित्र वस्तु है। तुमने अपने सिद्धान्तों के विष से उसे विषैला बना दिया था। लेकिन अब मैं अच्छा आदमी बनना चाहता हूँ।'

'तुम्हारे विचार तो किसी महान् काव्य का आधार बन सकते हैं

सुरेश । मैं इसके लिए तुम्हें बधाई देता हूँ । लेकिन अब तुम क्या करने जा रहे हो ?'

'सबसे पहले मैं पार्वती से विवाह करूँगा,' सुरेश ने दृढ़ स्वर में कहा ।

'पार्वती से विवाह करोगे !' कुँवर राजेन्द्र ने आश्चर्य से सुरेश की ओर देखते हुए कहा ।

'हाँ, मैं जानता हूँ, तुम क्या कहना चाहते हो । तुम विवाह के सम्बन्ध में कोई भयंकर बात कहोगे । लेकिन मैं अब तुम्हारी कोई भी बात नहीं सुनूँगा । दो दिन पूर्व ही तो मैंने पार्वती को विवाह करने का वचन दिया था । मैं अपने वचन को नहीं तोड़ सकता । मैं उससे अवश्य विवाह करूँगा ।'

'क्या तुम्हें मेरा पत्र नहीं मिला ? मैंने आज ही तो सुबह तुम्हें वह पत्र भेजा है ।'

'हाँ, मुझे याद आया । तुम्हारा आदमी एक पत्र लेकर आया था । किन्तु मैंने उसे अब तक नहीं पढ़ा है । मुझे भय था कि इसमें अवश्य ही कोई ऐसी बात होगी जिसे मैं पसन्द नहीं करूँगा ।'

'तो क्या अभी तक तुम्हें कुछ नहीं मालूम ?'

'तुम कौन सी बात बताना चाहते हो राजेन्द्र ।'

कुँवर राजेन्द्र उठा और सुरेश के पास ही सोफे पर आकर बैठ गया ।

उसने स्नेह से सुरेश के दोनों हाथों को पकड़ कर कहा, 'मेरे पत्र में लिखा था सुरेश, कि पार्वती मर चुकी है ।'

सुरेश के मुख से एक बुभुक्षित चीत्कार सा निकल पड़ा । उसे लगा जैसे उसके हृदय को कोई बेरहमी से कचोट रहा है । उसने अपने हाथों को छुड़ाते हुए अविश्वास के स्वर में कहा, 'नहीं, यह सच नहीं हो सकता । यह एक भयंकर झूठ है । मैं उस पर कभी विश्वास नहीं कर सकता ।'

'लेकिन यह बिल्कुल सच है,' राजेन्द्र ने गम्भीर स्वर में कहा, 'आज सभी पत्रों में वह समाचार प्रकाशित हो चुका है। मैंने तुम्हें लिखा था कि जब तक मैं न आऊँ तुम किसी से भी भेंट न करना। ऐसी बातें मनुष्य को बहुत प्रसिद्ध कर देती हैं। मैं सोचता हूँ कि नाटक का मालिक तुम्हारा नाम नहीं जानता। क्या किसी ने तुम्हें पार्वती के कमरे की ओर जाते देखा था?'

कुछ देर तक सुरेश मौन बैठा रहा। भय और पीड़ा के मारे उसके मुख से शब्द नहीं निकल रहा था। बहुत देर बाद उसने खोये से स्वर में कहा, 'क्या यह सच है राजेन्द्र? क्या पार्वती सचमुच ही ......। ओह, नहीं, मैं उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता। लेकिन मैं सारी घटना सुनना चाहता हूँ। बताओ, यह कैसे हुआ?'

'जब रात को लगभग एक बजे पार्वती अपनी माँ के साथ नाटक से लौट रही थी तो उसने कहा कि वह कोई चीज अपने कमरे में ही भूल आई है। पार्वती चली गई। वे लोग वहीं खड़े बहुत देर तक उसकी प्रतीक्षा करते रहे, किन्तु वह नहीं लौटी। अन्त में उन लोगों ने उसे अपने शृंगार-भवन में मरी पाया। उसने असावधानी से कोई विषैली चीज खा ली थी।'

'यह बहुत भयङ्कर बात है राजेन्द्र,' सुरेश ने चिल्ला कर कहा।

'हाँ, उसकी मृत्यु बहुत दुखद है। किन्तु तुम्हें उससे अपना कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये। वह मुश्किल से सत्रह वर्ष की रही होगी। देखने में वह एक छोटी सी बालिका ही तो लगती थी। और अभिनय तो वह बिल्कुल ही नहीं जानती थी। तुम्हें उसके लिए जरा भी दुखी नहीं होना चाहिये। चलो, आज तुम्हारा भोजन मेरे यहाँ होगा।'

'मैंने ही पार्वती की हत्या की है,' 'सुरेश ने स्वर में भारी व्यथा भर कर कहना आरंभ किया, 'हाँ, मेरे सिवा यह अपराध और किसी का नहीं हो सकता। देखो, उधर गुलाब के फूल आज भी मुस्करा रहे हैं। पक्षी आज भी अपने अलख उद्यान को गुञ्जारित किये हुए हैं और

आज मुझे तुम्हारे साथ भोजन करना है। यह जीवन भी कितना विचित्र है, कितना नाटकीय। यदि मैंने यह बात किसी पुस्तक में पढ़ी होती तो मेरे नयनों से अश्रुधारा बह निकलती, किन्तु यह घटना मेरे अपने ही जीवन में घटित हुई है और मेरे मन की आग से आँसू भी भीतर ही सूख गये हैं। यह पत्र देखते हो राजेन्द्र। जीवन में मैंने यह पहला ही प्रेम-पत्र लिखा था। कुछ क्षण पहले मैं सोच भी नहीं सकता था कि मेरा यह प्रथम प्रेम पत्र पाने से पहले ही पार्वती सदा के लिये इस संसार से चली जायगी। काश, मृतकों में भी सुनने और अनुभव करने की शक्ति होती। काश, आज पार्वती मेरी भावनाओं को सुन सकती। एक दिन पार्वती मुझे प्राणों से भी अधिक प्रिय थी। अब लगता है जैसे उस बात को युग बीत गये हैं। मैं एक सुन्दर स्वप्न देख रहा था, तभी वह भयंकर रात आई। पार्वती ने इतना भद्दा अभिनय करके मेरा दिल तोड़ दिया। उसने मुझे स्पष्टीकरण दिया। वह बहुत करुण थी। लेकिन मैं कठोर बना रहा। उस दिन सचमुच ही मैंने उसे बहुत छिछली समझा। तभी एक भयंकर घटना घटी और मैं भयभीत हो उठा। मैं तुम्हें नहीं बताऊँगा कि वह घटना क्या थी, किन्तु वह बहुत भयंकर थी। मैंने निर्णय किया कि मैं पार्वती से क्षमा माँगूँगा। मुझे लगा जैसे मैंने कोई बड़ा अपराध किया है और आज जब मैं अपने पापों से मुक्त होने जा रहा था तो पार्वती सदा के लिये चली गई। मुझे बताओ राजेन्द्र, मैं क्या करूँ। तुम नहीं जानते आज मेरे मन में कैसी उथल-पुथल मची हुई है। पार्वती ने मेरे ही कारण आत्महत्या की है। उसे अपनी हत्या करने का कोई अधिकार नहीं था।'

कुँवर राजेन्द्र ने जेब से सिगरेट निकाली। उसने उसे सुलगाते हुए कुछ गम्भीर स्वर में कहा, 'एक स्त्री किसी पुरुष को तभी सुधार सकती है सुरेश, जब वह उसे इतना निराश कर दे कि उसे अपने जीवन के प्रति कोई आकर्षण न रह जाय। यदि तुम इस लड़की से विवाह करते तो तुम नष्ट हो जाते। तुमने पार्वती के साथ दया का व्यवहार किया और

कोई मनुष्य उसी पर दया करता है जिसकी वह परवाह नहीं करता। यह अच्छा हुआ कि पार्वती को शीघ्र ही पता चल गया कि तुम उससे स्नेह नहीं करते।'

सुरेश राजेन्द्र के पास आकर बैठ गया। उसने राजेन्द्र के पाँव पर हाथ रख कर कहा, 'मुझे बताओ राजेन्द्र, क्या मैं हृदयहीन हूँ? एक विनाशकारी भयंकर घटना घट गई। मैंने पार्वती से एक खेल खेला और वह मेरे ही कारण सदा के लिए इस संसार से चली गई। इसका उत्तर-दायित्व मुझ पर ही तो है, किन्तु फिर भी मेरे मन में व्यथा नहीं है। आज मेरा हृदय पीड़ा से फट जाना चाहिये था, लेकिन मुझे कुछ भी नहीं हुआ। मैं नहीं जानता ऐसा क्यों हो रहा है। क्या मैं सचमुच ही हृदयहीन हूँ राजेन्द्र?'

कुँवर राजेन्द्र के अधरों पर मुस्कान की रेखा खिंच आई। उसने कहा, 'नहीं, तुमने तो पिछले दिनों अनेक मूर्खता के काम किये हैं। फिर तुम हृदयहीन कैसे हो सकते हो। हृदयहीन व्यक्ति कभी मूर्खता के काम नहीं करता।'

सुरेश अधीर हो उठा। उसने कहा, 'आज मैं ऐसी बातें सुनना नहीं चाहता, लेकिन मैं खुश हूँ कि तुम मुझे हृदयहीन नहीं समझते। हाँ, मैं जानता हूँ कि मैं हृदयहीन नहीं हूँ। किन्तु मैं स्वीकार करता हूँ कि इस घटना का मुझ पर उतना प्रभाव नहीं पड़ा, जितना कि पड़ना चाहिये था। मुझे लग रहा है जैसे किसी महान नाटक का अन्त हो गया। इससे अधिक मैं कुछ सोच ही नहीं सकता। इस नाटक का मेरे सामने इससे अधिक कुछ महत्व ही नहीं है।'

'यह बड़ी दिलचस्प बात है,' कुँवर राजेन्द्र ने कहा, 'कभी-कभी ऐसा होता है कि हमारे वास्तविक जीवन में अनेक भयङ्कर घटनाएँ घट जाती हैं किन्तु वे इतनी भद्दी और कुरूप होती हैं कि उनका हमारे जीवन पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। वे हम पर इतना ही प्रभाव डालती हैं जितनी अश्लीलता। तब उन घटनाओं का छिछला और नग्न रूप हमारे

सामने आ खड़ा होता है। और हम उनके प्रति विद्रोह करने लगते हैं। कल ऐसी ही एक छोटी सी घटना घट गई। पार्वती ने तुम्हारा स्नेह न मिलने के कारण आत्महत्या कर ली। काश, मेरे लिये भी कोई आत्महत्या कर लेता, किन्तु उसका अनुभव मुझे नहीं है, जिन लोगों ने मुझसे स्नेह किया वे बहुत समय तक जीते रहे। मैंने उनसे घृणा की किन्तु फिर भी उन्होंने आत्महत्या नहीं की। मेरी घृणा के साथ ही साथ वे भी मुझसे घृणा करने लगे और इसी प्रकार जीवन की पुस्तक के अनेक अध्याय आरम्भ होकर समाप्त हो गये। एक बार मैंने एक लड़की से प्रेम किया। मैं सोचता था कि इस प्रेम का कहीं अंत नहीं है। लेकिन एक दिन आया और वह प्रेम का बन्धन सदा के लिये टूट गया। इसका कारण मुझे ठीक से याद नहीं। उस बात की एक धुँधली-सी स्मृति हृदय में रह गई है। शायद उसने कहा था कि मैं तुम्हारे लिये दुनिया भर की खुशियों का बलिदान कर सकती हूँ। यह क्षण बड़ा गम्भीर होता है। ऐसे समय मनुष्य का मन प्यार की अमरता के भय से भर जाता है। लेकिन क्या तुम एक बात पर विश्वास करोगे। एक सप्ताह पूर्व मैं इसी लड़की के साथ एक रेस्ट्रॉं में बैठा भोजन कर रहा था। वह अतीत की स्मृतियों को फिर से दोहराने लगी। यही नहीं, उसने भविष्य की योजनाएँ बनाना भी प्रारम्भ किया। मैंने उसके प्रति अपने स्नेह को सदा के लिये समाप्त कर दिया था, किन्तु उसने फिर से उसे जीवित कर दिया और मुझे विश्वास दिला दिया कि मैंने ही उसका जीवन नष्ट किया है। वह छक कर भोजन कर रही थी, इसलिये मुझे अधिक चिंता नहीं हुई। मैं आनन्द से उसकी बातें सुनता रहा। अतीत की घटनाओं का आकर्षण यही है कि वे घटनाएँ अतीत में घटी हैं। किन्तु लड़कियाँ यह जान ही नहीं पातीं कि पटाक्षेप कब हो जाता है। वे तो चाहती हैं कि उनका नाटक कभी समाप्त न हो। यदि स्त्रियों को मनमानी करने दिया जाय तो सुख की प्रत्येक कहानी का बड़ा ही दुखद अन्त होगा और प्रत्येक दुर्घटना एक धोखा सिद्ध होगी। तुम मुझसे अधिक भाग्यशाली

हो। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि मेरी परिचित किसी भी लड़की ने मेरे लिये वह नहीं किया जो पार्वती ने तुम्हारे लिये किया है। लेकिन अभी मैंने तुम्हें सबसे महत्वपूर्ण बात तो बताई ही नहीं।'

'वह कौन सी बात है,' सुरेश ने उत्सुकता से पूछा।

'वह केवल सन्तोष करने की बात है। आज की स्त्रियों से पार्वती कितनी भिन्न थी। मैं खुश हूँ सुरेश कि मैं ऐसे युग में पैदा हुआ हूँ जिसमें ऐसी आश्चर्यजनक घटनाएँ घटती हैं। ऐसी घटनाएँ हमें विश्वास दिला देती हैं कि हमारे अभिनय के पीछे भी अवश्य ही कोई सत्य छिपा रहता है।'

'लेकिन मैंने उसके साथ बड़ा कठोर व्यवहार किया। मैं उसे कभी नहीं भुला सकता।'

'स्त्रियाँ कठोरता और निष्ठुरता पसन्द करती हैं सुरेश। हम उन्हें स्वाधीन करना चाहते हैं किन्तु वे दासी बन कर अपने स्वामी के इशारों पर नाचती रहना चाहती हैं। वे चाहती हैं कि कोई उन पर अपना अधिकार जमाए रहे। तुमने पार्वती के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया। उस दिन तुमने कहा था न कि पार्वती सारे विश्व के प्रेम की प्रतीक है।'

सुरेश ने दोनों हाथों से अपना मुँह छिपा लिया। उसने अवरुद्ध कण्ठ से कहा, 'अब पार्वती कभी नहीं आएगी राजेन्द्र। अब वह कभी नहीं आएगी।'

'हाँ, अब वह कभी वापस नहीं आएगी। उसने अपना नाटक समाप्त कर दिया है। पार्वती वास्तव में कभी भी जीवित नहीं थी, इसलिये वह कभी मर भी नहीं सकती। तुम्हारे लिये वह एक स्वप्न के सिवा और कुछ भी नहीं थी। एक ऐसा स्वप्न जो बेहोशी की अवस्था में मन को थोड़ा सा सुख पहुँचा कर सदा के लिये समाप्त हो जाता है। वास्तविक जीवन में उसका कोई भी महत्व नहीं। तुम्हें पार्वती के लिये अपने

अमूल्य आँसू नहीं बहाने चाहिये। पार्वती का महत्व कभी भी इन आँसुओं से अधिक नहीं हो सकता।'

सुरेश ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप बैठा शून्य नेत्रों से छत की ओर निहारता रहा। संध्या का अधिकांश अँधियारा कमरे में भरने लगा था।

कुछ देर बाद सुरेश ने एक गहरी साँस खींच कर कहा, 'तुमने मुझे बताया है राजेन्द्र कि वास्तव में मैं क्या हूँ। इससे मुझे शान्ति मिली है। मैं तुम्हारी बातों की सत्यता पर विश्वास करता हूँ, किन्तु मेरे मन के भीतर जाने कैसी भय की भावना जम कर बैठ गई है। मैं नहीं जानता कि वह भय कैसा है। तुम मुझे कितना अधिक पहचानते हो। जो कुछ बीत चुका है हम उसके सम्बन्ध में अब बात नहीं करेंगे। जीवन का वह बड़ा अच्छा अनुभव रहा। मैं नहीं जानता कि मेरे जीवन में फिर कभी ऐसे मनोहर क्षण आ सकेंगे या नहीं।'

'तुम ऐसा क्यों सोचते हो सुरेश, तुम्हारे सामने जीवन की रङ्गीनियाँ बिखरी पड़ी हैं। प्रकृति से तुम्हें सौन्दर्य का वरदान मिला है। दुनिया में ऐसा कोई भी काम नहीं, जो तुम नहीं कर सकते। अपनी शक्ति को पहचानो, तुम सब कुछ करने में समर्थ हो।'

'लेकिन कल्पना करो राजेन्द्र, यदि एक दिन मेरी कमर झुक गई, मैं बूढ़ा हो गया और मेरे गालों पर झुर्रियाँ पड़ गईं, तो क्या होगा?'

राजेन्द्र ने कुछ गम्भीर होकर कहा, 'तब! तब तुम्हें अपनी प्रत्येक विजय के लिये भयङ्कर सङ्घर्ष करना पड़ेगा। तब पराजय कभी भी तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेगी। नहीं, तुम्हें अपना सौन्दर्य बनाए रखना होगा। आज के युग में सौन्दर्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती। तुम भी उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते। लेकिन अब चलो, बहुत देर हो गई है। क्लब का समय हो आया है।' कुँवर राजेन्द्र ने खड़े होते हुये कहा।

किन्तु सुरेश वहीं सोफे पर बैठा रहा। उसने धीमे स्वर में कहा, 'आज तुमने मुझे जो प्रकाश दिखाया है, उसके लिये मैं जीवन भर

तुम्हारा आभार मानूँगा। निस्सन्देह तुम्हीं मेरे सबसे अच्छे मित्र हो। तुम जितना मुझे जानते हो उतना और कोई नहीं जानता।'

'यह तो हमारी मित्रता का प्रारम्भ है,' राजेन्द्र ने सुरेश का हाथ दबाते हुये कहा, 'अच्छा अब मैं चलता हूँ और वचन दो कि आधे घटे से अधिक तुम भी यहाँ इस तरह बैठे नहीं रहोगे।'

कुँवर राजेन्द्र कमरे से बाहर हो गया। जैसे ही उसने कमरे से बाहर पैर रखा सुरेश ने भीतर से कमरे के द्वार बन्द कर लिये और चित्र पर से वह सफेद पर्दा हटा दिया। नहीं, चित्र में और कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। उसके मुख पर वह क्रूरता का भाव अब भी अंकित था। सुरेश को आश्चर्य लगा कि पार्वती की मृत्यु की खबर उस चित्र को उससे पहले ही कैसे लग गई। क्या यह चित्र उसके जीवन की प्रत्येक घटना के प्रति सतर्क है। जिस समय पार्वती ने विष पिया होगा उसी समय इस चित्र का चेहरा विकृत हो गया होगा। तो क्या उसके प्रत्येक पाप की छाया इस चित्र पर पड़ेगी और उसे विकृत करती चली जायगी।

एक बार पार्वती फिर से सजीव होकर उसकी आँखों के सामने नाचने लगी। उसका प्रेम भी कितना विचित्र था। प्रेम के कारण ही उसने प्राण त्यागे। उसने मञ्च पर अनेक बार मृत्यु का अभिनय किया है। किन्तु एक दिन मृत्यु ने सचमुच ही उस पर अपना अधिकार जमा लिया और उससे पार्वती को सदा के लिये छीन लिया। क्या विष पीते समय उसने उसे श्राप नहीं दिया होगा? नहीं, वह उससे प्रेम करती थी। प्रेम में स्वार्थ की भावना नहीं होती। उसने अपने जीवन का बलिदान करके अपने प्रेम को सार्थक कर दिया। लेकिन अब वह उन बातों की याद नहीं करेगा। एक दिन पार्वती उसे जीवन से भी अधिक प्रिय थी और आज, वह सदा के लिए चली गई।

पार्वती की स्मृति मात्र से ही सुरेश की आँखों से अविरल अश्रुधारा बह चली। उसकी आँखों में पार्वती की प्रत्येक छवि विभिन्न रूप में नाचने लगी।

सुरेश ने एक बार फिर चित्र की ओर देखा। वह अब भी उसके पापों का भार सँभाले हुये था।

चित्र को देख कर सुरेश के मन में जाने कैसी दुख की भावना जाग्रत होने लगी। एक दिन था जब वह स्वयं ही इस चित्र के सौन्दर्य को देखकर मुग्ध हो जाता था। सन्ध्या होती और रजनी संसार पर अपनी काली चादर बिछा देती, किन्तु सुरेश मन्त्र-मुग्ध सा बैठा उस चित्र को निहारता रहता। उसे अपने सौन्दर्य को देख कर स्वयं ही आश्चर्य होने लगता। किन्तु आज उसकी भावनाओं के साथ ही साथ वह चित्र कितना बदल गया है। क्या यह चित्र निरन्तर बदलता जायगा? क्या एक दिन यह इतना कुरूप और भयंकर हो जायगा कि उसे कहीं कमरे में छिपाने की आवश्यकता पड़ेगी? ओह, तब क्या होगा? तब क्या होगा?

किन्तु यदि चित्र को बदलना है तो वह अवश्य बदलेगा। उसके लिये उसे चिन्ता नहीं करनी चाहिए। यह चित्र सुरेश का सबसे अच्छा दर्पण है। वह सदा ही उसे देख कर अपना मार्ग बनाता रहेगा। इस चित्र के सहारे ही वह अपनी आत्मा को पहचान सकेगा। लेकिन वह अपने सौन्दर्य को कभी भी नष्ट नहीं होने देगा। यह चित्र चाहे कितना ही कुरूप हो जाय, लेकिन वह अपना बालकपन का कौमार्य बनाये रहेगा। वह अपने यौवन-उपवन के एक भी पुष्प को नहीं मुरझाने देगा। सौन्दर्य के देवता की भाँति वह सदा ही सशक्त और सुन्दर बना रहेगा। यह चित्र चाहे कितना ही बदल जाय, किन्तु वह कभी नहीं बदल सकता। क्या उसके लिये यही काफी नहीं है?

सुरेश एक बार हँसा और उसने चित्र पर फिर वही सफेद पर्दा डाल दिया। एक घंटे बाद ही वह क्लब में बैठा कुँवर राजेन्द्र से हँस-हँस कर बातें कर रहा था।

८

दूसरे दिन सुरेश उठ कर चायपान ही कर रहा था, तभी हेमन्त ने उसके कमरे में प्रवेश किया।

सुरेश के सामने वाली कुर्सी पर बैठ कर हेमन्त ने गम्भीर स्वर में कहा, 'मैं कल रात भी तुम्हारे पास आया था किन्तु मुझे पता चला कि तुम क्लब गये हुये हो। सुन कर मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने सोचा कि यह असम्भव है। तुम क्लब का नाम लेकर अवश्य ही कहीं और गये होगे। मैं सारी रात बड़ी भयंकर कल्पनाएँ करता रहा। मुझे भय था कि कहीं एक दुर्घटना के बाद दूसरी दुर्घटना न घट जाय। लेकिन मुझे खुशी है कि मेरी आशंका निर्मूल निकली। मैंने कल शाम को वह दुखद समाचार पढ़ा। मैं तुरन्त ही तुम्हारे पास आया, लेकिन तुम नहीं मिले। मैं तुम्हें नहीं बता सकता कि इस घटना से मुझे कितना दुख और निराशा हुई है। मैं जानता हूँ तुमने कितना सहा होगा। लेकिन तुम कहाँ थे? क्या तुम पार्वती की माँ के पास गये थे? मैं सोचता था कि मैं तुमसे वहीं भेंट करूँ। पार्वती की माँ इस समय कितनी दुखी होगी। वह इस सम्बन्ध में क्या कहती है?'

'पार्वती की माँ के सम्बन्ध में मैं कुछ भी कैसे जान सकता हूँ हेमन्त,' सुरेश ने चाय का प्याला मुँह से लगाते हुये कहा, 'मैं कल रात क्लब गया था। तुम वहीं आ सकते थे। कल क्लब में कुसुम ने अपना गाना सुनाया। सचमुच ही वह बहुत अच्छा गाती है। लेकिन तुम इस समय उन भयंकर विषयों पर बातें क्यों कर रहे हो। यदि कोई किसी घटना के सम्बन्ध में बातें नहीं करता तो हमें यह मान लेना चाहिये

कि वह घटना कभी घटी ही नहीं। राजेन्द्र का कथन है कि हमारी चर्चा और उत्सुकता निर्जीव घटनाओं को सजीव कर देती है। पार्वती अपनी माँ की इकलौती पुत्री नहीं थी। उसके एक लड़का भी है। शायद वह किसी जहाज पर नौकरी करता है। लेकिन तुम अपने बारे में बताओ। आजकल कौनसा चित्र बना रहे हो?'

'कल तुम क्लब गये थे!' हेमन्त ने आश्चर्य से सुरेश की ओर देखते हुये बहुत ही धीमे स्वर में कहा। लगा मानों उसके मन की व्यथा साकार होकर उसके स्वर में फूट पड़ी हो। ऐसी अनहोनी बात उसके जीवन में दूसरी नहीं थी। कुछ क्षण रुक कर उसने फिर कहा, 'जब श्मशान में पार्वती की चिता धू-धू करके जल रही थी तब तुम क्लब में बैठे मदिरापान कर रहे थे और कुसुम के संगीत का आनन्द ले रहे थे। तुम ऐसे कब से हो गये सुरेश? तुम्हारा हृदय ऐसा पत्थर कब से बन गया?'

'मैं इन बातों को सुनना नहीं चाहता हेमन्त,' सुरेश ने चिल्ला कर कहा, 'जो बीत चुका है उसके लिये मैं कभी भी अपने अमूल्य आँसू नहीं बहाऊँगा। अतीत की उस छोटी सी घटना का आज मेरे लिये कोई भी महत्व नहीं है।'

'तुम कल की उस बात को अतीत कहते हो? सचमुच ही तुम कितने बदल गये हो।'

'छिछले व्यक्ति ही किसी छोटी सी भावना को अपने मन में वर्षों तक समेटे रहते हैं हेमन्त। सशक्त व्यक्ति व्यथा को उतनी ही जल्दी समाप्त कर देता है जितनी जल्दी वह सुखों का आविष्कार करता है। मैं अपनी भावनाओं का दास नहीं बनना चाहता, मैं उन पर अधिकार जमाना चाहता हूँ।'

'यह बड़ी भयंकर बात है। किसी ने आज तुम्हें पूर्णतया बदल डाला है। तुम आज भी उसी प्रकार सुन्दर हो, लेकिन उस समय तुम कितने सरल और भोले थे। विश्व की विषमताओं की छाया तुम्हें छू भी

नहीं गई थी। लेकिन आज मैं नहीं जानता कि तुम्हें क्या हो गया है। आज तुम ऐसी बातें कर रहे हो! मानों तुम्हारे हृदय में दया-मया कुछ भी नहीं है। मैं जानता हूँ यह सब राजेन्द्र का प्रभाव है।'

सुरेश के कपोलों पर लज्जा की लाली दौड़ गई। वह उठ कर खिड़की के सामने जा खड़ा हुआ और बहुत देर तक हरे वृक्षों के पत्तों पर अठखेलियाँ करती हुई सूर्य की सुनहरी किरणों को देखता रहा। बहुत देर बाद उसने कहा, 'मैं तुमसे अधिक राजेन्द्र का आभारी हूँ हेमन्त। राजेन्द्र ने जीवन में मुझे बहुत दिया है, किन्तु तुमने तो मुझे केवल घमण्ड करना ही सिखाया है।'

'हाँ उसकी सजा मुझे मिल चुकी है या भविष्य में किसी दिन अवश्य मिल जायगी।'

'मैं नहीं जानता कि तुम्हारी बात का क्या अभिप्राय है। मैं यह भी नहीं जानता कि तुम क्या चाहते हो। बताओ, तुम मुझसे कौन-सी आशा लिये बैठे हो?'

'मैं चाहता हूँ कि तुम एक बार फिर वही सुरेश बन जाओ, जिसका एक दिन मैंने चित्र बनाया था,' हेमन्त ने बड़े ही उदास स्वर में कहा।

सुरेश खिड़की से हट कर हेमन्त के पास जा खड़ा हुआ, उसने स्नेह से उसके कन्धे पर हाथ रख कर कहा, 'तुमने बहुत देर कर दी हेमन्त। कल जब मैंने सुना था कि पार्वती ने अपनी हत्या कर ली है तो……।'

'हत्या कर ली है? हे भगवान, क्या यह बात सच है,' हेमन्त ने विस्फारित नेत्रों से सुरेश की ओर देखते हुए पूछा।

'हाँ उसने भूल से विष नहीं पिया है। उसने आत्महत्या की है!'

हेमन्त ने दोनों हाथों से अपना मुँह छिपा लिया। उसने सिसकियाँ लेते हुए कहा, 'ओह, यह कितना भयंकर है।'

'नहीं, इसमें कोई भी भयंकर बात नहीं है। यह आज के युग की सबसे बड़ी रोमाञ्चकारी घटना है। पार्वती अपने जीवन में सदा ही नायिका

रही है। उस रात उसने इतना भद्दा अभिनय इसलिये किया क्योंकि वह प्रेम की वास्तविकता को समझ गई थी। और जब उसने प्रेम की अवास्तविकता को जाना तब वह उसी प्रकार इस संसार से सदा के लिए चली गई जिस प्रकार एक दिन 'शीरी' गई होगी। किन्तु तुम्हें यह नहीं सोचना चाहिये कि मेरे हृदय पर मेरे अतीत—भविष्य और वर्तमान को विचलित कर देने वाली व्यथा जम कर नहीं बैठी है। मैंने बहुत सहा है। यदि तुम कल शाम को आते को तुम देखते कि मेरी पलकें अविरल अश्रुधारा को रोकने में कितनी असमर्थ रही हैं। एक बार मेरा मन दुनिया भर की पीड़ा से भरा और फिर सब समाप्त हो गया। मैं उस भावुकता को बार-बार दुहराना नहीं चाहता। तुम मुझसे सहानुभूति प्रगट करने यहाँ आये हेमन्त, मैं इसे तुम्हारी कृपा के सिवा और क्या कह सकता हूँ। लेकिन जब तुमने देखा कि उस घटना का मेरे मन पर अधिक प्रभाव नहीं है तो तुम क्रोधित हो उठे। यह तुम्हारी बड़ी अनुचित बात है। यदि तुम वास्तव में ही मुझे ढाढ़स बँधाना चाहते हो तो मुझे अतीत की घटनाओं की उपेक्षा करना सिखाओ। मैं सौन्दर्य का उपासक हूँ हेमन्त। मैं उस परमात्मा की ऐसी सुन्दर कृतियों से प्रेम करता हूँ जिन्हें मैं छू सकूँ, जिन पर मैं अपना अधिकार जमा सकूँ। मैं जानता हूँ तुम मेरी बातों पर आश्चर्य कर रहे हो। क्या तुम्हारे लिए यह समझना बहुत कठिन है कि आज मेरा यौवन पूर्ण रूप से विकसित हो चुका है। जब तुम मुझे जानते थे तब मैं स्कूल का एक साधारण छात्र था। अब मैं युवक बन चुका हूँ। आज मेरे मन में नई वासना, नए विचार और नए आदर्श जाग्रत हो रहे हैं। मैं बदल गया हूँ, लेकिन तुम सदा ही मेरे मित्र बने रहना। मैं राजेन्द्र को बहुत पसन्द करता हूँ। लेकिन मैं जानता हूँ कि तुम उससे कहीं अधिक अच्छे हो। तुम शक्तिशाली नहीं हो। तुम जीवन से बहुत डरते हो, किन्तु तुम फिर भी राजेन्द्र से अच्छे हो। एक दिन था जब तुम्हारे साथ रहने में मुझे अतीव सुख का अनुभव होता था। इसीलिए कहता हूँ कि आज मुझसे झगड़ा मत करो। आज मैं जो

कुछ बन गया हूँ, जीवन में कभी भी उससे भिन्न नहीं बन सकता। बस इससे अधिक कहने को मेरे पास कुछ भी नहीं है।'

हेमन्त के मन पर सुरेश की बातों का विचित्र प्रभाव पड़ा। उसने सोचा कि वह अब उससे पार्वती के सम्बन्ध में बातें नहीं करेगा। हो सकता है कि यह सुरेश का क्षणिक आवेश हो। किन्तु चाहे जो भी हो उसमें बहुत-सी ऐसी बातें हैं जो बहुत अच्छी हैं, बहुत महान् हैं।

अन्त में हेमन्त ने अधरों पर फीकी-सी हँसी लाकर कहा, 'अच्छा, आज के बाद मैं तुमसे उस भयंकर घटना की चर्चा नहीं करूँगा। मुझे आशा है इस झमेले में तुम्हारा नाम नहीं लिया जायगा। आज शाम को इस घटना की छानबीन होगी। क्या तुम्हें भी पूछताछ के लिए बुलाया गया है?'

'लेकिन वे लोग तो मेरा नाम भी नहीं जानते।'

'पार्वती तो तुम्हारा नाम अवश्य जानती होगी?'

'नहीं वह मेरा असली नाम नहीं जानती थी। वह मुझे 'राजा' कहा करती थी। इससे मुझे बड़ा सुख मिलता था। क्या तुम मेरे लिए पार्वती का एक चित्र बना सकते हो हेमन्त। मैं चाहता हूँ कि मेरा और पार्वती का सम्बन्ध कुछ चुम्बनों और टूटे हुए हृदय के दयार्द्र शब्दों की स्मृति तक ही सीमित न रह जाय। मैं उसका एक सुन्दर चित्र बनवाना चाहता हूँ।'

'यदि तुम्हें उससे सुख मिले तो मैं पार्वती का चित्र बनाने का अवश्य प्रयत्न करूँगा। किन्तु तुम्हें मेरे सामने आकर बैठना होगा। जब तक तुम नहीं होगे मैं कोई भी अच्छा चित्र नहीं बना सकता।'

'नहीं, तुम्हारी चित्रशाला में मैं अब तुम्हारे सामने कभी नहीं बैठ सकता। यह असम्भव है।'

हेमन्त स्तब्ध रह गया! उसने आश्चर्य से कहा, 'यह तुम क्या कह रहे हो। मैंने तुम्हारा जो चित्र बनाया था क्यों वह तुम्हें पसन्द नहीं आया? बताओ वह चित्र कहाँ है? तुमने उस पर वह पर्दा क्यों टाँग

दिया है। मुझे एक बार इस चित्र को देखने दो। यह मेरी सर्वोत्तम कलाकृति है। मैंने दिन-रात जाग कर इसकी उपासना की है। इस चित्र पर से यह भद्दा पर्दा हटा दो सुरेश। शायद तुम्हारे नौकर ने इसका महत्व न समझ कर ही इस पर पर्दा डाल दिया है।'

'नहीं, चित्र पर यह पर्दा मैंने ही डाला है। चित्र पर बहुत अधिक प्रकाश पड़ रहा था। मैंने सोचा कि कहीं वह खराब न हो जाय।'

'इस स्थान पर तेज प्रकाश कैसे आ सकता है सुरेश। मैं एक बार इस चित्र को देखना चाहता हूँ।' हेमन्त उठा और स्वयं ही चित्र के पर्दे को उठाने लगा।

सुरेश का मन एक बार भय से काँप उठा। उसके अधरों से जाने कैसा बुभुक्षित चीत्कार-सा निकला और उसने दौड़ कर हेमन्त का हाथ पकड़ लिया। उसने बहुत ही करुण स्वर में कहा, 'तुम उसे नहीं देख सकते हेमन्त। मैं नहीं चाहता कि तुम उसे देखो।'

हेमन्त हँस दिया। उसने कहा, 'क्या मैं अपने बनाए हुए चित्र को भी नहीं देख सकता? बताओ, तुम ऐसा क्यों चाहते हो?'

'यदि तुम उस चित्र को देखने का प्रयत्न करोगे तो मैं विश्वास से कहता हूँ कि मैं जीवन में तुमसे कभी नहीं बोलूँगा। इस सम्बन्ध में मैं बहुत गम्भीर हूँ। मैं कोई स्पष्टीकरण देना नहीं चाहता। मुझे आशा है कि तुम भी मुझसे स्पष्टीकरण की माँग नहीं करोगे। यदि तुमने इस पर्दे को छुआ तो हमारे सम्बन्ध सदा के लिए टूट जायँगे।'

हेमन्त अवाक रह गया। वह विस्फारित नेत्रों से सुरेश की ओर देखने लगा। उसने सुरेश का यह रूप पहले कभी नहीं देखा था। आज इसे क्या हो गया है। वह सचमुच ही बहुत भयभीत है। उसका रंग पीला पड़ गया है और उसकी आँखों की चमक गायब हो गई।

कुछ देर बाद हेमन्त ने बहुत ही धीमे स्वर में पूछा, 'यदि तुम नहीं चाहते तो मैं इस चित्र को अब नहीं देखूँगा। किन्तु मैं वास्तविक बात

जानना चाहता हूँ। यह बड़ी विचित्र बात है कि मैं अपनी सर्वोत्तम कलाकृति को भी नहीं देख सकता। मैं इसे इस वर्ष प्रदर्शनी में भेजना चाहता हूँ किन्तु यदि तुम आज नहीं चाहते तो मैं फिर किसी दिन इसे देख लूँगा।'

'क्या तुम इस चित्र को प्रदर्शनी में भेजोगे ?' सुरेश ने भयभीत स्वर में कहा। क्या उसका रहस्य दुनिया पर प्रगट हो जायगा। नहीं, यह असम्भव है। वह अपने प्राण दे देगा लेकिन अपने उस रहस्य को दुनिया के सामने प्रगट नहीं होने देगा।'

'मुझे आशा है कि तुम प्रदर्शनी में भेजने के लिये यह चित्र मुझे अवश्य दे दोगे। मैं एक मास बाद तुम्हें चित्र वापस कर दूँगा। इतने के लिये तुम अवश्य ही इसे अपने से दूर कर सकते हो। और यदि तुम इसे सदा ही पर्दे के पीछे रखते हो तो तुम इसकी अधिक परवाह भी नहीं कर सकते।'

सुरेश की कुछ भी समझ में नहीं आया। उसने एक बार अपना हाथ माथे पर फेरा। उसका माथा पसीनों से भरा हुआ था। उसने कहा, 'तुमने एक मास पूर्व ही मुझसे कहा था कि तुम इस चित्र को किसी प्रदर्शनी में नहीं भेजोगे। अब तुमने अपना विचार क्यों बदल दिया है ? क्या तुम उस दिन की वह बात इतनी जल्दी भूल गये। उस दिन तुमने विश्वास के साथ कहा था कि दुनिया की कोई शक्ति तुम्हें यह चित्र प्रदर्शनी में भेजने के लिये बाध्य नहीं कर सकती। तुमने राजेन्द्र से भी यही बात कही थी। मैं नहीं जानता कि उसका क्या कारण था।' सुरेश एक क्षण रुका। फिर उसने हेमन्त के कुछ निकट आकर कहा, 'हम दोनों का ही अपना एक रहस्य है हेमन्त। तुम मुझे अपना रहस्य बताओ और मैं तुम्हें अपने मन की बात बताऊँगा। बताओ उस समय तुमने इस चित्र को प्रदर्शनी में भेजने का विरोध क्यों किया था ?'

हेमन्त एक क्षण तक चुपचाप विचारमग्न बैठा रहा। फिर उसने बहुत ही धीमे स्वर में कहा, 'मैं जानता हूँ कि वह बात सुन कर मेरे

प्रति तुम्हारा स्नेह कम हो जायगा। तुम मुझे स्वार्थी समझोगे और मुझ पर हँसोगे। मैं इस बात को कभी सहन नहीं कर सकता। यदि तुम चाहते हो कि मैं उस चित्र को कभी न देखूँ तो मैं उसे खुशी-खुशी स्वीकार कर लूँगा। यदि तुम चाहते हो कि मेरी सर्वोत्तम कृति संसार की आँखों से छिपी रहे तो मैं उसे कभी प्रदर्शित नहीं करूँगा। मुझे किसी भी प्रकार की, प्रसिद्धि से तुम्हारी मित्रता अधिक पसन्द है।'

'नहीं हेमन्त, आज मैं तुमसे वह बात अवश्य पूछूँगा। मुझे वह बात पूछने का अधिकार है।' सुरेश की भय की भावना लुप्त हो गई थी और अब वह संयत में बातें कर रहा था।

हेमन्त ने कुछ बेचैनी से कहा, 'कोई बात बताने से पहले मैं तुमसे एक प्रश्न करना चाहता हूँ। बताओ क्या इस चित्र में तुम्हें कोई विचित्र बात दिखाई दी है। कोई ऐसी बात जो प्रथम बार उसे देखने पर तुम्हें नहीं दिखाई दी थी।

सुरेश के मुख से एक भी शब्द नहीं निकला। उसने कुर्सी के हत्थों को मजबूती से पकड़ लिया और विस्फारित नेत्रों से हेमन्त की ओर देखने लगा।

'मैं जानता हूँ, तुमने उसमें अवश्य ही कोई विचित्र बात देखी है। हेमन्त ने कहना आरम्भ किया, 'जिस दिन से हमारा परिचय हुआ सुरेश, उसी दिन से तुम्हारे व्यक्तित्व ने मुझ पर अपना प्रभाव डालना प्रारम्भ कर दिया। मेरी आत्मा, मस्तिष्क और हृदय, सभी पर तुम्हारा अधिकार हो गया। जिससे तुमने स्नेह किया, मैं उसी से ईर्ष्या करने लगा। मैं नहीं जानता कि ऐसा क्यों हुआ। मुझ से दूर रहते हुये भी तुम सदा मेरी कला में उपस्थित रहे। किन्तु मैंने अपनी यह आसक्ति तुम पर कभी प्रगट न होने दी। मैं तुम्हें बताता तो शायद तुम उसे समझ भी पाते। मैं स्वयं भी उसे कभी नहीं समझा। फिर एक दिन आया जब मैंने तुम्हारा चित्र बनाने का निर्णय किया। किन्तु जैसे-जैसे मैंने तुम्हारा चित्र बनाया, मुझे लगा मानों मेरी आत्मा के रहस्य उस पर

अंकित हो रहे हैं। मैं भयभीत हो उठा। मुझे लगा जैसे मेरे जीवन का सारा रहस्य विश्व पर प्रगट हो जायगा ! तभी मैंने निर्णय किया कि मैं इस चित्र को कभी भी प्रदर्शनी में नहीं भेजूँगा। उस समय तुम क्रोधित हो उठे थे। तुमने यह अनुभव नहीं किया था कि वास्तव में मेरा अभि-प्राय क्या है। किन्तु कुछ दिन बाद जब यह चित्र पूरा हो गया और मैंने इसे तुम्हारे पास भेज दिया तो मुझे लगा मानों वह सभी कुछ मेरा भ्रम था। इस चित्र और मेरी आत्मा में कहीं भी कोई सम्बन्ध नहीं था। मैंने सोचा कि यह चित्र मेरी सर्वोत्तम कलाकृति होते हुये भी मेरे अन्य चित्रों से भिन्न नहीं है। और इसीलिये जब प्रदर्शनी से मेरे चित्रों की माँग आई तो मैंने उसे वहाँ भेजना स्वीकार कर लिया। मैं जानता हूँ कि यही प्रदर्शनी का प्रमुख चित्र होगा। उस समय मैंने सोचा भी नहीं था कि तुम उस चित्र को देने से इन्कार कर दोगे। लेकिन मुझे अब लगता है कि तुम्हारी बात ही ठीक है। यह चित्र प्रदर्शनी में नहीं भेजा जा सकता।'

सुरेश के अधरों से एक गहरी साँस निकल गई। संकट समाप्त हो चुका था। उसके होठों पर हँसी नाचने लगी।

हेमन्त ने कुछ देर रुक कर कहा, 'किन्तु मैं एक बार उस चित्र को देखना चाहता हूँ। क्या तुम अब भी वह चित्र मुझे नहीं दिखाओगे ?'

सुरेश ने सिर हिला कर कहा, 'नहीं, वह चित्र में तुम्हें नहीं दिखा सकता।'

'अच्छा जाने दो। मैं उसे फिर कभी देख लूँगा।'

'नहीं तुम उसे कभी नहीं देख सकते।'

'शायद तुम्ही ठीक कहते हो, मेरे जीवन में तुम्हीं एक ऐसे व्यक्ति आये जिसने मेरी कला को प्रभावित किया। मैं नहीं जानता कि आज मैंने तुमसे जो कुछ कहा है उसका मुझे क्या मूल्य चुकाना पड़ेगा।'

सुरेश ने स्वर में स्नेह भर कर कहा, 'तुमने मुझसे ऐसी कौन सी महत्वपूर्ण बात कह डाली है हेमन्त। तुमने तो केवल अपने मनोभावों को ही मेरे सामने प्रगट किया है। तुम्हारे इन मनोभावों में तो मेरी प्रशंसा तक नहीं है।'

'ये शब्द मैंने तुम्हारी प्रशंसा के लिये नहीं कहे थे। लेकिन मैंने तुम्हें अपने मन की बात बताई है। अब तुम्हें भी अपना रहस्य मुझे बताना होगा। क्या तुमने उस चित्र में कोई नई चीज देखी है?'

'नहीं, उसमें कोई नई चीज हो भी क्या सकती है। चित्र तो कभी भी बदल नहीं सकता।' सुरेश एक बार जोर से हँस पड़ा। उसने कहा, 'कुँवर राजेन्द्र का जीवन असम्भव बातों को सम्भव बनाने में ही व्यतीत हुआ है। उस जीवन के प्रति मेरा आकर्षण निरन्तर बढ़ रहा है। मैं भी वैसा ही जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ। किन्तु मैं वचन देता हूँ कि जीवन में यदि किसी समय भी मुझ पर कोई विपत्ति आई तो मैं राजेन्द्र के पास नहीं जाऊँगा। उस समय मैं तुम्हारा सहारा लेने ही दौड़ पड़ूँगा।'

हेमन्त ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। कुछ देर बाद उसने कहा, 'मैं तुम्हारा दूसरा चित्र बनाना चाहता हूँ। क्या तुम मेरी चित्रशाला में आओगे?'

'नहीं, यह असम्भव है। मैं जानता हूँ इससे तुम्हें दुख होगा, किन्तु इसके मेरे अपने कारण हैं। वह भयंकर बात मैं जीवन में कभी भी नहीं भुला सकता। मैं सोचता हूँ कि मुझे अब कभी भी तुम्हारा 'माडल' नहीं बनना चाहिये। इस चित्र के साथ एक बड़ी भयंकर घटना घटी है। इसका एक अपना जीवन है। अच्छा, आज शाम को मैं तुम्हारे यहाँ आऊँगा और तुम्हारे साथ बैठ कर चाय पिऊँगा।'

हेमन्त के अधरों से एक गहरी उसास निकल गई। उसने खड़े होते हुये कहा, 'मुझे दुख है कि मैं अब कभी अपनी सर्वोत्तम कलाकृति को नहीं देख सकता। लेकिन इसके सिवा और चारा भी क्या है।'

उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही हेमन्त कमरे से बाहर हो गया। उसके बाहर जाते ही सुरेश के होठों पर विजय की मुस्कान दौड़ गई। आज हेमन्त उस चित्र के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जान सका। हेमन्त कितना सरल है। सुरेश ने कितनी आसानी से उसका रहस्य जान लिया किन्तु वह सुरेश के उस भयंकर रहस्य की झलक भी नहीं पा सका।

किन्तु अब वह इस चित्र को यहाँ नहीं रहने देगा। वह उसे अवश्य ही छिपा देगा। यदि हेमन्त यहाँ फिर आया और उसने चित्र को देखने की इच्छा प्रगट की ! नहीं, वह अब एक क्षण भी इस चित्र को यहाँ नहीं रहने देगा। उसने नौकर को बुलाने के लिये घंटी बजाई।

६

जब नौकर ने कमरे में प्रवेश किया तो सुरेश उसे अपलक नेत्रों से देखता रह गया। उसे कुछ सूझा ही नहीं कि वह उससे क्या कहे। उसने सोचा कि क्या इस नौकर ने चित्र को साफ करते समय उसे देख लिया है। यदि ऐसा हुआ होगा तो उसने चित्र की बदली हुई मुद्रा को भी अवश्य ही देख लिया होगा। उसने एक बार गौर से नौकर की ओर देखा। वह शांत भाव से सुरेश की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहा था।

सुरेश ने सिगरेट जलाई और शीशे के सामने खड़ा होकर अपना चेहरा देखने लगा। नहीं, उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ था।

उसने उसी ओर देखते हुये बहुत धीमे स्वर में कहा, 'स्टोर के पीछे वाला छोटा कमरा बहुत दिनों से बन्द पड़ा है। मैं उसे देखना चाहता हूँ।'

'लेकिन वह तो वर्षों से खोला नहीं गया है मालिक। अब तो उसमें इञ्च-इञ्च भर रेत जम गया होगा। आप तनिक ठहरिये। मैं उसे

साफ किये देता हूँ, फिर आप उसे देख लीजियेगा,' नौकर ने स्वामिभक्ति दिखाते हुये कहा।

'नहीं, मैं उसे साफ कराना नहीं चाहता। मैं केवल उसकी चाबी चाहता हूँ।'

नौकर अपनी कोठरी में गया और तालियों का एक गुच्छा लेकर सुरेश के सामने रख दिया। उसने बहुत ही विनीत स्वर में कहा, 'जब से माँ जी परलोक सिधारीं हजूर, तब से वह कमरा खोला ही नहीं गया। अब तो उसमें चूहों और मकड़ियों ने अपना अड्डा जमा लिया होगा। उस बात को पाँच वर्ष से भी अधिक हो गये हैं।'

सुरेश ने चाबियों का गुच्छा उठा कर देखा। उसने कहा, 'मैं उस कमरे को फिर से आबाद करना नहीं चाहता। मैं उसे केवल एक बार देखना चाहता हूँ। अब तुम जा सकते हो।'

नौकर चला गया तो सुरेश ने भीतर से द्वार बन्द कर लिया। उसने एक बार कमरे के चारों ओर देखा। सामने ही दरवाजे पर बढ़िया साटन का एक विशाल परदा लटक रहा था। वह उसी परदे के पास जा खड़ा हुआ। उसे हाथ से छूकर देखने लगा। यह परदा उसके बाबा ने बहुत अधिक मूल्य देकर खरीदा था।

हाँ, यही ठीक रहेगा। वह इसी परदे में चित्र को लपेट देगा ताकि वह जीवन में कभी भी किसी को अपनी कुरूपता न दिखा सके। एक दिन होगा जब यह चित्र अत्यन्त भयंकर हो उठेगा। जिस प्रकार कीड़े शव को नष्ट कर डालते हैं उसी प्रकार मेरे पाप इस चित्र को नष्ट कर डालेंगे। वे इसके सौन्दर्य का अन्त कर देंगे। और इसके वैभव को खा जायँगे। मेरे पाप इसके अङ्गों को विकृत कर देंगे और इसे घृणित बना देंगे। किन्तु यह चित्र फिर भी इसी प्रकार मेरे पापों को दुनिया के सामने प्रदर्शित करता रहेगा। यह चित्र मेरे पापों को सदा जीवित रखेगा।

सुरेश का हृदय एक बार भय से काँप उठा। उसने दरवाजे पर से वह बड़ा सा चमकीला परदा उतार लिया और उसे हाथ में लेकर एक बार फिर चित्र के सामने जा खड़ा हुआ। क्या चित्र की मुद्रा पहले से अधिक विकृत हो गई है। नहीं, उसमें और कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। उसके सुनहरे बाल, नीली आँखें और गुलाब की पंखुरियों की भाँति गुलाबी होंठ, सब कुछ वैसे ही थे। केवल चित्र की मुद्रा बदल गई थी। उस पर क्रूरता का भाव अंकित था। यह क्रूरता कितनी भयंकर है। उसकी अपनी आत्मा चित्र से झाँक कर उससे न्याय की माँग कर रही थी।

एक बार सुरेश के चेहरे पर व्यथा की जाने कैसी भावना सिमट आई। उसने एक गहरी साँस ली और वह मूल्यवान पर्दा चित्र पर डाल दिया।

तभी बाहर से दरवाजा खटखटाने की आवाज आई। सुरेश ने जल्दी से जाकर द्वार खोल दिया। बाहर उसका नौकर हाथ में चाय की ट्रे लिये खड़ा था। उसने कहा, 'आपका चाय का समय हो गया है मालिक।'

सुरेश को इस समय नौकर का वहाँ आना अच्छा नहीं लगा। वह नहीं चाहता था कि घर या बाहर का कोई भी आदमी यह जान सके कि वह चित्र कहाँ ले जाया गया है। उसने कहा, 'नहीं, आज मैं चाय नहीं पियूँगा, तुम चाहो तो एक घंटे के लिये कहीं जा सकते हो। मुझे इस समय कोई काम नहीं है।'

नौकर चला गया तो सुरेश बहुत देर तक वहीं खड़ा जाने क्या सोचता रहा। उसके मन में तूफान उठ रहा था। सुरेश ने चाबियों का गुच्छा उठाया और स्टोर के पीछे वाले उस कमरे के सामने जा खड़ा हुआ। उसमें एक बड़ा सा पुराना ताला लगा था। वर्षों से न खुलने के कारण उसमें स्थान-स्थान पर जंग लग गया था। सुरेश ने बड़ी कठिनाई के साथ ताला खोला और उस कमरे के भीतर झाँकने लगा। कमरे की दीवारों, छत और फर्श पर गर्द की मोटी तह जम गई थी। स्थान-स्थान पर मकड़ियों ने अपने जाले बना लिये थे और बहुत सा टूटा-फूटा सामान

इधर-उधर बिखरा पड़ा था। हाँ, इसी कमरे में उसे अपने जीवन के उस भयंकर रहस्य को छिपाना है। अब उसे दुनिया का कोई भी आदमी कभी नहीं देख सकता।

उसने लगभग पाँच वर्षों से इस कमरे में प्रवेश नहीं किया था। जब वह छोटा था तो यह कमरा उसी के खेलने के लिये बनवाया गया था। जब वह कुछ बड़ा हुआ तो यही उसका पढ़ने का कमरा बना दिया गया। इसी में बैठ कर वह स्कूल का काम किया करता था। यह कमरा काफी बड़ा था और उसकी माँ को बहुत पसन्द था।

एक बार अतीत की स्मृति उसकी आँखों में चलचित्र की भाँति नाचने लगी। उसने एक बार कमरे के चारों ओर देखा। उसे लगा मानों इसी कमरे की भाँति उसका सारा शैशव बीत गया है: उदास और एकाकी। उसके अतीत के उस जीवन में कहीं भी कोई अश्लीलता नहीं है। कहीं भी कोई दाग-धब्बा नहीं है। इसका वह पवित्र और निश्कलंक बचपन इसी कमरे में व्यतीत हुआ है और इसी में आज वह अपने पापों का प्रतीक वह चित्र छिपाने जा रहा है।

किन्तु वह उसे कहीं और छिपा भी तो नहीं सकता। इतने बड़े मकान में कहीं ऐसा स्थान ही नहीं है। इस कमरे की चाबियाँ उसी के पास हैं। इसलिये इसे कभी कोई नहीं खोल सकेगा। विशाल पर्दे के पीछे छिपा चित्र का चेहरा क्रूर और विकृत होता रहेगा, लेकिन उसे कोई नहीं देख सकेगा। वह स्वयं भी उसे नहीं देखेगा। वह अपनी आत्मा का पतन अपनी आँखों से नहीं देख सकता। वह अपना यौवन नष्ट नहीं होने देगा। बस उसके लिये यही काफी है। यह सम्भव हो सकता है कि भविष्य में उसकी आदतें न सुधरें किन्तु इस बात का भी तो कोई कारण नहीं है कि उसका जीवन निरन्तर घृणित ही होता जायगा। हो सकता है कि उसके जीवन में कोई चमत्कारी घटना घटे और उसे सभी पापों से मुक्त कर दे। यह भी हो सकता है कि किसी दिन चित्र के चेहरे पर से

क्रूरता का वह भाव सदा के लिये अदृश्य हो जाय और वह हेमन्त की सर्वोत्तम कलाकृति विश्व के सामने प्रदर्शित कर सके।

लेकिन नहीं, शायद यह कभी सम्भव नहीं होगा। प्रति क्षण और प्रति पल यह चित्र बूढ़ा होता जायगा। हो सकता है कि किसी दिन उसके चेहरे से पापों की छाया लुप्त हो जाय किन्तु वह उसकी वृद्धावस्था को छिपाने में कभी भी समर्थ नहीं हो सकता। इसके गाल पोपले और कठोर हो जायँगे। चमकीली नीली आँखों के चारों ओर काले गढ़े बन कर चित्र को भयंकर बना देंगे। उसके चमकीले बाल अपनी चमक खो देंगे और उसके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ जायँगी। उसकी कमर झुक जायगी और वह बिल्कुल अपने दादा की तरह हो जायगा, जो उसे बचपन में स्कूल तक छोड़ने जाया करते थे।

नहीं, वह उस चित्र को जरूर छिपा देगा। वह उसे इस कमरे के बाहर कभी नहीं रख सकता। इसी कमरे में उसका शैशव बीता है और इसी में वह क्रूर और भयंकर होकर मर जायगा।

सुरेश ने जाकर अपने बङ्गले का मुख्य द्वार बन्द कर दिया। इस समय उसके सिवा वहाँ और कोई नहीं था। मालिक की आज्ञा पाकर नौकर बाहर चला गया था। सुरेश एक बार फिर चित्र के सामने जा खड़ा हुआ और उसे बहुत देर तक देखता रहा। एक बार उसने उस चित्र को उठा कर देखा। वह बहुत भारी था। फिर वह बड़ी कठिनाई से उसे उठा कर स्टोर के पीछे वाले उस कमरे में ले गया। उसे रखने के लिये उसने वहाँ पहले ही स्थान बना लिया था। चित्र को वहाँ रख कर उसने वह बड़ा सा मूल्यवान परदा उसके ऊपर डाल दिया और तुरन्त ही कमरे से बाहर निकल कर उसके द्वार बन्द कर दिये। उसने चाबियों का गुच्छा अपनी जेब में रखते हुये सन्तोष की साँस ली। हाँ, अब वह सुरक्षित है। उस भयंकर बात को अब कोई नहीं जान सकता। अभी तक इस चित्र को किसी ने नहीं देखा है और भविष्य में भी उसके सिवा और कोई उसके पापों को नहीं देखेगा।

जब चित्र को कमरे में बंद करके सुरेश लौटा तो पाँच बज चुके थे। मुख्य द्वार पर सुरेश का नौकर दरवाजा खुलने की प्रतीक्षा कर रहा था।

सुरेश ने सोचा कि ड्राइङ्ग-रूम में चित्र न देख कर नौकर अवश्य ही उसके सम्बन्ध में उससे पूछेगा। यह भी हो सकता है कि किसी रात्रि को जब सुरेश छिप कर स्टोर के पीछे वाले उस कमरे में जा रहा होगा तो नौकर उसे देख ले और उस पर सन्देह करे। यह बड़ी भयंकर बात होगी। वह जानता है कि बहुत से नौकर अपने मालिकों का कोई गुप्त रहस्य जान लेते हैं और फिर उनसे रुपया ऐंठते हैं।

लेकिन अब चारा भी क्या है। सुरेश ने एक ठंडी साँस ली और द्वार खोल दिये।

नौकर के कमरे में प्रवेश करते ही सुरेश ने अपने स्वाभाविक स्वर में आज्ञा दी। 'मुझे अभी एक प्याला चाय चाहिये। इसके बाद मुझे क्लब जाना है।'

कमरे से बाहर जाते हुये नौकर को सुरेश ने एक बार गौर से देखा। उसके मुख पर कोई विशेष भाव नहीं था। नहीं, उसे कोई सन्देह नहीं हुआ है। सुरेश आराम से पाँव फैला कर सोफे पर बैठ गया।

जब चाय पीकर सुरेश क्लब पहुँचा तो सात बज चुके थे। वहाँ कुँवर राजेन्द्र अकेला बैठा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

सुरेश ने उससे क्षमा माँगते हुए कहा, 'मुझे दुख है कि मेरे काम में व्यस्त रहने के कारण आज तुम्हें यहाँ इतनी देर तक अकेला बैठना पड़ा।'

कुँवर राजेन्द्र ने हँस कर उत्तर दिया, 'मैं जानता हूँ, युवक और सुन्दर लड़के सदा ही काम में व्यस्त रहते हैं। किन्तु क्या तुमने पुलिस की रिपोर्ट सुन ली है?'

'किस सम्बन्ध में?'

'पार्वती की मृत्यु के सम्बन्ध में।'

'उन्होंने क्या लिखा है?'

'उन्होंने लिखा है कि असावधानी से कोई विषैली चीज खा लेने पर ही पार्वती की मृत्यु हुई है। रिपोर्ट में पार्वती की माँ से सहानुभूति प्रगट की गई है।' राजेन्द्र ने स्नेह से सुरेश के कन्धे पर हाथ रखा और कनखियों से उसकी ओर देख कर मुस्करा दिया।

कुछ देर बाद राजेन्द्र ने फिर कहा, 'इस महान नाटक के नायक होने पर भी तुम्हें कोई नहीं जान सका। यह तुम्हारी पहली और सबसे बड़ी सफलता है।'

सुरेश ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। उसने मदिरा का गिलास उठा कर होठों से लगा लिया।

१०

दिन बीतते गये और सुरेश तथा राजेन्द्र की मित्रता प्रगाढ़ से प्रगाढ़तर होती गई। धीरे-धीरे एक वर्ष बीत गया। इस एक वर्ष की लंबी अवधि में सुरेश के जीवन में कितना आया और कितना गया, इसका कोई शुमार नहीं।

आज उसका जीवन पर्वतीय झरने की भाँति स्वच्छन्द गति से बह रहा है। उसका आदि नहीं है, अन्त नहीं है, बाधा नहीं है, विराम नहीं है। उसका अतीत-भविष्य सभी वर्तमान में एकीकार हो गया है। जीवन की रङ्गीनियाँ उसके सामने बिखरी पड़ी हैं। वह जिसे चाहता चुन कर अङ्गीकार कर लेता और जिसे चाहता ठुकरा देता। उसने जीवन में कितना पाया और कितना त्याग दिया इसका कोई भी हिसाब-किताब इसके पास नहीं है।

उसमें आज भी यौवन और सौन्दर्य की शक्ति है। उसका अपरूप यौवन और उसका सौन्दर्य, जिसने एक दिन हेमन्त और उसी जैसे अनेक लोगों का मन मोह लिया था, आज भी उसे छोड़ कर नहीं गया है।

आज नगर भर में सुरेश की चर्चा है। लोग उसके पापों की बात सुनते हैं और क्लबों तथा सभा-सोसाइटियों में उसकी चर्चा करने लगते हैं। किन्तु जब वे सुरेश को देखते हैं तो उन्हें लगता है मानों उसके चरित्र में कोई भी काला धब्बा नहीं है। वह निष्कलंक और गङ्गा के जल की तरह पवित्र है। उसके पापों पर उन्हें विश्वास ही नहीं होता, मानों उसका व्यक्तित्व दुनिया की अश्लीलता से अछूता रह गया है।

किन्तु फिर भी सभ्य समाज में उसकी प्रतिष्ठा कम होने लगी। जब वह क्लब के कमरे में प्रवेश करता तो उसे देख कर सभी लोग अचानक चुप हो जाते। अपनी निजी और सामाजिक बातें उसके सामने कहने में उन्हें संकोच होने लगता। सुरेश के चेहरे की पवित्रता के पीछे उन्हें अश्लीलता का कुछ ऐसा भाव दिखाई देता, जिससे उनके मन में सुरेश के प्रति उपेक्षा भर जाती।

किन्तु सुरेश को देख कर उन्हें अपना अतीत याद हो जाता। वे सोचते कि विश्व के पापों की छाया पड़ने से पहले वे भी उसी की भाँति पवित्र और निष्कलंक थे। उन्हें सुरेश को देख कर आश्चर्य होने लगता। ऐसी विषैली और कुरूप दुनिया में रह कर भी सुरेश के चरित्र पर पापों की कोई भी छाया दृष्टिगोचर नहीं होती। तब वे जो कुछ सुनते, एक क्षण के लिये उन्हें उस पर विश्वास ही नहीं होता।

अब सुरेश का जीवन एक नई दिशा की ओर बह रहा था। वह कई दिनों तक अपने मकान से अनुपस्थित रहता। उसकी अनुपस्थिति उसके मित्रों तथा परिचितों के सामने एक रहस्य ही बनी रहती। कोई नहीं जान पाता कि वह कहाँ गया है और कैसा जीवन व्यतीत कर रहा है।

कई दिन तक घर से दूर रहने के बाद जब सुरेश लौटता तो सबसे पहले वह स्टोर के पीछे वाले उसी कमरे में जाता जहाँ हेमन्त का बनाया हुआ उसका वह चित्र रखा था। इस कमरे की चाबियाँ वह सदा अपने ही पास रखता था। इसके लिये उसे किसी पर भी विश्वास नहीं था।

ताला खोल कर वह कमरे के भीतर चला जाता और अन्दर से दरवाजा बंद कर लेता।

इसके बाद वह उस चित्र के सामने जा खड़ा होता और उसे घंटों निहारता रहता। वह दर्पण में अपना मुख देखता और चित्र के उस वृद्ध और कुरूप चेहरे पर आँखें गड़ा देता। वह आज भी कितना सुन्दर है, कितना आकर्षक है। पापों की वह कुरूप छाया उसके तन को कहीं से भी छू नहीं गई है। किन्तु वह चित्र······। उसका मन भय से काँप उठता। किन्तु तभी एक चमत्कारी घटना घटती। वह अपने सौन्दर्य और यौवन पर स्वयं ही मुग्ध हो जाता। उसके मन में दुनिया का अधिक से अधिक आनन्द लूटने की भावना जाग्रत होने लगती। अपनी आत्मा का अधिक से अधिक पतन करने की कल्पना मात्र से ही उसे सुख मिलने लगता। वह चित्र के उस कुरूप और झुर्रीदार चेहरे को देखता और उसके जीवन में अमानुषिक आनन्द की एक विचित्र सी लहर दौड़ने लगती। वह सोचता कि चित्र के उस कुरूप चेहरे पर कौन सा भाव अधिक भयंकर है। उसके पापों का या उसकी वृद्धावस्था का भाव। वह अपने सफेद और सुन्दर हाथों का चित्र के उन मोटे और काले हाथों से तुलना करता और हँस देता। तब हेमन्त की सर्वोत्तम कलाकृति के प्रति उसे कोई भी आकर्षण शेष नहीं रह जाता। नहीं, उसकी समता में वह चित्र कुछ भी नहीं है। वह उसकी कभी भी बराबरी नहीं कर सकता। हेमन्त की कला निर्जीव और झूठी है। और तब वह उस मित्र की कुरूपता पर मन ही मन हँसने लगता।

कभी-कभी रात्रि के समय वह अपने सुगन्धित शयन कक्ष में पड़ा हुआ या नदी के किनारे वाले उस कुख्यात वेश्यालय में बैठा हुआ अपनी आत्मा के पतन की बात सोचता तो उसे स्वयं अपने पर दया आने लगती। एक बार उसका मन व्यथा से भर जाता। किन्तु जीवन के उसके ये क्षण बड़े महत्वपूर्ण होते।

एक दिन हेमन्त की चित्रशाला के सामने बैठे-बैठे राजेन्द्र ने उसके

भीतर जीवन के प्रति जो उत्सुकता जाग्रत की थी, वह निरन्तर बढ़ती जा रही थी। जितना भी अधिक वह जीवन के प्रति जानता, उतना ही और जानने की उसकी आकांक्षा बढ़ जाती। उसकी भूख दिन-दिन बढ़ती जा रही थी। वह नाम और भेष बदल कर वेश्यालयों में जाता और रात-रात भर वहाँ पड़ा रहता।

किन्तु फिर भी सुरेश समाज के प्रति लापरवाह नहीं था। मास में कम से कम दो या तीन बार वह अपने विशाल बँगले में अपने मित्रों को आमंत्रित करता। उस दिन संगीत सभा जमती और नगर के सारे प्रमुख संगीतज्ञ उसमें भाग लेते। कुँवर राजेन्द्र की सहायता से वह अपने सुन्दरता से सजे हुए कमरे में प्रीतिभोज का आयोजन करता और अपने मित्रों के मनोरंजन के लिये दिल खोल कर धन लुटाता। ऐसे अवसरों पर सारा प्रबन्ध कुँवर राजेन्द्रसिंह की/विशेष देख-रेख में होता। सभी चीजें कलापूर्ण ढंग से सजाई जातीं और उनके मित्रों की वह सारी रात मनोरंजन और आनन्द से कटती।

अपने युवक मित्रों में सुरेश कला-पारखी के रूप में प्रसिद्ध था। वे हर बात में उसकी नकल करते। वे उसी के बँगले की तरह अपने बँगलों को सजाते और उसी के वस्त्रों की भाँति वस्त्र पहनते। सभ्य युवक समाज में कोई भी नया फैशन सुरेश से ही आरम्भ होता।

सुरेश के मन में जीवन के सीमित आदर्शों और सिद्धान्तों के प्रति श्रद्धा नहीं थी। वह एक ऐसा दर्शन बनाना चाहता था जो तर्क पर आधारित हो।

वह ऐसे सिद्धान्तों पर चलना चाहता था जो समय और इच्छा के अनुसार बदला जा सकें। उसे लगता मानों ऐसे ही विश्व का निर्माण करना उसका वास्तविक लक्ष्य है और इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिये वह किसी नई रोमांचकारी घटना की खोज में ऐसे काम करने लगता जो उसकी प्रकृति के बिलकुल विपरीत होती। एक बार इस घटना के प्रभाव में वह अपने को बिल्कुल शराबोर कर देता और जब उसकी आत्मा की

सुकता शान्त हो जाती तो वह उसे इस प्रकार भुला देता मानों उसके जीवन में वह घटना कभी घटी ही नहीं है।

किन्तु किसी सिद्धान्त विशेष को स्वीकार करके अपने आत्मिक विकास पर प्रतिबन्ध लगाने की प्रकृति सुरेश की नहीं है। वह इस सराय को जिसमें उसने कभी एक रात काटी है, अपना घर समझ लेने की भूल कभी नहीं करता।

वह जीवन के सभी सिद्धान्तों से जीवन को अधिक महत्व देता है। वह जानता है कि आत्मा की भाँति ज्ञानेन्द्रियाँ भी अपना रहस्य दुनिया के सामने प्रगट कर देती हैं। और इसीलिये उसने ज्ञानेन्द्रियों से सम्बन्धित सभी चीजों का अध्ययन प्रारम्भ किया।

उसने अपने बँगले में सौन्दर्य, ऐश्वर्य और वैभव की सभी चीजें एकत्रित की। उन्हें देख कर उसका मन गर्व से भर उठता। वह अपने विशाल बँगले में अकेला बैठा उन वस्तुओं के सौन्दर्य को देखता और मन ही मन मुस्करा देता। उसकी भूख निरन्तर बढ़ती गई और वह अधिक से अधिक वैभव बटोरने लग गया।

वह अपनी इन्हीं मूल्यवान और ऐश्वर्य की वस्तुओं में दिन-रात लगा रहता। उन्हीं के बीच वह अपने को खो देना चाहता था। वह चाहता कि इन्हीं के बीच रह कर वह उस भयंकर चित्र को सदा के लिये भुला दे। उस चित्र की याद उसके मन में जाने कैसा भय भर देती। तब उसका हृदय काँप उठता। उसे स्वयं अपने से घृणा होने लगती। ऐसी अनोखी और घृणित बात उसके जीवन में दूसरी नहीं थी। उस एकाकी और बंद कमरे में जिसमें उसका पवित्र शैशव बीता है, उसने अपने ही हाथों से वह भयंकर चित्र टाँग दिया है जो हर क्षण बदल कर उसके पतन का संकेत करता रहता है। वह जानता है, वह कितना गिरा है। किन्तु वह विश्व के सामने अपने पापों के प्रगट करना नहीं चाहता। उसे चित्र से भय लगता है।

कभी वह सोचता है कि उस चित्र को जीवन में कभी नहीं देखेगा। वह अपना अतीत, भविष्य और वर्तमान भुला कर आनन्द के अथाह सागर में तैरना चाहता है। वह चाहता है कि जीवन की सभी रंगीनियों पर उसका एकाधिकार हो। दुनिया भर का वैभव और ऐश्वर्य उसके चरणों का चुम्बन करे। विश्व भर के लोग उससे ईर्ष्या करें।

और तब वह चित्र को न देखने का निर्णय करता है। कई सप्ताह तक वह उस कमरे में नहीं जाता। तब उसका मन हल्का हो जाता है और वह कई दिन और कई रातों तक वेश्यालयों में पड़ा रहता है। लेकिन एक दिन जब वह उन वेश्यालयों से लौटता है तो उसकी उत्सुकता अनायास ही जाग उठती है और वह उस चित्र के सामने जा बैठता है। तब उस चित्र के विकृत मुख को देख कर उसे स्वयं से घृणा होने लगती है। तब उसे अपने पापों का अनुभव होता है और वह मन ही मन पश्चाताप करने लगता है। किन्तु कभी-कभी उस चित्र को देख कर उसके भीतर अभिमान भी जाग उठता है। वह सोचता है कि वह दुनिया का सबसे सुखी मनुष्य है। आज सारा ऐश्वर्य और वैभव उसके पावों पर लौटता है। वह चित्र पर अपने पापों की छाया देखता है तो उस पर मन ही मन मुस्करा देता है। उसके पापों का भार वह चित्र वहन कर रहा है, इससे अधिक सुख की उसके लिये कौन-सी बात हो सकती है।

उसे चित्र के प्रति जाने कैसा मोह हो जाता है और वह जवन से कभी भी उससे विलग होना नहीं चाहता।

कभी वह सोचता है कि यदि उसकी अनुपस्थिति में उसका कोई मित्र आया और उसने इस चित्र को देख लिया ? तब क्या होगा ? यद्यपि चित्र का चेहरा काफो विकृत हो गया है। किन्तु फिर भी सुरेश के चेहरे और उस चित्र में काफी समानता है। लेकिन यदि किसी दिन किसी मित्र ने उसे देख भी लिया तो वह उससे क्या समझ सकता है। वह अवश्य ही उसे चित्रकार की अयोग्यता कह कह हँस देगा। सुरेश ने स्वयं वह चित्र नहीं बनाया। वह कितना विकृत और घृणित है इसका

दोष उस पर कदापि नहीं आ सकता। और यदि किसी दिन किसी मित्र के सामने उसने सुरेश के रहस्यों को प्रगट भी कर दिया तो क्या वे उस पर विश्वास करेंगे ?

किन्तु फिर भी भय से उसकी मुक्ति न होती। कभी-कभी जब वह नगर के धनिक-युवक युवतियों के साथ दूर कहीं पिकनिक पर गया होता तो उसे लगता मानों कोई उस कमरे को खोल कर चित्र के सामने बैठा उसे देख रहा है। तब वह अचानक ही घबरा जाता और सब कुछ छोड़-छोड़ कर घर की ओर दौड़ पड़ता। घर आकर वह देखता कि कमरे के द्वार उसी प्रकार बन्द हैं और चित्र उसी स्थान पर रखा हुआ है। वह सोचता कि यदि यह चित्र किसी दिन सचमुच ही चोरी चला गया तो ? इसकी कल्पना मात्र से ही उसका रक्त ठंडा पड़ जाता और वह भय से काँपने लगता। तब विश्व के सामने उसका रहस्य प्रगट हो जायगा और तब……तब क्या होगा ?

धीरे-धीरे दिन बीतते गये। अब सुरेश छब्बीसवाँ वर्ष पार कर रहा था। सभ्य समाज अब उसे और भी उपेक्षा की दृष्टि से देखने लगा था। कई दिन तक रहस्यमय ढँग से अनुपस्थित रहने के बाद जब वह लौटता तो लोग उसकी ओर इशारे करके आपस में कानाफूसी करने लगते। वे उसकी ओर सन्देह की दृष्टि से देखते और लगता मानों वह उसके गुप्त रहस्यों को जानने का प्रयत्न कर रहे हों।

सुरेश लोगों की इन बातों की कोई चिन्ता नहीं करता। वह अब भी उनसे निसंकोच होकर बातें करता। उसकी सुन्दरता और उसकी निर्मल हँसी स्वयं ही इस बात का सबूत दे देती कि वह निष्कलंक और पवित्र है।

किन्तु फिर भी जाने क्यों उसके घनिष्ट मित्र उससे दूर-दूर रहने का प्रयत्न करते। सभ्य समाज की वे युवतियाँ जो एक दिन उसके लिये सब कुछ न्योछावर करने को तैयार रहती थीं, अब उसे देखते ही लज्जा से सिर झुका लेतीं किन्तु सुरेश धनिक था। उसके पास अपार धन-

सम्पत्ति भरी पड़ी थी। वह मित्रों के मनोरंजन के लिये जी खोल कर धन लुटाता था। उसकी यही धन-सम्पत्ति ढाल की तरह उसके सामने खड़ी थी। उसके सामने कोई भी उसकी निन्दा नहीं कर पाता। हमारा सभ्य समाज धनिकों के पापों पर कभी विश्वास नहीं करता। वह उसे शौक या क्षणिक आवेश कह कर टाल देता है। उसके मत में धन का महत्व चरित्र से अधिक है।

सुरेश इस बात को जानता है। इससे उसे और अधिक प्रेरणा मिलती है। वह समाज की कानाफूसी की चिन्ता न करके रंगरेलियों में और अधिक व्यस्त हो जाता है। वह अपने सौन्दर्य, अपने यौवन और अपने वैभव-ऐश्वर्य का पूरा लाभ उठाना चाहता है और इसी प्रकार उसका जीवन किस ओर बहा जा रहा है वह स्वयं भी उससे अनभिज्ञ है।

११

उस दिन सुरेश की अड़तीसवीं वर्षगाँठ थी। रात के लगभग ग्यारह बजे होंगे। सुरेश कुँवर राजेन्द्र के यहाँ से भोजन करके लौट रहा था। उस रात बहुत सर्दी थी और सड़कों पर इतना कुहरा छाया हुआ था कि हाथ को हाथ दिखाई नहीं देता था।

सुरेश अपने लम्बे काले ओवरकोट की जेबों में हाथ डाले विचार-मग्न सड़क के एक किनारे चला जा रहा था। आज उसकी अड़तीसवीं वर्षगाँठ थी। इन लम्बे-लम्बे अड़तीस वर्षों का जीवन आज अनायास ही उसकी आँखों के आगे नाचने लगा था।

वह अपने अतीत पर दृष्टि डालता है तो उसका मस्तक गर्व से ऊँचा उठ जाता है। सचमुच ही वह दुनिया का सबसे सुखी व्यक्ति है। जीवन में उसने क्या नहीं पाया। दुनिया भर का वैभव और ऐश्वर्य

उसके पाँवों पर लोटता रहा है। उसके मन में अब कोई सुख पाने की आकांक्षा नहीं। उसने जितना पाया है उतना दुनिया का कोई भी व्यक्ति नहीं पा सकता। संसार का कोई भी आनन्द, कोई भी सुख उससे अछूता नहीं छूटा है।

इसके लिये वह कुँवर राजेन्द्र का आभार मानता है। एक दिन राजेन्द्र ने अनायास ही उसे जो प्रकाश दिखाया था वह आज भी उसके हृदय को आलोकित किये हुये है। कुँवर राजेन्द्र एक सच्चा इंसान और उसका घनिष्ट मित्र है।

सुरेश यही सब सोचता चला जा रहा था कि अचानक उसकी बगल से एक आदमी तेजी से निकल गया। सुरेश ने पहचाना, वह हेमन्त था। जाने क्यों सुरेश के मन में भय की एक विचित्र सी भावना दौड़ गई। उसने दूसरी ओर आँखें घुमा ली और तेजी से अपने मकान की ओर चल दिया।

किन्तु हेमन्त ने उसे देख लिया था। सुरेश ने देखा कि हेमन्त रुक गया है और फिर तेजी से उसी की ओर बढ़ रहा है।

कुछ ही देर में हेमन्त ने सुरेश के कन्धे पर हाथ रख कर कहा, 'यह बड़ी अच्छी बात हुई जो तुम मुझे राह में मिल गये। मैं अभी तुम्हारे ही मकान से आ रहा हूँ। वहाँ मैं नौ बजे से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था। मैं आज ही रात की गाड़ी से बम्बई जा रहा हूँ। मैं चाहता था कि जाने से पूर्व एक बार तुमसे भेंट अवश्य कर लूँ। मैंने तुम्हारा यह लम्बा काला ओवरकोट देखते ही तुम्हें पहचान लिया था। लेकिन क्या तुमने मुझे नहीं पहचाना था?'

'इतने कुहरे में मैं तुम्हें पहचान भी कैसे सकता था। मैं तो यह भी नहीं जानता था कि यह स्थान कौन सा है। हमारी भेंट वर्षों से नहीं हुई है किन्तु फिर भी मुझे दुख है कि तुम बम्बई जा रहे हो। लेकिन मैं आशा करता हूँ कि तुम जल्दी ही लौट आओगे।'

'मैं केवल ६ मास के लिये वहाँ जा रहा हूँ। मेरा विचार वहाँ एक

चित्रशाला बनाने का है। मैं वहाँ रह कर एक महान चित्र बनाऊँगा। मुझे विश्वास है कि मेरा वह चित्र संसार का सर्वश्रेष्ठ चित्र होगा। लेकिन मैं यह बात बताने के लिये तुम्हारे पास नहीं आया था। आज मुझे तुमसे कुछ विशेष बातें करनी हैं।'

सुरेश का बँगला आ गया था। उसने अपने ड्राइंग-रूम में प्रवेश करते हुये कहा, 'तुमसे बातें करके मुझे बहुत खुशी होगी। लेकिन तुम्हें रेल पर जाने में देर तो नहीं होगी?'

'नहीं, मेरे पास अभी बहुत समय है। रेल तीन बजे जाती है। अभी तो केवल ग्यारह ही बजा है। मैंने अपना सामान पहले ही भेज दिया है। अपने साथ मुझे इस अटेची के सिवा और कुछ नहीं ले जाना है,' हेमन्त ने अपने हाथ की अटेची ऊपर उठा कर सुरेश को दिखाते हुये कहा।

सुरेश ने उसकी ओर देखा और मुस्करा दिया। उसने कहा, 'मुझे आशा है कि तुम किसी गम्भीर विषय पर बातचीत नहीं करोगे। आजकल मेरे जीवन में किसी भी गम्भीर बात के लिये स्थान नहीं है।'

इसके बाद दोनों सुरेश के पुस्तकालय में जाकर बैठ गये। हेमन्त ने अपना ओवरकोट उतार कर कुर्सी पर रखते हुये कहा, 'मैं तुमसे वास्तव में ही कुछ गम्भीर बातें करना चाहता हूँ। लेकिन तुम भयभीत न हो। मैं सोच रहा हूँ कि वे बातें कैसे शुरू की जाँय।'

'तुम किस सम्बन्ध में बातें करना चाहते हो?' सुरेश ने सोफे पर अपने को गिराते हुये कहा, 'मुझे आशा है कि ये बातें मेरे सम्बन्ध में नहीं होंगी। मैं आज रात बहुत थक गया हूँ।'

'ये बातें तुम्हारे ही सम्बन्ध में हैं,' हेमन्त ने अपनी भारी और गम्भीर आवाज में कहा, 'मैं वे बातें तुम्हें अवश्य बताऊँगा। लेकिन मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैं आधे घंटे से अधिक तुम्हारा समय नहीं लूँगा।'

सुरेश ने एक गहरी साँस लेकर सिगरेट जलाई। 'आधा घण्टा,' वह बुदबुदाया।

'मैं तुमसे अधिक कुछ नहीं पूछना चाहता सुरेश, और जो कुछ मैं पूछ रहा हूँ वह तुम्हारे ही लाभ के लिये पूछ रहा हूँ। क्या तुम जानते हो कि सारे नगर में तुम्हारे बारे में भाँति-भाँति की चर्चाएँ हो रही हैं।'

'मैं उन चर्चाओं के बारे में कुछ भी जानना नहीं चाहता। मुझे दूसरों के पापों से दिलचस्पी है, लेकिन मैं अपने पापों को स्वयं कभी समझना नहीं चाहता। उन्हें जानने से उनका आकर्षण नष्ट हो जाता है।'

'नहीं, तुम्हें उनमें अवश्य ही दिलचस्पी लेनी चाहिये। कोई भी सज्जन व्यक्ति यह नहीं चाहेगा कि दूसरे लोग उसे पतित समझ कर उपेक्षा की दृष्टि से देखें। मैं स्वीकार करता हूँ कि समाज में तुम्हारा अपना स्थान है। तुम्हारे पास अपार धन-सम्पत्ति है। लेकिन धन-दौलत और समाज में ऊँचा स्थान पाना ही तो सब कुछ नहीं है सुरेश। मैं उन अफवाहों पर विश्वास नहीं करता। कम से कम तुम्हें देखकर मैं उन बातों पर विश्वास नहीं कर सकता। पाप मनुष्य के चेहरे पर अपनी छाप छोड़ देते हैं। वे कभी भी छिपाये नहीं जा सकते। कभी-कभी लोग गुप्त बुराइयों की बातें करते हैं, लेकिन मैं उन पर भी विश्वास नहीं करता। यदि किसी व्यक्ति में कोई बुराई है तो वह उसके चेहरे पर अवश्य ही प्रगट हो जायगी। गत वर्ष एक व्यक्ति मेरे पास अपना चित्र बनवाने आया। मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा था। मैंने उसके किसी भी पतन की बात नहीं सुनी थी। समाज में उसकी काफी प्रतिष्ठा थी। वह अपने चित्र का मुझे बहुत अधिक मूल्य भी चुकाना चाहता था। किन्तु मैंने उसका चित्र बनाना अस्वीकार कर दिया। उसके चेहरे पर जाने कैसा भाव था कि उसे देख कर मेरे मन में घृणा का विचित्र-सा भाव उत्पन्न हो गया। आज मैं जानता हूँ कि उस दिन का मेरा वह अनुमान असत्य नहीं था। उसका जीवन बड़ा पतित और भयंकर है।'

किन्तु तुम्हारे विरुद्ध में कोई बात स्वीकार करने को कभी तैयार नहीं हुआ। तुम्हारी आँखों में मुझे एक विचित्र-सी चमक दिखाई दी। तुम्हारे इस सरल और शान्त यौवन में मुझे एक अजीब-सी पवित्रता का आभास मिला। और आज भी जब मैं लोगों को तुम्हारे विरुद्ध चर्चा करते सुनता हूँ तो मैं नहीं जानता कि उन्हें सत्य मानूँ या असत्य। लेकिन मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ। बताओ, जब तुम क्लब के कमरे में प्रवेश करते हो तो नगर के कुछ सम्मानित व्यक्ति वहाँ से उठ कर क्यों चले जाते हैं? नगर के बड़े अधिकारी अब तुम्हारा निमन्त्रण अस्वीकार क्यों कर देते हैं और तुम्हें अपने यहाँ आने का निमन्त्रण क्यों नहीं देते। तुम राजा शेरसिंह के घनिष्ट मित्र थे। मैं गत सप्ताह उनसे मिला तो तुम्हारी चर्चा छिड़ गई। उन्होंने कहा कि किसी भी सभ्य और पवित्र लड़की को तुमसे सम्पर्क नहीं बढ़ाना चाहिये और जिस कमरे में तुम बैठे हो उसमें किसी भी सम्मानित महिला को नहीं बैठना चाहिये। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। मैंने कहा कि मैं सुरेश का मित्र हूँ और इसीलिये मुझे यह पूछने का अधिकार है कि उनकी बात का अभिप्राय क्या है।

'उन्होंने सब लोगों के सामने मुँह बना कर जो कुछ बताया उससे मेरा हृदय व्यथा से फट पड़ा। उन बातों पर मुझे विश्वास ही नहीं हुआ। वहाँ बैठे सभी लोग उनकी उन बातों को स्वीकार कर रहे थे। ओह, वह सब कितना भयंकर है। बताओ, युवकों के लिये तुम्हारी मित्रता इतनी घातक सिद्ध क्यों होती है? अभागे मोहन ने तुम्हारे लिये ही आत्महत्या की। तुम उसके घनिष्ट मित्र थे। रायबहादुर धर्मसिंह को तुम्हारे लिये ही नगर छोड़ना पड़ा। उनका नाम सभ्य समाज में कलंकित हो गया था। कर्णसिंह और उसके दुखद अन्त के सम्बन्ध में तुम क्या सफाई दे सकते हो। रायसाहब हेमराज के इकलौते पुत्र और उसके भविष्य के बारे में तुम क्या कह सकते हो। मैं कल रात उसके पिता से

मिला था। शर्म से उनकी आँखें ऊपर नहीं उठती थी। बताओ, क्यों यह कुछ भी सच नहीं है?'

'मैं इन बातों को सुनना नहीं चाहता हेमन्त,' सुरेश ने स्वर में कुछ रोष भर कर कहा, 'तुम इस बारे में कुछ भी नहीं जानते। तुम कहते हो कि मेरे क्लब के कमरे में प्रवेश करते ही नगर के सम्मानित व्यक्ति वहाँ से उठ कर चले जाते हैं। तुम जानते हो इसका कारण क्या है? इसका कारण यही है कि मैं उनके चरित्र तथा उनके पापों के सम्बन्ध में सभी कुछ जानता हूँ और वे मेरे बारे में कुछ भी नहीं जानते। उनके परिवार के सभी लोगों का रक्त गन्दगी से भरा पड़ा है। फिर वे सचरित्र और पवित्र किस प्रकार रह सकते हैं। तुम मुझ पर रायसाहब हेमराज के पुत्र और मोहन का जीवन नष्ट करने का आरोप लगाते हो। लेकिन क्या इसमें केवल मेरा ही दोष है? यदि मोहन में हजारों बुराइयाँ हैं और हेमराज का पुत्र दिन-रात मद्य के नशे में डूबा रहता है तो इसके लिये मैं क्या कर सकता हूँ। यदि हेमराज के उस बेवकूफ पुत्र ने एक वेश्या से विवाह कर लिया है तो उसका दोष मेरे सर पर क्यों मढ़ा जाता है। यदि कर्णसिंह ने चेक पर अपने मित्र के जाली हस्ताक्षर किये तो मैं उसे कैसे रोक सकता था। मैं जानता हूँ कि हमारे सभ्य कहे जाने वाले समाज में लोग किस प्रकार की बातें करते हैं। जब समाज के ये ठेकेदार क्लबों में खाने की मेजों पर बैठते हैं तो ये अपनी नैतिकता को बहुत ऊँचा दिखाने का प्रयत्न करते हैं। जो लोग उनसे बड़े हैं या जिन लोगों के आदर्श उनसे ऊँचे हैं, ये लोग उनसे ईर्ष्या करते हैं और उनमें बुराइयाँ ढूँढ़ने लगते हैं। ये उनके बारे में घृणित बातें कह कर यह दिखाने का प्रयत्न करते हैं कि उनके सम्बन्ध उन लोगों से बहुत अच्छे हैं और वे उनकी सभी बातें जानते हैं। इस अभागे देश में यदि कोई व्यक्ति महान् है तो कोई भी उसकी आलोचना करने में नहीं चूकता। मैं पूछता हूँ कि अपने को ऊँचा और पवित्र कहने वाले समाज के ये ठेकेदार स्वयं कैसा जीवन व्यतीत करते हैं। वे रात के अन्धेरे में पाप करते हैं, और दिन की

रोशनी में माथे पर तिलक लगा कर घूमते हैं। तुम्हें यह नहीं भूल जाना चाहिये हेमन्त कि आज हम मक्कारों की दुनिया में रह रहे हैं।'

'प्रश्न यह नहीं है सुरेश,' हेमन्त ने कहा, 'मैं जानता हूँ आज का हमारा सभ्य कहलाया जाने वाला समाज अपवित्र और कलंकित है। उसका कोई भी सिद्धान्त ठीक नहीं है। इसीलिये मैं चाहता हूँ कि तुम उन बुराइयों और कलंक से दूर रहो। मैं जानता हूँ इन दिनों तुम्हारा जीवन बिल्कुल निष्कलंक नहीं रहा है। जिस व्यक्ति का उसके मित्रों पर जैसा प्रभाव पड़ता है, वे उसे उसी रूप में देखते हैं। आज तुम अपने सम्मान और पवित्रता की सभी भावनाएँ खो चुके हो। उनका स्थान क्षणिक आनन्द के पागलपन ने ग्रहण कर लिया है। मैं जानता हूँ क्षणिक सुख प्राप्त करने की भावना तुम्हारे मन में बहुत गहरी जम कर बैठ गई है। तुम स्वयं ही खुशी-खुशी उन बुराइयों और पापों को ग्रहण करते जा रहे हो, किन्तु तुम फिर भी हँस सकते हो और अब भी हँस रहे हो। मैं जानता हूँ तुम्हारी और कुँवर राजेन्द्र की मित्रता अटूट है। किन्तु फिर भी तुमने उसकी बहन को सारे नगर में बदनाम कर दिया। कम से कम अपनी मित्रता के नाते ही तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये था।'

'तुम्हें ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिये हेमन्त। तुम अपनी सीमा से आगे बढ़ रहे हो।'

'नहीं मैं जो कुछ कहने आया हूँ वह सब कुछ कहे बिना आज नहीं जाऊँगा। तुम्हें भी मेरी सभी बातें सुननी पड़ेंगी। जब तुम मधुरिमा से प्रथम बार मिले थे, तो वह पूर्णतया निष्कलंक और पवित्र थी। नगर भर में उसका सम्मान था। वह अपनी सज्जनता और मधुरता के लिये सारे समाज में प्रसिद्ध थी। किन्तु आज नगर की कोई भी सम्मानित महिला क्लब या पार्क में उससे बात तक नहीं कर सकती। आज उसके अपने बच्चों को भी उसके साथ रहने की आज्ञा नहीं है। केवल यही नहीं, आज हर व्यक्ति की जबान पर तुम्हारा ही नाम है। सूर्य की प्रथम

किरण के साथ ही साथ लोगों ने तुम्हें नगर के गन्दे वेश्यालयों से नशे में चूर होकर निकलते देखा है। तुम वहाँ वेश बदल कर जाते हो, किन्तु क्या तुम समझते हो कि तुम्हें कोई पहचान नहीं सकता। जब मैंने प्रथम बार उन बातों को सुना था तो मुझे विश्वास नहीं हुआ था। मैं उन्हें असत्य जान कर हँस दिया था। किन्तु आज मैं उन्हें सुनता हूँ तो भय से काँप उठता हूँ। तुमने नगर के बाहर उस एकान्त स्थान में जो मकान बनवाया, उसके लिये तुम कौन-सी सफाई पेश कर सकते हो? मैं जानता हूँ वहाँ जाकर तुम कैसा जीवन व्यतीत करते हो। तुम नहीं जानते सुरेश कि लोग तुम्हारे सम्बन्ध में कैसी-कैसी बातें कहते हैं। मैं तुमसे केवल एक ही प्रार्थना करना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम अपने जीवन को इस तरह बरबाद मत होने दो। दुनिया में उसका बहुत मूल्य है। तुम ऐसा जीवन व्यतीत करो जिससे लोग तुम्हारा सम्मान करें। मैं चाहता हूँ कि कोई भी कलंक तुम्हारे पवित्र नाम को कलंकित न करे। मैं यह भी चाहता हूँ कि तुम उन भयंकर लोगों का साथ छोड़ दो, जिनसे तुम मिलते-जुलते हो। अपनी शक्ति को बुराइयों के विकास में नहीं, अच्छाइयों के विकास में लगाओ। लोग कहते हैं कि तुम जिससे भी मिलते हो उसे ही अपवित्र बना देते हो। मैं नहीं जानता कि वह सच है या नहीं। मैं यह सब जान भी कैसे सकता हूँ। लेकिन मुझसे ऐसी-ऐसी बातें कही गई हैं जो सुनने पर भी असम्भव मालूम होती हैं। किन्तु वे सबूत पेश करते हैं और मुझे विश्वास दिला देते हैं। सर रामचन्द्र मेरे मित्र हैं। कल शाम वे मेरे साथ ही बैठे भोजन कर रहे थे। उन्होंने मुझे अपनी पत्नी का एक पत्र दिखाया। यह पत्र उनकी पत्नी ने मृत्यु शैया पर पड़े-पड़े लिखा था। अपने अन्तिम समय में उसने अपने पापों को स्वीकार किया था। उसमें आदि से अन्त तक तुम्हारी चर्चा थी। ऐसी भयंकर बातें मैंने जीवन में कभी नहीं सुनी थी। मैंने उनसे कहा कि तुम यह सब काम कर ही नहीं सकते। वह सब झूठ है। किन्तु आज मैं सोचता हूँ कि क्या मैं वास्तव में तुम्हें जानता हूँ। मुझे कुछ भी

समझ में नहीं आता। उन लोगों के किसी भी बात का उत्तर देने से पहले मैं एक बार तुम्हारी आत्मा देखना चाहता हूँ।'

सुरेश स्तब्ध रह गया। भय से उसका चेहरा सफेद पड़ गया। उसने आतंकित स्वर में कहा, 'तुम मेरी आत्मा देखना चाहते हो!'

'हाँ,' हेमन्त ने अपने गम्भीर स्वर में व्यथा भर कर कहा, 'मैं तुम्हारी आत्मा देखना चाहता हूँ। लेकिन सोचता हूँ कि यह कार्य तो ईश्वर के सिवा और कोई कर ही नहीं सकता।'

सुरेश के अधरों पर उपहास की हँसी फूट पड़ी। उसने मेज पर से एक मोमबत्ती उठा कर कहा, 'लेकिन आज तुम स्वयं ही मेरी आत्मा को देखोगे। आओ और आज अपनी सर्वोत्तम कलाकृति को देखो। तुम अपनी कला को स्वयं क्यों नहीं देख सकते? तुम चाहो तो बाद में वह भेद सारे संसार पर प्रगट कर सकते हो। लेकिन तुम पर कोई विश्वास नहीं करेगा। आओ, मेरे साथ आओ। तुमने आज मेरे पतन के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा है। आज उस पतन को तुम स्वयं अपनी आँखों से देखोगे।'

सुरेश के प्रत्येक शब्द में अभिमान का पागलपन भरा था। उसे इस बात की कल्पनामात्र से ही अत्यधिक प्रसन्नता हो रही थी कि आज उसका रहस्य किसी दूसरे व्यक्ति पर प्रगट हो जायगा। और यह रहस्य उसी व्यक्ति पर प्रगट होगा जिसने वह चित्र बना कर उसके जीवन में लज्जा की इस भयंकर बात को जन्म दिया है। वह अपनी कला की कुरूपता को देखेगा और उसका जीवन भर का गर्व क्षण में ही टूक-टूक हो जायगा। फिर उसके भविष्य में आँसू और पश्चाताप के सिवा कुछ भी शेष नहीं रहेगा।

सुरेश ने हेमन्त के और निकट आकर उसकी आँखों में देखते हुये कहा, 'मैं तुम्हें अपनी आत्मा दिखाऊँगा। आज तुम वह चीज देखोगे, जिसे तुम समझते हो कि केवल ईश्वर ही देख सकता है।'

हेमन्त अवाक् रह गया। उसने चिल्ला कर कहा, 'यह नास्तिकता

है सुरेश, तुम्हें ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए। ये बातें भयंकर होती हैं और उनका कुछ अभिप्राय भी नहीं होता।'

'क्या तुम ऐसा समझते हो?' सुरेश ने हँस कर कहा।

'आज मैंने तुमसे जो कुछ भी कहा है, तुम्हारी अपनी भलाई के लिये ही कहा है। तुम जानते हो, मैं सदा ही तुम्हारा मित्र रहा हूँ।'

'तुम्हें जो कुछ कहना है जल्दी ही कह डालो,' सुरेश ने कुछ उग्र होकर कहा।

हेमन्त के चेहरे पर जाने कैसी व्यथा झलक आई। सहानुभूति की एक विचित्र-सी भावना ने उस पर अपना अधिकार जमा लिया। उसे सुरेश के जीवन के सम्बन्ध में जानने का अधिकार ही क्या है! जो कुछ उसने आज सुरेश से कहा है क्या उससे उसका मन व्यथा से नहीं भर गया होगा। कुछ देर वह चुपचाप वहीं बैठा अपलक नेत्रों से छत की ओर निहारता रहा।

'मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ हेमन्त,' सुरेश ने कुछ कठोर स्वर में कहा।

हेमन्त ने छत से अपनी आँखें हटा कर सुरेश की ओर देखा। फिर उसने बहुत ही धीमे स्वर में कहा, 'मैं तुमसे केवल एक बात कहना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ उन लोगों ने तुम पर जो भयंकर आरोप लगाये हैं, तुम मुझे उनका कोई उत्तर अवश्य दो। यदि तुम कहोगे कि वे आक्षेप आदि से अन्त तक गलत हैं तो मैं तुम्हारी उस बात पर विश्वास कर लूँगा। एक बार तुम उन सभी आरोपों को अस्वीकार कर दो। तुम मेरे सामने यह स्वीकार मत करो कि तुम बुरे और पतित हो।'

सुरेश हँसा। उसके अधरों के बीच नैराश्य की रेखा खिंच गई। उसने जल्दी से कहा, 'मेरे साथ आओ। मैंने अपने दैनिक जीवन में जो कुछ भी किया है उन सब का लेखा-जोखा मेरे पास है। यदि तुम मेरे साथ चलोगे तो मैं तुम्हें वह सब कुछ दिखा दूँगा।'

'यदि तुम चाहते हो तो मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। शायद आज मेरी

गाड़ी छूट जायगी। लेकिन मुझे उसकी चिन्ता नहीं है। मैं कल भी जा सकता हूँ। आज मैं केवल अपने प्रश्नों का उत्तर चाहता हूँ।'

'मैं तुम्हें तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दूँगा। लेकिन यहाँ मैं तुम्हें कुछ भी नहीं बता सकता। तुम्हें मेरे साथ दूसरे कमरे में चलना होगा।'

१२

ड्राइंग रूम से बाहर निकल कर सुरेश स्टोर के पीछे वाले उसी कमरे की ओर चल दिया जिसमें वह चित्र रखा हुआ था। हेमन्त चुपचाप उसके पीछे-पीछे चल रहा था। सुरेश के हाथ में मोमबत्ती थी। उसके प्रकाश की दीवारों पर विचित्र-सी छाया पड़ रही थी। बाहर शायद तूफान उठा था। तेज हवा के कारण कमरे की खिड़कियाँ जोर-जोर से बज रही थीं।

उस कमरे के सामने पहुँच कर सुरेश ने मोमबत्ती जमीन पर रख दी और जेब से चाबी निकाल कर ताला खोला। फिर उसने बहुत ही धीमे स्वर में पूछा, 'क्या तुम वास्तव में उन सभी बातों को जानना चाहते हो?'

'हाँ,' हेमन्त ने भी उसी प्रकार उत्तर दिया।

सुरेश एक बार हँसा, फिर उसने कुछ उग्र स्वर में कहा, 'दुनिया में केवल तुम्हीं एक ऐसे आदमी हो जिसे मेरे बारे में सभी कुछ जानने का पूर्ण अधिकार है। तुम जितना सोचते हो, तुम्हारा मेरे जीवन के साथ उससे भी अधिक सम्बन्ध है।' सुरेश ने द्वार खोल दिया और मोमबत्ती हाथ में उठा कर कमरे के भीतर प्रवेश किया।

एक बार हवा का झोंका आया और उससे मोमबत्ती की लौ काँप उठी। सुरेश ने मोमबत्ती को मेज पर रखते हुए कहा, 'हवा बहुत तेज है। हेमन्त कमरे का दरवाजे बन्द कर दो।

हेमन्त ने एक बार चारों ओर देखा। उसकी कुछ भी समझ में

नहीं आ रहा था। लगता था मानों इस कमरे में किसी ने वर्षों से प्रवेश नहीं किया है। सील की बदबू से उसका मस्तिष्क सड़ा जा रहा था।' उसने देखा कि कमरे की दीवारों पर रेत की मोटी तह जम गई है।

'तुम सोचते हो हेमन्त कि केवल ईश्वर ही किसी की आत्मा देख सकता है, लेकिन वह तुम्हारा भ्रम है। उस पर्दे को हटाओ, तुम मेरी आत्मा देख सकोगे।' सुरेश के स्वर में क्रूरता नाच रही थी।

हेमन्त ने शान्त स्वर में कहा, 'तुम पागल हो गये हो सुरेश। यह तुम्हारा कैसा अभिनय है?'

'मैं जानता हूँ, तुम इस पर्दे को नहीं हटाओगे। लेकिन आज तुम मेरी आत्मा देखे बिना यहाँ से नहीं जा सकते। मैं स्वयं ही इसे हटाये देता हूँ।' सुरेश ने चित्र का वह मूल्यवान पर्दा फाड़ कर उसे जल्दी से कमरे के एक अँधेरे कोने में फेंक दिया।

हेमन्त के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। मोमबत्ती के धीमे प्रकाश में उस चित्र के चेहरे को देख कर चित्रकार के होठों से अनायास ही एक बुभुक्षित चीत्कार-सा निकल पड़ा। ऐसी निराली बात उसके जीवन में दूसरी नहीं थी। उस चित्र की मुद्रा में उसे कुछ ऐसा भाव दिखाई दिया कि उसका मन भय और निराशा से भर उठा। हे ईश्वर, क्या यही सुरेश का वह सुन्दर चेहरा है किन्तु कुटिलता ने अभी उस सौन्दर्य को पूर्णतया नष्ट नहीं किया है। उसके सुनहरे बालों में अब भी चमक है, उसके होंठ अब भी लाल हैं। उसकी नीली आँखों में अब भी आकाश की सी निर्मलता है। इसके चेहरे की विशालता अभी पूर्णतया नष्ट नहीं हुई है। हाँ, यह सुरेश का ही चित्र है। लेकिन उसकी मुद्रा को ऐसा विकृत किसने कर दिया है। वह अपने चित्र को पहचानता है। वह अपनी सर्वोत्तम कलाकृति को कभी नहीं भुला सकता। उसने मोमबत्ती उठाई और चित्र के पास ले जाकर देखा। चित्र के एक कोने में उसका अपना ही नाम लिखा था। निस्सन्देह ये अक्षर उसी के हाथ के हैं। यह बात बड़ी भयानक थी। उसका मन शंका से काँप उठा।

ऐसे चित्र की वह कभी कल्पना भी नहीं कर सकता, किन्तु फिर भी यह उसी का चित्र है। यह उसकी कला का प्रतीक है। उसे लगा जैसे उसकी धमनियों में बहता हुआ रक्त जम गया हो।

वह सोचने लगा कि चित्र की इस मुद्रा का अभिप्राय क्या है? वह इतना क्यों बदल गया है? हेमन्त ने एक बार आँख घुमा कर सुरेश की ओर देखा। उसके मुख से एक भी शब्द नहीं निकला। उसने माथे पर अपना हाथ फेरा, वह पसीने से तर हो चुका था। सुरेश कार्निस पर झुका हुआ गम्भीरता से हेमन्त की ओर देख रहा था। उसके मुख पर विचित्र-सा भाव अंकित था। एक बार लगा मानो वह किसी महान् कलाकार की कला में खो गया है। उसकी आँखों में न खुशी थी न व्यथा। वहाँ केवल दर्शक की उत्सुकता और वासना जाग रही थी।

'इसका क्या अभिप्राय है?' बहुत देर बाद हेमन्त ने जोर से चिल्ला कर कहा। किन्तु उसे लगा मानों उसका स्वर ठंडा और निर्जीव है।

कुछ देर तक सुरेश चुपचाप हेमन्त की ओर देखता रहा। फिर उसने बहुत ही धीमे स्वर में कहा, 'वर्षों पूर्व जब मैं शैशव को पार करके यौवन में प्रवेश कर रहा था तो तुमसे मेरी भेंट हुई। तुमने मेरी सराहना की और मुझे अपने सौन्दर्य पर अभिमान करना सिखाया। फिर एक दिन आया और तुम्हारी उसी चित्रशाला में मेरी भेंट कुँवर राजेन्द्र से हुई। वह क्षण मैं जीवन में मैं कभी नहीं भुला सकता। कुँवर राजेन्द्र ने मुझे मेरी शक्ति का परिचय दिया और तुम्हारे इस चित्र ने मेरे सौन्दर्य का रहस्य मेरे सामने प्रगट कर दिया। फिर पागलपन के उन क्षणों में मेरे मन में एक प्रेरणा और एक उत्सुकता जागी और मैं उसकी पूर्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगा।'

'हाँ, वह बात मुझे याद है, उसे मैं भूल भी कैसे सकता हूँ। लेकिन इस कमरे में बहुत सील है। वह सील इस चित्र में भी समा गई है। जिन रंगों का मैंने प्रयोग किया है, उनमें अवश्य ही कोई विषैला

पदार्थ रहा होगा। मुझे विश्वास है कि जो बात तुम कहना चाहते हो वह असम्भव है।'

'कौन-सी बात असम्भव है?' सुरेश ने धीमे स्वर में कहा। वह वहाँ से हट कर खिड़की के सामने जा खड़ा हुआ था और उस पर आधा झुक कर हेमन्त की ओर देख रहा था।

'तुमने मुझसे कहा था कि तुमने इस चित्र को नष्ट कर दिया है?'

'नहीं, मैंने तुमसे गलत कहा था। इस चित्र ने मुझको नष्ट कर दिया है।'

'मैं इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता कि यह मेरा अपना ही चित्र है।'

'क्या तुम इसमें अपना आदर्श नहीं देखते,' सुरेश ने कठोर स्वर में कहा।

'तुम इसे मेरा आदर्श कहते हो?'

'एक दिन तुमने ही इसे अपना आदर्श कहा था।'

'उस दिन इस चित्र में कोई कुटिलता नहीं थी, कोई घृणित भावना नहीं थी। उस दिन तुम मेरे लिए ऐसे आदर्श थे, जो जीवन में मुझे कभी नहीं मिलेगा। लेकिन आज तो यह चेहरा शैतान का चेहरा लगता है।'

'यह मेरी आत्मा का प्रतीक है।'

'हे ईश्वर, मैं जीवन भर किस चीज की उपासना करता रहा। इसकी आँखें तो किसी भी शैतान से कम नहीं हैं।'

सुरेश ने चिल्ला कर दुख भरे स्वर में कहा, 'हममें से हर एक के जीवन में स्वर्ग और नर्क होते हैं हेमन्त।'

हेमन्त ने एक बार फिर चित्र की ओर देखा। फिर उसने निराश स्वर में कहा, 'यदि यह सच है और यदि तुमने अपने जीवन को इतना पतित बना डाला है, तो भी तुम उन लोगों से अधिक पतित कैसे हो सकते हो, जो दिन-रात तुम्हारी आलोचना किया करते हैं।'

हेमन्त ने फिर मोमबत्ती उठाई और चित्र के पास जाकर उसका निरीक्षण करने लगा। चित्र के रंगों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। वे उसी प्रकार चमकीले और सुन्दर थे जैसा कि उसने उन्हें बनाया था। किन्तु फिर भी चित्र के चेहरे से जाने कैसा कुरूप और भयंकर भाव झाँक रहा था। लगता था जैसे पाप के कीड़े उसे धीरे-धीरे खाये जा रहे हैं। किसी गढे में पड़ा सड़ता हुआ शव भी कभी इतना भयंकर नहीं हो सकता।

हेमन्त के हाथ काँप गये और मोमबत्ती छूट कर पृथ्वी पर गिर पड़ी। उसने तुरन्त ही पाँव रख कर उसे बुझा दिया। इसके बाद वह पास ही पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया और अपने दोनों हाथों से मुँह छिपा कर सिसकियाँ भरने लगा।

उसकी सिसकियों के पीछे खिड़की के समीप खड़े हुये सुरेश की सिसकियाँ दब गईं। कुछ देर बाद हेमन्त ने कहा, 'हे ईश्वर, हमें कैसा सबक मिला है! यह सबक कितना भयंकर है।'

सुरेश ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। किन्तु हेमन्त को उसकी सिसकियाँ साफ सुनाई दे रही थी। हेमन्त ने फिर कहा, 'क्या वह प्रार्थना तुम्हें याद है सुरेश जो हमें बचपन में सिखाई जाती थी। आओ आज वही प्रार्थना करें। ईश्वर, हमें बुरे कामों की ओर जाने से रोको। हमारे पापों को क्षमा कर दो। हमारी सारी बुराइयों को धो दो। तुम्हारे गर्व का फल तुम्हें मिल गया है। तुम्हारे पश्चाताप का फल भी तुम्हें अवश्य मिलेगा। मैंने तुम्हारी बहुत उपासना की है। मुझे उसका दण्ड मिल चुका है। तुमने स्वयं अपनी उपासना की है। हम दोनों को हमारे कामों का दण्ड मिला है।'

सुरेश ने अश्रु भरे नयनों से हेमन्त की ओर देखा। कमरे के उस अन्धकार में यह दृश्य बड़ा वीभत्स लग रहा था।

'अब बहुत देर हो चुकी है हेमन्त,' सुरेश ने धीरे से उत्तर दिया।

'ईश्वर की इस सृष्टि में देर कभी नहीं होती सुरेश। वह दयावान परमात्मा सबों के पापों को क्षमा कर देता है। यदि वह प्रार्थना तुम्हें याद नहीं है तो आओ, दो क्षण आँखें मूंद कर उस परमपिता परमात्मा का ध्यान करें।'

'नहीं, उन प्रार्थनाओं का अब मेरे सामने कोई महत्व नहीं है।'

'ऐसा न कहो, तुमने जीवन में बहुत पाप किया है। इस चित्र को देखो। यह कितना भयंकर है।'

सुरेश ने चित्र की ओर देखा। सचमुच ही वह बहुत भयंकर था। तभी एक चमत्कारी घटना घटी। सुरेश के मन में हेमन्त के प्रति जाने कैसी घृणा का भाव उत्पन्न हो गया। उसे लगा मानों यह चित्र उसका उपहास कर रहा है। नहीं अब वह और अधिक नहीं सह सकता। हेमन्त के इस चित्र के कारण उसने बहुत सहा है। उसके मन में किसी जादुई घटना की तरह पशुओं की सी पागल वासना जाग उठी। उसे लगा मानों हेमन्त जैसा घृणित व्यक्ति उसके जीवन में दूसरा नहीं है। हाँ, वह उससे घृणा करता है। जीवन में सबसे अधिक हेमन्त से घृणा करता है। एक बार उसने पागलों की भाँति चारों ओर देखा। तभी उसकी निगाह सामने मेज पर पड़ी हुई किसी चमकती धातु पर पड़ी। सुरेश जानता है कि वह धातु क्या है। वह एक चाकू है जो सुरेश कुछ दिन पूर्व इसी कमरे में भूल गया था। सुरेश ने जल्दी से आगे बढ़ कर चाकू उठा लिया। इससे पूर्व कि हेमन्त कुछ कहे सुरेश ने आगे बढ़ कर चाकू उसकी गरदन में भोंक दिया। हेमन्त के मुख से एक आर्द्र चीत्कार निकली और वह मेज पर गिर पड़ा। इसके बाद सुरेश ने हेमन्त पर कितनी बार प्रहार किया यह उसे स्वयं भी नहीं मालूम।

बहुत देर बाद सुरेश के हाथ रुके। हेमन्त का रक्त मेज से नीचे टपक रहा था। सुरेश ने चाकू एक ओर फेंक दिया और फर्श पर रक्त के गिरने की आवाज सुनने लगा। इसके बाद उसने द्वार खोले और कमरे

से बाहर निकल आया। मकान में पूर्ण शान्ति थी। आसपास कोई भी नहीं था। कुछ देर वह वहीं खड़ा अन्धकार में आखें गड़ाए देखता रहा।

इसके बाद वह फिर उसी कमरे में चला गया और भीतर से द्वार बंद कर लिये। हेमन्त का शव अब भी मेज पर पड़ा हुआ था। उसके दोनों लम्बे हाथ उसके सिर के आगे की ओर फैले हुए थे। उसका रक्त निकल कर मेज पर चारों ओर जम रहा था।

यह विनाशकारी घटना पलक मारते ही घट गई थी। लेकिन सुरेश शान्त था। उसने खिड़की खोली और बाहर छज्जे पर निकल आया। तेज हवा के कारण कुहरा साफ हो गया था और नीलाकाश पर तारे चमक रहे थे। उसने नीचे सड़क की ओर देखा। पुलिस का सिपाही हाथ में लालटेन लिये चुपचाप चला जा रहा था। एक स्त्री लड़खड़ाते पावों से एक मकान से निकली और दूसरे मकान में घुस गई। तभी हवा का एक जोर का झोका आया और सामने वाला पीपल का वृक्ष सॉय-सॉय कर उठा। सुरेश का मन सिहर गया। उसने भीतर जाकर खिड़की बंद कर ली।

इसके बाद उसने द्वार खोले। उसने हेमन्त की ओर एक बार भी नहीं देखा। उसका एक मित्र, जिसने वह विनाशकारी चित्र बनाया और जिसके कारण उसे जीवन भर व्यथा और दुख सहना पड़ा, आज इस संसार से सदा के लिये चल बसा है। उसके लिये यही काफी है।

द्वार बन्द करके सुरेश नीचे उतरने लगा। तभी उसे लगा जैसे कोई कराह रहा है। वह एक क्षण को रुका। लेकिन कहीं से भी कोई शब्द सुनाई नहीं पड़ा। इसी प्रकार वह कई बार रुका लेकिन उसे कुछ भी सुनाई नहीं पड़ा। नहीं, यह कैसे हो सकता है? हेमन्त मर चुका है। चारों ओर सब कुछ शान्त है। यह उसकी अपनी पग-ध्वनि के सिवा और कुछ भी नहीं है।

जब सुरेश ड्राइङ्गरूम में पहुँचा तो उसने हेमन्त का अटेची और कोट सोफे पर पड़ा हुआ देखा। उसने सोचा कि इन्हें अवश्य ही कहीं

छिपा देना चाहिये। उसने उन चीजों को उठाया और अपने गुप्त कमरे में ले गया। उसने सोचा कि वह बाद में उन्हें जला देगा।

इसके बाद सुरेश ने घड़ी में देखा। ठीक दो बज रहे थे। सुरेश सोफे पर पाँव फैला कर बैठ गया। उसकी विचारधारा दौड़ने लगी। इस देश में हर वर्ष और हर मास हत्या के अपराध में अनेकों व्यक्ति पकड़े जाते हैं। इसके बाद उनका क्या परिणाम होता है यह किसी से भी छिपा नहीं है। आज उसे स्वयं पर आश्चर्य होने लगा। यह काम उसने इतनी सरलता से कैसे कर डाला। उस समय वातावरण में जाने कैसा विष भर गया था। उसने उसके मन-प्राण को विषैला बना डाला। लेकिन उसके विरुद्ध कोई भी आरोप कैसे सिद्ध हो सकता है। हेमन्त यहाँ से ग्यारह बजे चला गया था। फिर उसे यहाँ आते किसी ने नहीं देखा। उस समय यहाँ कोई भी नौकर नहीं था। किन्तु फिर भी उसे सब चीजों को नष्ट कर देना चाहिये।

तभी उसके मन में एक विचार उठा। उसने अपना कोट और टोप पहना और कमरे से बाहर निकल आया। वहाँ अँधेरे में खड़ा होकर वह कुछ देर तक सामने जाते हुये पुलिस के सिपाही को देखता रहा, फिर उसने धीरे से कमरे के द्वार बंद कर दिये और अचानक ही चुपचाप एक ओर को चल दिया।

दो क्षण बाद ही सुरेश लौट आया। ड्राइङ्गरूम के सामने आकर उसने घंटी का बटन दबाया। उसका नौकर शायद गहरी निद्रा में सो रहा था। इसीलिये उसे कई बार घंटी बजानी पड़ी।

दो मिनट के बाद उसके नौकर ने द्वार खोला। उसकी आँखें नींद से बंद हुई जा रही थीं।'

सुरेश ने संयत स्वर में कहा, 'मुझे आज बहुत देर हो गई। इस समय क्या बजा होगा?'

'दो बज चुके हैं मालिक,' नौकर ने घड़ी की ओर देख कर उत्तर दिया।

'सचमुच ही आज मुझे बहुत देर हो गई। क्या आज शाम कोई मुझसे मिलने आया था?'

'जी हाँ, हेमन्त बाबू यहाँ ग्यारह बजे तक आपकी प्रतीक्षा करते रहे। उन्हें कहीं बाहर जाना था, इसीलिये वे अधिक देर इन्तजार नहीं कर सके।'

'यह तो बहुत बुरा हुआ। मुझे उनसे जरूरी काम था। क्या वे मेरे लिये कोई पत्र छोड़ गये हैं?'

'जी नहीं, वे कह रहे थे कि यदि आप क्लब में उन्हें नहीं मिले तो वे बम्बई से आपको पत्र लिखेंगे।'

'ठीक है, अब तुम सो सकते हो।'

नौकर चला गया और सुरेश को विश्वास हो गया कि उसे उस पर जरा भी सन्देह नहीं हुआ है।

१३

दूसरे दिन सुबह जब नौकर ने हाथ में चाय की 'ट्रे' लिये हुये सुरेश के कमरे में प्रवेश किया तो वह शाँति के साथ सो रहा था। वह दाहिनी करवट से लेटा था और उसका दाहिना हाथ उसके गालों के नीचे दबा था। लगता था मानों कोई छोटा-सा बालक सारे दिन की थकान के बाद आराम से सो रहा हो।

नौकर ने दो बार झकझोर कर सुरेश को उठाया। सुरेश ने आँखें खोलीं। बाहर धीमी-धीमी बयार बह रही थी। सुरेश के अधरों पर एक धीमी सी मुस्कान फैल गई।

उसने पलङ्ग पर बैठ कर एक बार चारों ओर देखा। फिर नौकर से चाय का प्याला लेकर पीने लगा। सूर्य की सुनहरी किरणें खिड़की को लाँघ कर कमरे के फर्श पर अठखेलियाँ कर रही थीं।

धीरे-धीरे सुरेश के मस्तिष्क में कल रात की वह भयंकर घटना दौड़ने लगी। सचमुच ही कल रात उसने बहुत सहा है। कल की वह रात कितनी डरावनी और भयंकर थी। उसकी कल्पनामात्र से ही सुरेश का मन सिहर उठा। और एक क्षण के लिये उसके मन में हेमन्त के प्रति घृणा की वही भावना जाग उठी जो गत रात उसकी हत्या करते समय उसके मन में जाग्रत हुई थी।

हेमन्त का शव अब भी वहीं कुर्सी पर पड़ा होगा। सूर्य की प्रखर किरणें अब उसे प्रकाशमान कर रही होंगी। किन्तु ऐसी डरावनी चीजें अन्धकार के लिये ही हैं, प्रकाश के लिये नहीं।

उसने सोचा कि यदि वह उन घटनाओं की स्मृति से ही भयभीत होता रहा तो एक दिन वह अवश्य ही पागल हो जायगा।

दुनिया में ऐसे पाप भी होते हैं जिनकी स्मृति मात्र ही मानव के मन को आनन्द से भर देती है। उन पापों को अपनाना उनकी स्मृति से अधिक सुखदाई नहीं होता। जो आनन्द उन पापों की कल्पना में मिलता है उनका हजारवाँ भाग भी उन्हें करने में नहीं मिलता। किन्तु यह पाप वैसा नहीं है। उसकी तो एक हल्की सी झलक भी मन को नङ्गा करके विश्व के सामने खड़ा कर देती है। यह ऐसा पाप है जो मन में समाना ही नहीं जानता। वह एक भयंकर स्वप्न की भाँति आँखों में नाच रहा है।

बहुत देर तक बैठा सुरेश उसी प्रकार सोचता रहा। फिर उसने सामने मेज पर पड़ा समाचारपत्र उठा लिया और शून्य नेत्रों से उसे देखने लगा। इसके बाद उसने पत्र को वहीं रख दिया और उस दिन की डाक पर दृष्टि दौड़ाई। कुछ पत्र पढ़ कर वह हँस दिया। एक पत्र को उसने कई बार पढ़ा। और फिर उसे फाड़ कर फेंक दिया। एक बार उसके चेहरे पर क्रोध की झलक दिखाई दी। उसने धीरे से कहा, 'किसी लड़की की स्मृति भी कितनी भयानक चीज है।'

तब उसने दो पत्र लिखे और एक पत्र जेब में रखते हुये दूसरा नौकर को देकर कहा, 'यह पत्र अभी महेन्द्रनगर में सुधांशु बाबू नामक एक व्यक्ति के यहाँ पहुँचाना होगा। उन्हें वहाँ सभी जानते हैं। उनका मकान तुम्हें आसानी से मिल जायगा।'

पत्र लेकर नौकर चला गया तो सुरेश ने एक सिगरेट सुलगाई। उसने निश्चय किया कि वह अब कल की उस विनाशकारी घटना के बारे में कुछ नहीं सोचेगा। बस हेमन्त की अब कभी याद भी नहीं करेगा। हेमन्त का कैसा दुखद अंत हुआ है। लेकिन उस बात से अब वह कोई प्रयोजन नहीं रखेगा। उसके अधरों से एक गहरी साँस निकल गई। उसने मेज पर पड़ी एक पुस्तक उठा ली और उसे गौर से पढ़ने लगा। किन्तु पुस्तक में क्या लिखा है, यह उसकी कुछ भी समझ में नहीं आया।

कुछ ही देर के बाद पुस्तक उसके हाथ से गिर गई। उसके मन में अचानक ही भय की जाने कैसी भावना जाग्रत होने लगी। वह बेचैन हो उठा। यदि सुधांशु नगर में नहीं हुआ तो क्या होगा? यह भी हो सकता है कि वह आने से इन्कार कर दे। तब वह क्या करेगा? उसका प्रत्येक क्षण बड़ा महत्वपूर्ण है। पाँच वर्ष पूर्व वह सुधांशु का घनिष्ट मित्र था। लोग कहते थे वे कभी एक दूसरे से अलग नहीं हो सकते। किन्तु समय के चक्र ने उनकी घनिष्ठता अचानक ही समाप्त कर दी। और आज जब वे क्लब में मिलते हैं तो सुरेश ही उसका स्वागत करता है, सुधांशु कभी सुरेश का स्वागत नहीं करता।

वह बहुत चतुर युवक है। कला के लिये उसके मन में स्थान नहीं है। सौन्दर्य की थोड़ी बहुत प्रशंसा करना उसने सुरेश से ही सीखा है। वह वैज्ञानिक है। उसने अपना सारा जीवन विज्ञान के आविष्कारों में ही लगा दिया है। वह रसायनशास्त्र का विशेषज्ञ है और उसकी अपनी प्रयोगशाला भी है। उसी प्रयोगशाला में बैठ कर वह दिन-रात अध्ययन किया करता है।

एक सिनेमा-गृह में प्रथम बार उससे सुरेश की भेंट हुई थी। तभी से वे घनिष्ट मित्र बन गये। किन्तु उनकी मित्रता केवल एक वर्ष तक चली। इसके बाद वह बन्धन सदा के लिये टूट गया। लोगों ने देखा कि सुधांशु ने सुरेश से बातें करना बन्द कर दिया है। जिस पार्टी में सुरेश उपस्थित रहता उससे सुधांशु जल्दी ही चला जाने का प्रयत्न करता।

जीव-शास्त्र में उसकी दिलचस्पी बढ़ती जा रही थी। विभिन्न पत्रिकाओं में उसके लेख प्रकाशित होते थे। नित्य ही सुना जाता कि सुधांशु कोई नया प्रयोग कर रहा है।

और आज सुरेश उसी सुधांशु की प्रतीक्षा में आँखें बिछाए बैठा है। उसके हृदय में विकलता भर रही है। वह हर क्षण घड़ी की ओर देख लेता है। जैसे-जैसे समय बीतता उसकी बैचैनी बढ़ती जाती। अन्त में वह उठ खड़ा हुआ और कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक चक्कर लगाने लगा। कभी वह घड़ी की ओर देखता और कभी द्वार के बाहर झाँकने लगता।

अब विलम्ब उसे असह होने लगा। उसके मन में जाने कैसा तूफान उठ रहा था। उसके मन पर भय की जो भावना जम कर बैठी है, वह मानों उसे छोड़ना ही नहीं चाहती। एक विचित्र सा आतंक उसके मन को जकड़े हुए है।

हेमन्त अब कभी नहीं जागेगा। उसी के साथ सुरेश के पाप भी दुनिया की आँखों से सदा के लिये ओझल हो गये हैं। अब दुनिया का कोई भी व्यक्ति उन्हें कभी नहीं देख सकता। किन्तु उसने क्षणिक आवेश में जो जघन्य कार्य कर डाला है, यदि वह संसार के सामने प्रगट हो गया तो ! इसके आगे उसमें कुछ भी सोचने की शक्ति नहीं है।

अन्त में द्वार खुला और नौकर ने कमरे में प्रवेश किया। सुरेश का हृदय धक-धक कर रहा था। उसने उत्सुकता के साथ नौकर की ओर देखा।

'सुधांशु बाबू मेरे साथ ही चले आये हैं,' नौकर ने नम्र स्वर में कहा।

सुरेश के अधरों से सन्तोष की एक गहरी साँस निकल गई। उसके गालों पर फिर से लालिमा दौड़ आई।

उसने नौकर से कहा, 'उन्हें तुरन्त ही भीतर ले आओ।' उसे लगा मानों वह फिर से संसार में लौट आया है। कायरता की जो भावना उसके मन पर अधिकार जमाये बैठी थी वह एक क्षण में ही धुल-पुछ कर साफ हो गई।

कुछ ही देर के बाद सुधांशु ने कमरे में प्रवेश किया। उसका चेहरा गम्भीर और पीला था।

सुरेश ने खड़े होकर उसका स्वागत करते हुये कहा, 'मुझे विश्वास था कि तुम जरूर आओगे। इसके लिये मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ।'

'मैं तुम्हारे यहाँ कभी भी आना नहीं चाहता था। लेकिन तुमने लिखा था कि यह जीवन और मरण का प्रश्न है।' उसका स्वर कठोर और दृढ़ था। वह बहुत धीमी आवाज में बोल रहा था। उसकी आँखों में निराशा मिश्रित क्रोध भरा हुआ था।

'हाँ, यह जीवन-मरण का प्रश्न है सुधांशु, केवल एक ही आदमी के नहीं, एक से अधिक आदमियों के जीवन-मरण का प्रश्न है। लेकिन तुम खड़े क्यों हो, बैठ जाओ।'

सुधांशु पास ही पड़ी हुई कुर्सी पर बैठ गया। सुरेश भी दूसरी कुर्सी खींच कर उसी के पास आ बैठा। एक बार दोनों की आँखें मिलीं। सुरेश की आँखों में व्यथा का विचित्र सा भाव अंकित था। वह जानता था कि जो बात वह करने जा रहा है वह बहुत भयंकर है।

कुछ देर बाद उसने सुधांशु के चेहरे की ओर देखते हुये कहा, 'इस मकान के ऊपर एक छोटा सा कमरा है। उस कमरे में वर्षों से मेरे सिवा और कोई नहीं गया है। इसी बन्द कमरे में एक मृत व्यक्ति कुर्सी पर पड़ा है। उसे मरे दस घंटे से अधिक हो चुके हैं। तुम भयभीत न हो।

वह आदमी कौन है और वह क्यों और कैसे मरा, इस बात से तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है। अब तुम्हें केवल यही करना है कि······।'

'नहीं, मैं आगे कुछ भी सुनना नहीं चाहता। तुमने जो कुछ भी मुझसे कहा है वह चाहे सच हो या झूठ। उससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। मैं तुम्हारे जीवन के किसी भी काम से सहयोग देना नहीं चाहता। तुम अपने भयंकर रहस्यों को अपने तक ही सीमित रखो। अब उनमें मेरी कोई भी दिलचस्पी नहीं है।'

'लेकिन इस काम में तुम्हें दिलचस्पी लेनी ही होगी। मुझे तुमसे यह काम कराते हुये दुख हो रहा है किन्तु इसके सिवा कोई दूसरा मार्ग भी तो नहीं है। इस समय केवल तुम्हीं मेरी रक्षा कर सकते हो। मैं तुम्हें इस झमेले में घसीटने के लिये विवश हो गया हूँ। इसे छोड़ कर मेरे और सभी मार्ग बन्द हो चुके हैं। तुम वैज्ञानिक हो सुधांशु। तुम रसायनों के सम्बन्ध में बहुत कुछ जानते हो। शवों पर तुमने अनेक प्रयोग किये हैं। आज भी तुम्हें यही करना है। ऊपर के कमरे में जो शव पड़ा हुआ है तुम्हें उसे नष्ट कर देना है। उस व्यक्ति को मेरे मकान में आते हुये किसी ने नहीं देखा है। लोग समझते हैं कि वह इस समय बम्बई में होगा। लेकिन वह अधिक दिनों तक लापता नहीं रह सकता। जब उसका पता चलेगा तब इस संसार में उसका कोई भी अवशेष बाकी नहीं रह जायगा। तुम्हें उस शव और उसकी प्रत्येक वस्तु को एक मुट्ठी राख में परिणत कर देना होगा सुधांशु, जिसे मैं हवा में उछाल कर अपना मन शान्त कर सकूँ।'

'क्या तुम पागल हो गये हो?' सुधांशु ने आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुये कहा, 'क्या आज तुम इस बात की तनिक सी भी आशा कर सकते हो कि मैं तुम्हारी सहायता करूँगा और तुम्हारे इन हीन और वीभत्स कार्य में तुम्हारा साथ दूँगा। वह शव चाहे किसी का भी हो, मुझे उससे कोई सम्बन्ध नहीं है। मैं तुम्हारे लिये समाज की आँखों में अपने को नीचा नहीं गिरा सकता।'

'लेकिन उसने आत्महत्या की है सुधांशु।'

'मुझे यह सुन कर खुशी हुई, लेकिन उसे ऐसा करने पर किसने बाध्य किया ? तुम्हीं ने न ?'

'क्या तुम अब भी मेरा यह काम करने से इन्कार करते हो ?'

'हाँ, मैं इन्कार करता हूँ। मैं इस सम्बन्ध में तुम्हारी कुछ भी सहायता नहीं कर सकता। समाज की नजरों में तुम कितना गिरोगे इसकी मुझे चिन्ता नहीं है। तुम इसी योग्य हो। तुम्हें जनता के सामने अपमानित करके फाँसी के तख्ते पर लटका दिया जायगा, तब भी मुझे दुख नहीं होगा। आज कोई भी शक्ति मुझसे तुम्हारी सहायता नहीं करा सकती। तुमने इसके लिये गलत आदमी चुना है। तुम अपने किसी दूसरे मित्र को अपने इस मायाजाल में फँसा सकते हो। मैं इससे अब पूर्णतया मुक्त हो चुका हूँ।'

'मैंने उसकी हत्या की है सुधांशु। तुम नहीं जानते उसके कारण मैंने कितना सहा है। मेरे जीवन को बनाने या बिगाड़ने में जितना हाथ कुँवर राजेन्द्र का था उससे कहीं अधिक इस व्यक्ति का हाथ रहा है।'

'हत्या ? हे ईश्वर ! क्या अब तुम इतनी नीचता पर उतर आये हो ? लेकिन मैं तुम्हारी शिकायत नहीं करूँगा। यह मेरा काम नहीं है। फिर भी एक दिन आयेगा जब तुम गिरफ्तार हो जाओगे। कोई न कोई गलती किये बिना कोई भी व्यक्ति अपराध नहीं करता। किन्तु मुझे उससे कोई मतलब नहीं है।'

'लेकिन इस सम्बन्ध में तुम्हें अवश्य ही कुछ करना पड़ेगा। एक क्षण मौन रह कर मेरी बात सुनो। मैं तुमसे अधिक कुछ नहीं चाहता। तुम्हें केवल एक वैज्ञानिक प्रयोग करना होगा। तुम अस्पतालों और मुर्दा-गृहों में जाते हो। वहाँ जो भयानक कार्य तुम करते हो उनका तुम पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। यदि तुम इस शव को भी किसी मुर्दा-गृह में पड़ा देखते और उसके हृदय से रक्त बह रहा होता तो तुम तुरन्त ही

उस पर प्रयोग करने में लग जाते। उसमें तुम्हें तनिक भी सङ्कोच नहीं होता। एक क्षण को भी तुम्हें आभास नहीं होता कि तुम कोई गलत काम कर रहे हो। उस समय तुम यही सोचते कि तुम मानव जाति के हित के लिये एक बड़ा काम कर रहे हो। मैं तुमसे केवल यही चाहता हूँ कि जो कुछ तुम सदा से करते आये हो, वही आज भी करो। निस्सन्देह एक शव को नष्ट करना तुम्हारे उन कामों से बहुत कम भयानक है, जिन्हें तुम नित्य ही सरलता से कर लेते हो। यदि इस शव का पता पुलिस को लग गया तो मैं नष्ट हो जाऊँगा। और अगर तुम मेरी सहायता नहीं करोगे तो पुलिस एक दिन इसका पता अवश्य लगा लेगी।'

'तुम्हारी सहायता करने की मेरी कोई इच्छा नहीं है। तुम्हारे इस वीभत्स कार्य में मैं कोई दिलचस्पी नहीं ले सकता।'

'मैं तुम्हारे पाँव पड़ता हूँ सुधांशु। मैं इस समय भारी सङ्कट में हूँ। तुम्हारे आने से पूर्व मैं भय के मारे बेहोश हुआ जा रहा था। उस भय को किसी दिन तुम भी अनुभव कर सकते हो। लेकिन नहीं, आज हमें भय की बात नहीं करनी है। हमें इस प्रश्न को केवल वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखना है। तुम्हें मेरे लिये आज यह काम करना ही होगा। तुम्हें याद है, एक दिन हम घनिष्ट मित्र थे। कम से कम उस दिन की उसी मित्रता के नाते मेरे इस कार्य से इन्कार मत करो।'

'उन दिनों की बात मत करो सुरेश। वे दिन सदा के लिये मर चुके हैं।'

'किन्तु उन दिनों की याद तो अब भी हमारे हृदयों में बसी है। ऊपर के कमरे में जो शव पड़ा हुआ है वह वहाँ से उठ कर कभी कहीं नहीं जायगा। वह मेज पर सिर झुका कर और हाथ फैला कर बैठा है। यदि आज तुमने मेरी सहायता नहीं की तो मैं बरबाद हो जाऊँगा। क्या तुम्हारे लिये यह समझना बहुत कठिन है सुधांशु कि एक दिन आयेगा

जब वे मुझे फाँसी पर लटका देंगे और मैं अपने पक्ष में एक शब्द भी नहीं कह सकूँगा।'

'लेकिन बात बढ़ाने से कोई लाभ नहीं। मैं कह चुका हूँ कि मैं इस सम्बन्ध में तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता। मुझसे ऐसी बातों के लिये कहना तुम्हारी मूर्खता के सिवा और कुछ भी नहीं है।'

'तो तुम इन्कार करते हो?'

'हाँ।'

'मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ सुधांशु।'

'वह व्यर्थ है।'

सुरेश की आँखों में जाने कैसा विचित्र सा भाव जाग्रत हो उठा। उसने जेब से हाथ निकाल कर सामने की मेज पर पड़ा हुआ कागज का एक टुकड़ा उठाया। इसके बाद उसने उस पर कुछ लिख कर उसे दो-तीन बार पढ़ा। फिर उसने कागज के उस टुकड़े को सुधांशु के हाथ में पकड़ा दिया और उठ कर खिड़की में जा खड़ा हुआ।

सुधांशु ने एक बार आश्चर्य से सुरेश की ओर देखा और फिर कागज के उस टुकड़े को लेकर पढ़ने लगा। किन्तु जैसे ही सुधांशु ने कागज पर लिखा वह वाक्य पढ़ा उसका चेहरा सफेद पड़ गया और वह मूर्छित सा होकर कुर्सी पर गिर पड़ा। उसके मन में भय की जाने कैसी भावना जागने लगी। उसे लगा जैसे उसका हृदय बैठा जा रहा है।

दो-तीन मिनट तक सुरेश चुपचाप खिड़की में खड़ा शून्य नेत्रों से बाहर की ओर देखता रहा। फिर वह सुधांशु के पीछे आ खड़ा हुआ और स्नेह से उसके कन्धों पर हाथ रख कर कहा, 'मुझे दुख है सुधांशु, तुमने मेरे लिये और कोई मार्ग ही शेष नहीं छोड़ा। मैंने एक पत्र पहले ही लिख लिया है। तुम उसका पता देख सकते हो। यदि तुम मेरी सहायता नहीं करोगे तो मैं आज ही इस पत्र को भेज दूँगा। तुम जानते हो इसका परिणाम क्या होगा? लेकिन मुझे आशा है कि तुम मेरी सहायता करोगे। अब तुम उससे इन्कार नहीं कर सकते। मैंने तुमसे प्रार्थना की।

लेकिन तुमने मुझे दुतकार दिया। तुमने मुझसे जैसा व्यवहार किया वैसा किसी भी व्यक्ति ने कभी भी नहीं किया था। मैं इसे सहन करता रहा। लेकिन अब मेरी बारी है। अब मैं अपनी शर्तें तुम्हें बताऊँगा।'

सुधांशु ने दोनों हाथों से अपना चेहरा छिपा लिया। उसकी आँखों से अविरल अश्रुधारा बह चली।

'हाँ, अब मैं तुम्हें अपनी शर्तें बताऊँगा सुधांशु। तुम जानते हो वे क्या हैं। मेरी बात बहुत सीधी है। या तो तुम्हें उस शव को नष्ट करना होगा या इस पत्र के परिणामों को भुगतना पड़ेगा। बताओ, तुम कौन सा मार्ग ठीक समझते हो?'

सुधांशु सिसकियाँ ले रहा था। भय के मारे उसके होठों से एक भी शब्द नहीं निकला। उसे लगा मानो उसके कन्धे पर रखे हुए सुरेश के हाथ लोहे के शिकंजे की तरह उसे जकड़ते जा रहे हैं। लज्जा की एक विचित्र सी भावना ने उस पर अपना अधिकार जमा लिया।

'अब समय नहीं है सुधांशु, तुम्हें जल्दी ही कोई फैसला करना होगा।'

'नहीं, मैं यह सब नहीं कर सकता,' सुधांशु के होठों से अनायास ही निकल पड़ा।

'लेकिन तुम्हें यह करना ही होगा। तुम्हारे सामने अब कोई भी दूसरा मार्ग नहीं है। तुम जानते हो, इस काम में जरा सा विलम्ब भी तुम्हारे सारे जीवन को नष्ट करने के लिये काफी है।'

एक क्षण को सुधांशु हिचका, फिर उसने कहा, 'क्या ऊपर के कमरे में आग का प्रबन्ध हो सकेगा?'

'हाँ, वह प्रबन्ध मैं कर लूँगा।'

'लेकिन एक बार मुझे घर जाना पड़ेगा। यहाँ मेरे पास कोई भी रसायन नहीं है।'

'नहीं, अब तुम इस मकान से बाहर नहीं जा सकते। तुम्हें जो कुछ चाहिये एक कागज पर लिख दो। मेरा नौकर अभी जाकर सब कुछ ले आयेगा।'

सुधांशु ने कागज पर कुछ पंक्तियाँ लिखी और लिफाफे पर अपने सहायक का पता लिख कर सुरेश के हाथ में पकड़ा दिया। सुरेश ने पत्र खोल कर ध्यान से पढ़ा और फिर उसे नौकर के हाथ सुधांशु के घर भेज दिया।

सुधांशु का मन बेचैन हो रहा था। वह उठ कर कमरे में टहलने लगा। जो भयंकर काम आज वह करने जा रहा है उसकी कल्पना मात्र से ही उसका मन बार-बार काँप उठता था। लगभग बीस मिनट तक कमरे में शान्ति छाई रही। किसी के मुख से एक भी शब्द नहीं निकला।

बहुत देर बाद एक बार सुधांशु ने सुरेश की ओर देखा। उसने देखा कि उसकी आँखों में आँसू भरे हैं।

सुरेश ने बहुत ही धीमे स्वर में कहा, 'तुमने मेरी रक्षा की है सुधांशु, तुमने मेरा जीवन बचा लिया है।'

'तुम्हारा जीवन ! तुम्हारा जीवन भी क्या है ? दुनिया में तुमने कौन सा पतित काम नहीं किया ! आज मुझे तुम्हारी चिन्ता नहीं है। मैं तुमसे घृणा करता हूँ। मैं अपने स्वार्थ के लिये ही तुम्हारी सहायता कर रहा हूँ।'

सुरेश ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। उसके अधरों से एक गहरी साँस निकल गई। वह मूक नेत्रों से बाहर उद्यान में देखने लगा।

लगभग दस मिनट के बाद नौकर ने कमरे में प्रवेश किया। उसके हाथ में एक बड़ा सा बक्स था जिसमें विभिन्न रसायन तथा यन्त्र भरे हुये थे।

'मुझे ये चीजें कहाँ रखनी होंगी,' नौकर ने सुधांशु से प्रश्न किया।

किन्तु सुधांशु के बोलने से पहले ही सुरेश ने कहा, 'यह बक्स यहीं रख दो। तुम आज कह रहे थे कि तुम्हें कुछ घण्टों की छुट्टी चाहिये।

तुम इस समय जा सकते हो। आज शाम तक मुझे कोई विशेष काम नहीं है। लेकिन तुम पाँच बजे तक तो जरूर ही लौट आओगे न।'

नौकर ने सिर हिला कर अपनी स्वीकृति दे दी और कमरे से बाहर चला गया।

सुरेश ने भीतर से दरवाजा बन्द करते हुये पूछा, 'तुम्हें वह प्रयोग करने में कितना समय लगेगा सुधांशु ?'

'उसमें पाँच घंटे से कम नहीं लगेंगे।

''तो फिर आओ। अब हमें एक क्षण भी नहीं खोना चाहिये। यह बक्स कितना भारी है। लेकिन मैं इसे अकेला ही उस कमरे तक ले जा सकता हूँ। तुम दूसरी चीजें अपने साथ ले चलो।' सुरेश का स्वर दृढ़ था। सुधांशु को लगा मानों वह उस स्वर के नीचे दबता जा रहा है।

कुछ ही देर में वे दोनों उस कमरे के सामने पहुँच गए। सुरेश ने जेब से चाबी निकाल कर कमरा खोल दिया। एक क्षण को वह रुका। उसके हाथ काँप रहे थे।

उसने कंपित स्वर में कहा, 'मैं भीतर नहीं जा सकता, मुझे भय लगता है।'

'मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं है। मैं अकेला ही सब कुछ कर सकता हूँ।'

सुरेश ने धीरे से द्वार खोला। उसने देखा कि उसका चित्र सूर्य के प्रकाश में चमक रहा है। उसी के पास जमीन पर वह फटा हुआ मूल्यवान पर्दा पड़ा है। एक बार वह काँप गया। जीवन में पहले ऐसा कभी नहीं हुआ। वह इस चित्र के प्रति इतना उदासीन कभी नहीं रहा। एक क्षण बाद ही सुधांशु की निगाह इस चित्र पर पड़ेगी और तब······। तब क्या होगा ?

उसने देखा कि चित्र के दाहिने हाथ पर रक्त के समान कोई लाल चीज चमक रही है। उसे लगा मानों चित्र के हाथों से रक्त टपक रहा है। ओह, यह कितना भयंकर है। उसने देखा कि हेमन्त का शव अब भी

उसी प्रकार मेज पर पड़ा है। उसके दोनों हाथ आगे की ओर फैले हुये हैं और उसका रक्त निकल कर मेज और जमीन पर जम गया है।

उसने एक गहरी साँस ली और द्वार खोल दिये। इसके बाद वह तेजी से भीतर घुस गया और वह फटा हुआ पर्दा उठा कर चित्र पर टाँग दिया। उसने निर्णय किया कि वह एक बार भी शव की ओर नहीं देखेगा।

उसने देखा कि सुधांशु अपना भारी बक्स और कई बड़े-बड़े यंत्र भीतर ला रहा है। बहुत देर तक वह चुपचाप खड़ा उसे देखता रहा। एक क्षण बाद ही उसके उस परम मित्र के सभी अवशेष नष्ट हो जायँगे जो एक दिन उसे सबसे अधिक प्रिय था। वह एक पल में ही उसके सामने गल-गल कर समाप्त हो जायगा। यह उसका कैसा भाग्य है !'

तभी उसने पीछे से सुना। सुधांशु कठोर स्वर में कह रहा था, 'मुझे अकेला छोड़ दो। अब मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं है।'

सुरेश एक शब्द कहे बिना ही कमरे से बाहर हो गया। उसने देखा कि सुधांशु पीड़ा और भय मिश्रित नयनों से हेमन्त के पीले मुख की ओर देख रहा है। जैसे ही सुरेश कमरे से बाहर निकला सुधांशु ने भीतर से द्वार बन्द कर लिये।

शाम को लगभग पाँच बजे सुधांशु ने द्वार खोले और वहाँ से निकल कर सुरेश के ड्राइङ्गरूम में प्रवेश किया। उसका चेहरा पीला और शान्त था। उसने बहुत ही धीमे स्वर में कहा, 'जो कुछ तुमने कहा था, वह मैंने कर दिया है। अब हम कभी एक दूसरे से नहीं मिलेंगे।'

'तुमने मेरी रक्षा की है सुधांशु। जीवन में तुम्हारी इस कृपा को मैं कभी नहीं भुला सकता।'

सुधांशु ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप कमरे से बाहर निकल गया।

सुरेश ने देखा ऊपर सारा कमरा रसायनों की गन्ध से भर रहा था किन्तु हेमन्त के शव का वहाँ कहीं पता नहीं था।

१४

दूसरे दिन सुबह सुरेश उठ कर नाश्ता करने बैठा ही था कि कुँवर राजेन्द्र ने कमरे में प्रवेश किया। कल शाम की उस घटना की छाप सुरेश के चेहरे पर अब भी स्पष्ट अंकित थी। उसका चेहरा सफेद और उदास था। किन्तु वह फिर भी हँसने का प्रयत्न कर रहा था। कोई भी अनजान व्यक्ति उसे देख कर यह नहीं कह सकता था कि एक दिन पूर्व ही उसकी उन कोमल और सुन्दर अँगुलियों ने किसी के रक्त में अपने को अपवित्र किया है। ऊपर से वह पूर्णतया शान्ति दिखाई देता था। उसे स्वयं आश्चर्य हो रहा था कि वह ऐसा कैसे बन गया है।

कुँवर राजेन्द्र सुरेश के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया। सुरेश ने चाय का प्याला बना कर उसकी ओर बढ़ाते हुये कहा, 'शायद इतनी सुबह उठने का तुम्हारे जीवन में यह पहला ही अवसर है राजेन्द्र। तुम इतनी जल्दी आ सकते हो, इसकी तो मैं कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था।'

कुँवर राजेन्द्र इसके उत्तर में केवल मुस्करा दिया। कुछ देर तक वह चुपचाप सुरेश को देखता रहा। उसकी अनुभवी आँखों से सुरेश की वह उदासी छिपी न रही। अन्त में उसने पूछा, 'आज तुम बड़े उदास दीखते हो सुरेश, क्या बात है?'

'नहीं, कोई विशेष बात नहीं है। रात सिर दर्द था। इसीलिये नींद ठीक से नहीं आई। लो, एक प्याला चाय और लो,' सुरेश ने राजेन्द्र के प्याले में चाय उड़ेलते हुये कहा।

'क्या तुम समझते हो कि मैं तुम्हारी इस बात पर आँखें मूँद कर

विश्वास कर लूँगा ? नहीं, लोगों की बातों पर यूँ ही विश्वास कर लूँ, ऐसा अभागा मैं नहीं हूँ। बताओ, क्या तुम किसी से प्रेम करने लगे हो।'

'नहीं राजेन्द्र,' सुरेश ने तनिक सा हँस कर उत्तर दिया, 'मैंने गत एक सप्ताह से किसी से प्रेम नहीं किया है। जब से लीला नगर छोड़ कर गई, मुझे किसी लड़की ने आकर्षित ही नहीं किया।'

'हाँ लीला तुम्हारे कारण अपने पति को छोड़ कर चली गई। जब उसने अपने पति को छोड़ा तब तुमने भी उसे छोड़ दिया। मैं देखता हूँ कि तुम जीवन को अब पूर्णतया समझने लगे हो। अब लीला कभी विवाह नहीं करेगी। उसका पति भी शायद दूसरा विवाह न करे। वे दोनों ही विवाह के बन्धनों और कटुता को खूब समझ गये हैं। स्त्रियाँ दूसरी शादी इसलिये करती हैं क्योंकि वे अपने पहले पति से घृणा करती थीं और पुरुष दूसरा विवाह इसलिये करता है क्योंकि वह अपनी पहली पत्नी की भक्ति करता था। ऐसा करके स्त्रियाँ अपना भाग्य अजमाती हैं और पुरुष अपने को खतरे में डालता है। लेकिन शायद तुम मेरी बातों में दिलचस्पी नहीं ले रहे हो। बताओ तुम्हें कौन सी शंका सता रही है ?'

'नहीं, मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मैं थक गया हूँ। इससे अधिक मुझे कुछ भी नहीं हुआ है।'

'क्या कल शाम तुम क्लब गये थे ?'

'हाँ,' कहते-कहते सुरेश रुक गया, 'नहीं, मैं क्लब नहीं गया था। कल शायद मैं घूमने गया था। मुझे ठीक याद नहीं आ रहा है कि कल मैंने क्या किया था। लेकिन तुम भी कितने विचित्र हो राजेन्द्र। तुम सदा यही जानना चाहते हो कि दूसरे लोग क्या कर रहे हैं। और मैं जो कुछ कर रहा हूँ उसे सदा ही भूल जाना चाहता हूँ। यदि तुम जानना ही चाहते हो तो सुनो, कल रात मैंने सवा दो बजे अपने घर में प्रवेश किया। मकान की चाबी मैं घर पर ही भूल गया था। इसलिये

मुझे नौकर को जगाना पड़ा। यदि तुम कोई सबूत चाहते हो तो इस सम्बन्ध में नौकर से पूछ सकते हो।'

कुँवर राजेन्द्र ने अपने कन्धे हिलाये। उसने सुरेश की आँखों में आँखें डालते हुये कहा, 'मुझे किसी सबूत की जरूरत नहीं, लेकिन मैं इतना विश्वास से कह सकता हूँ कि आज तुम्हें अवश्य ही कुछ हुआ है। मुझे बताओ वह कौन-सी बात है जो तुम्हें इतना चिंतित किये हुये है? आज तुम निश्चय ही अपने वश में नहीं हो।'

'तुम मेरी चिन्ता मत करो। आज मैं सचमुच ही चिड़चिड़ा हो रहा हूँ। मैं कल या परसों तुमसे अवश्य मिलूँगा। इस समय मैं अकेला रहना चाहता हूँ।'

'ठीक है,' राजेन्द्र ने उठते हुये कहा, 'मैं जा रहा हूँ। लेकिन कल शाम को तुम्हें मेरे यहाँ अवश्य आना होगा। कल मेरे यहाँ राजकुमारी की चाय है। राजकुमारी सचमुच ही बहुत सुन्दर है सुरेश।' राजेन्द्र सुरेश की ओर कनखियों से देख कर मुस्करा दिया। और सुरेश के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही कमरे से बाहर निकल गया।

जैसे ही राजेन्द्र ने कमरे से बाहर पाँव रखा सुरेश को लगा मानों उसका हृदय धड़क रहा है। अपने मन की जिस भावना को खत्म करने के लिये वह रात भर संघर्ष करता रहा है, उस भावना ने अब अनायास ही उस पर अपना अधिकार जमा लिया। कुंवर राजेन्द्र के प्रश्नों ने उसे एक क्षण के लिये भयभीत कर दिया था।

वह सभी खतरनाक चीजों को नष्ट कर देगा। उसे याद आया कि उसने हेमन्त का कोट और एटेची अपने गुप्त कमरे में रख दिया था। उसने सामने देखा। अँगीठी से अग्नि की लपटें धूँ-धूँ करके निकल रही थीं। उसमें उसने लकड़ी के कुछ और टुकड़े डाल दिये। अग्नि प्रचण्ड हो उठी। इसके बाद उसने हेमन्त का सारा सामान अँगीठी में डालना प्रारम्भ किया। कपड़ों और चमड़े की दुर्गन्ध से सारा कमरा भर गया।

लगभग एक घंटे के भीतर उसने हेमन्त की सभी चीजों को आग की भेंट कर दिया।

अब उसने शान्ति की साँस ली। उसने अपने मन को टटोला। वहाँ भय की भावना अब भी विद्यमान थी। वह शीशे के सामने जा खड़ा हुआ और उसमें गौर से अपना चेहरा देखने लगा।

नहीं, उस पर किसी को सन्देह नहीं हो सकता। अब दुनिया की कोई शक्ति यह साबित नहीं कर सकती कि उसने हेमन्त की हत्या की है।

जाने कब तक वह इन्हीं विचारों में खोया रहा। जब उसने घड़ी की ओर देखा तो शाम के पाँच बज रहे थे। उसने जल्दी से कपड़े पहने और घर से बाहर निकल गया।

अब उसके अधरों पर हँसी नाच रही थी। आज उसने अपना सबसे बढ़िया सूट पहना था। उसे देख कर कोई नहीं कह सकता था कि वह कोई भयंकर अपराध करके आ रहा है। सुरेश के मन में विश्वास बढ़ रहा था। उसने एक बार चारों ओर देखा और मुस्करा दिया।

× × ×

थोड़ी ही देर में आकाश पर बादल घुमड़ आये और नन्हीं-नन्हीं बूँदें पड़ने लगीं। कुहरे के आवरण में छुपे हुये सड़क के बिजली के लैंप बड़े विचित्र लग रहे थे। धीरे-धीरे मकानों की खिड़कियाँ बन्द होने लगीं और सड़कें सूनी हो गईं। किन्तु कुछ मदिरालयों के भीतर से अब भी अट्टहासों का भयानक स्वर निकल रहा था। उसने एक मदिरालय में झाँक कर देखा। वहाँ दो-तीन शराबी एक कोने में पड़े हुये कराह रहे थे।

वह बहुत देर तक शून्य नेत्रों से मानव की उस लज्जाजनक बात को देखता रहा। उसके मन में कुँवर राजेन्द्र के वे शब्द चक्कर लगाने लगे। एक दिन उसने कहा था, 'हमें आत्मा को अनुभूति से और अनुभूति को आत्मा से सुधारना चाहिये।' हाँ, यही जीवन का सच्चा

रहस्य है। उसने कई बार इस पर प्रयोग किये हैं। वह आज फिर उस पर प्रयोग करेगा।

नगर में गन्दे मदिरालयों की कमी नहीं है। वहाँ पापों के रंग में रँग कर मनुष्य अपने को भूल जाता है। वहाँ नये पापों के पागलपन में पुराने पापों की स्मृति नष्ट हो जाती है।

अन्धेरा गहन होता जा रहा था। और सड़क के लैंपों का प्रकाश धीमा पड़ गया था।

'अनुभूतियों से आत्मा का और आत्मा से अनुभूतियों का सुधार।' उसके कानों में ये शब्द कुछ विचित्र से लगने लगे। निसन्देह उसकी आत्मा निष्प्राण हो गई है। क्या अनुभूति उसे एक बार फिर जीवित कर सकती है? उसने एक निरपराध का रक्त बहाया है। क्या उसका कोई पश्चाताप हो सकता है? नहीं, वह पाप किसी प्रकार भी धोया नहीं जा सकता। लेकिन उस पाप को भूल जाना अब भी सम्भव है। हेमन्त को उससे ऐसी बातें करने का क्या अधिकार था? उसे दूसरों के कामों में हस्तक्षेप करने का हक किसने दिया? उसने ऐसी बातें कहीं जो अत्यन्त भयंकर थीं और जिन्हें कभी भी सहन नहीं किया जा सकता था।

अब उसके पाँव तेजी से आगे की ओर बढ़ रहे थे। उसे लगा मानों मदिरा की प्यास उसके जीवन में तीव्रतर होती जा रही है। उसका गला जल रहा था और उसके पाँव निर्जीव हुये जा रहे थे।

और जब गन्दी और छोटी गलियाँ पार करता हुआ वह निम्न श्रेणी के उस रेस्टूराँ के सामने पहुँचा तो रात के दस बज चुके थे।

उसने एक बार चारों ओर देखा। सामने के मकान की चिमनी से काला धुआँ बल खाता हुआ धीमे-धीमे आकाश की ओर उड़ रहा था। रेस्टूराँ के भीतर से आने वाली दुर्गन्ध से एक बार उसका मन भर उठा। तभी एक आदमी वहाँ से निकला और सीढ़ियों से लड़खड़ाकर नीचे गिर पड़ा। उसके निकलते ही रेस्टूराँ के द्वार फिर बन्द हो गये।

सुरेश उसे देख कर मुस्करा दिया। आज मानव के पतन का वह भरपूर आनन्द लेना चाहता था।

उसने आगे बढ़ कर दरवाजे के बाहर लगी घंटी बजाई। थोड़ी देर बाद उसे भीतर से पग-ध्वनि सुनाई दी और किसी ने तुरन्त ही द्वार खोल दिया। सुरेश ने एक शब्द कहे बिना ही भीतर प्रवेश किया। भीतर एक बड़ा सा कमरा था। उसी कमरे के अंत में एक गहरा हरा पर्दा लटका हुआ था जो खिड़की से आने वाली हवा से लहरा रहा था। सुरेश ने पर्दा हटाया और उसके भीतर घुस गया। वह एक लम्बा और पतला कमरा था। उसमें चारों ओर शीशे लगे हुये थे और मोमबत्तियों का धीमा प्रकाश हो रहा था। इन मैले और टूटे हुये शीशों में मोमबत्ती का प्रकाश बड़ा विचित्र लग रहा था। फर्श पर दरी बिछी हुई थी जिस पर मिट्टी की मोटी तह जम गई थी और जगह-जगह मदिरा के गिर जाने से काले दाग पड़ गये थे। एक ओर कुछ व्यक्ति जमीन पर बैठे मदिरा पी रहे थे। कभी-कभी उनमें से कोई जोर से ठठाकर हँस पड़ता और कोई सिसकियाँ भरने लगता।

कमरे के दूसरे कोने में एक मेज पर सिर रखे कोई नाविक बैठा था। उसके हाथ उसके सिर के दोनों ओर फैले थे जिससे उसका चेहरा दिखाई नहीं देता था।

दूसरी ओर दो गन्दी युवतियाँ किसी वृद्ध से झगड़ रही थीं। वृद्ध के चेहरे पर निराशा और व्यथा के भाव स्पष्ट अंकित थे।

इस कमरे के अंत में एक छोटी सी सीढ़ी थी जो एक अँधेरे कमरे में प्रवेश करती थी। जैसे ही सुरेश आगे बढ़ा उसका मस्तिष्क अफीम की तेज गन्ध से भर गया। उसके अधरों पर अनायास ही हँसी की रेखा फूट पड़ी। उस पर नशा छाने लगा। उसका मन उल्लास से भर गया।

जब सुरेश ने इस कमरे में प्रवेश किया तो एक युवक मोमबत्ती पर झुका हुआ सिगरेट सुलगा रहा था। सुरेश ने उसे देखते ही कहा, 'अरे सुधीर तुम यहाँ हो?'

'इसके अतिरिक्त मैं हो भी कहाँ सकता था,' सुधीर ने भावहीन स्वर में कहा, 'अब हमारे सभ्य समाज का कोई भी व्यक्ति मुझसे नहीं बोलेगा।'

'मैं तो सोचता था कि तुम नगर छोड़ कर चले गये हो।'

'मधोक ने मेरी कोई भी सहायता करने से इन्कार कर दिया। अंत में मेरे भाई ने मेरा सारा कर्जा चुकाया। सुन्दरम् भी अब मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहता। लेकिन मैं उनकी चिन्ता नहीं करता। जब तक मदिरा और अफीम मेरे पास है, मुझे मित्रों की जरूरत नहीं है।'

सुरेश स्तब्ध रह गया। उसने एक बार चारों ओर देखा। उस गन्दे फर्श पर चारों ओर आदमियों के झुण्ड पड़े हुये थे। उनके अकड़े हुये हाथों, खुले हुये मुँह और प्रकाशहीन आँखों ने एक बार सुरेश को मंत्रमुग्ध सा कर दिया। उसे लगा मानों वे अपना सारा दुख-दर्द भूल गये हैं। उनका अतीत और भविष्य वर्तमान में ही एकाकार हो गया है। एक बार सुरेश को इनसे ईर्ष्या होने लगी। वे लोग उससे बहुत अच्छे हैं। वह अपने विचारों का बंदी है। वह भयंकर स्मृति उसकी आत्मा को खाये जा रही है। उसे लगता है मानो हेमन्त अपनी क्रूर आँखों से उसे निहार रहा है। उसका नशा निरन्तर बढ़ने लगा।

किन्तु वह तब भी यहाँ नहीं ठहर सकेगा। सुधीर की उपस्थिति उसके मन को पीड़ित कर रही है। वह ऐसी जगह जाना चाहता है जहाँ उसे कोई न देख सके, कोई न पहचान सके। आज वह स्वयं से भी भयभीत हो उठा है।

'मैं किसी दूसरी जगह जा रहा हूँ,' उसने थोड़ी देर बाद कहा।

'कहाँ? समुद्र तट पर बसे रेस्ट्राँ में?'

'हाँ।'

'वह बेहूदी औरत भी वहाँ जरूर होगी। अब रेस्ट्राँ का मालिक उसे यहाँ नहीं आने देता।'

सुरेश ने अपने कन्धे हिलाये। उसने कहा, 'जो स्त्रियाँ किसी से प्रेम

करती हैं मैं उन्हें कभी पसन्द नहीं करता। दूसरों से घृणा करने वाली स्त्रियाँ उनसे कहीं अधिक अच्छी होती हैं। लेकिन बताओ, तुम क्या पियोगे? मुझे कुछ पीने की इच्छा हो रही है।'

'नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिये,' सुधीर ने धीरे से कहा।

'इतने दिन बाद मिले हो और फिर भी साथ बैठ कर कुछ नहीं पियोगे, ऐसी अनहोनी बात तो कभी हो नहीं सकती।' सुरेश एक बार हँसा और फिर सुधीर का हाथ पकड़ कर सामने वाली मेज पर ले गया। इसके बाद उसने मदिरा के दो गिलास मँगाए और एक सुधीर की ओर बढ़ा कर दूसरा स्वयं पीने लगा।

कुछ देर बाद सुधीर ने कहा, 'मैं यहाँ से जाना नहीं चाहता। मेरे लिये संसार में कहीं भी जगह नहीं है। अब दुनिया में मेरा अपना कहने को कोई भी नहीं बचा है। मैं यहाँ बहुत खुश हूँ।'

'यही ठीक है, लेकिन आज एक बात कहता हूँ सुधीर। यदि जीवन में कभी भी किसी चीज की आवश्यकता पड़े तो मुझे लिखना न भूलना। मैं जैसे भी होगा तुम्हारी माँग अवश्य पूरी करूँगा। बोलो तुम मुझ पर विश्वास कर सकोगे?'

'शायद कर सकूँ।'

'अच्छा अब विदा दो, शायद जीवन में फिर किसी दिन इसी तरह भेंट हो जाय।'

सुधीर ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। सुरेश की आँखों में जाने क्यों वेदना का गहरा भाव सिमट आया। वह चुपचाप उठ कर दरवाजे की ओर चल दिया।

तभी एक अधेड़ स्त्री उसके सामने आ खड़ी हुई। और उसे देख कर मुस्कराने लगी। उसके मुँह से मदिरा की गन्ध आ रही थी। उसकी आँखों में निमंत्रण था। उसने सुरेश का हाथ पकड़ कर कहा, 'आज हमारे अहोभाग्य हैं जो तुम यहाँ आये।'

सुरेश की आँखों में घृणा नाचने लगी। उसने क्रोध से स्त्री का हाथ

झटक कर कहा, 'मेरी चापलूसी मत करो, तुम्हें रुपया चाहिये न ? लो और अपने अपवित्र हाथों को मुझसे दूर रखो।' सुरेश ने जेब से दो तीन नोट निकाल कर स्त्री के मुँह पर फेंक दिये और तेजी से दरवाजे की ओर बढ़ा।

किन्तु जैसे ही उसने बाहर जाने के लिये पर्दा उठाया वैसे ही उस स्त्री के रँगे हुये होंठों से भयंकर अट्टहास फूट पड़ा। 'वह शैतान का छोटा भाई है,' उसने अपनी भारी और तेज आवाज में कहा।

सुरेश की आँखों में क्रोध नाच उठा। उसने कहा, 'चुप रहो, तुम्हें ऐसी बातें करते लज्जा नहीं आती।'

स्त्री के मुख पर क्रूरता नाचने लगी। उसने अपने हाथों को अनोखे अन्दाज में हिला कर कहा, 'यदि मैं भूल नहीं रही हूँ तो तुम 'राजा' हो न ? लड़कियाँ तुम्हें इसी नाम से पुकारती थीं। क्यों, मैं झूठ तो नहीं कह रही हूँ ?'

जैसे ही स्त्री के मुख से ये शब्द निकले वैसे ही मेज पर पड़ा हुआ वह नाविक एकदम से चौंक उठा। उसकी आँखों में दीवानगी भरी थी। उसने एक बार चारों ओर देखा। उसके कानों में बाहर के द्वार बन्द होने की आवाज आई। वह तुरन्त ही उठ कर बाहर की ओर चल दिया। लगा जैसे वह किसी का पीछा करने को उठा हो।

बाहर वर्षा होने लगी थी। सुरेश मकानों के नीचे होता हुआ तेजी से आगे बढ़ने लगा। सुधीर को इस स्थान पर देख कर वह विचलित हो उठा था। वह सोच रहा था कि क्या सुधीर की इस बरबादी का उत्तरदायित्व उसी पर है। सुधीर एक अच्छा और धनिक युवक था और आज "...। आज वह नगर के इस सबसे छिछले रेस्ट्राँ में मदिरा और अफीम के नशे में बेसुध पड़ा है। उसे उस नर्क में ही सुख मिलता है। वह उससे बाहर निकलना नहीं चाहता। तो क्या उसे बिगाड़ने का सारा उत्तरदायित्व उसी पर है ? नहीं, वह उसे स्वीकार नहीं कर सकता। दूसरों के पापों को अपने कन्धों पर ढोने का आदी वह नहीं है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने तरीके से अपना जीवन व्यतीत करता है और उसके लिये जो मूल्य देना पड़ता है वह उसे स्वयं चुकाता है। लेकिन विधि का विधान बड़ा विचित्र है। मनुष्य को अपने एक पाप का मूल्य बार-बार चुकाना पड़ता है।

उसका मन विद्रोह करने लगा। वह ईश्वर पर विश्वास नहीं करता। वह मनुष्य के छोटे पापों की बहुत बड़ी सजा देता है।

सुरेश के पाँव अब तेजी से बढ़ रहे थे। किन्तु जैसे ही वह उस अँधेरी गली में मुड़ा वैसे ही किसी ने पीछे से उसे जोर का धक्का दिया। उसे लगा मानों किसी के मजबूत हाथ जोर से उसका गला दबा रहे हैं।

वह उन हाथों से छुटकारा पाने के लिये छटपटाने लगा। बहुत देर के संघर्ष के बाद वह उस चंगुल से मुक्त हुआ। उसके मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला। वह भय और वेदना से अब भी काँप रहा था। तभी उसने पिस्तौल खुलने की आवाज सुनी और दूसरे ही क्षण देखा कि पिस्तौल की चमकदार नली उसके सिर से छू रही है।

'तुम क्या चाहते हो?' उसने कंपित स्वर में पूछा।

'चुप रहो,' उस आदमी ने कठोर स्वर में कहा, 'यदि तुम जरा भी हिले तो मैं तुम्हें गोली मार दूँगा।'

'क्या तुम पागल हो। मैंने तुम्हारा क्या किया है?'

'तुमने पार्वती का जीवन नष्ट किया है,' उस आदमी ने कहा, 'और पार्वती मेरी बहन थी। उसने आत्महत्या कर ली। मैं सब जानता हूँ। मैं तुमसे उसका बदला लूँगा। जब तक मैं तुम्हारी हत्या नहीं करूँगा मुझे चैन नहीं मिलेगी। मैं वर्षों से तुम्हें खोज रहा हूँ। लेकिन मुझे अभी तक तुम्हारा पता नहीं चला था। दो व्यक्ति, जो तुम्हें जानते थे अब मर चुके हैं। तुम रात के अँधेरे में छिप कर पाप करते हो। इसलिये यहाँ तुम्हारा असली नाम कोई नहीं जानता। पार्वती तुम्हें 'राजा' कहा करती थी। मैं उसी नाम से तुम्हें पहचानता हूँ। आज मैंने भाग्य से

ही वह नाम सुन लिया है। आज मैं तुम्हारी हत्या करके ही सन्तोष की साँस लूँगा।'

सुरेश भय से सफेद पड़ गया। उसने हकलाते हुए कहा, 'मैं पार्वती को नहीं जानता। मैंने उसका नाम कभी भी नहीं सुना। शायद तुम्हें भ्रम हो गया है।'

'तुम्हें अपने पापों को स्वीकार कर लेना चाहिये था। लेकिन मुझे विश्वास है कि पार्वती ने तुम्हारे कारण ही आत्महत्या की है। मैं आज अवश्य ही तुमसे उसका बदला लूँगा।'

ये क्षण बड़े भयकर थे। सुरेश की समझ में कुछ भी नहीं आया कि वह क्या कहे और क्या करे।

'मैं तुम्हें एक मिनट का समय देता हूँ,' उस आदमी ने अपनी भारी आवाज में कहा, 'तुम चाहो तो ईश्वर से प्रार्थना कर सकते हो। मुझे आज ही रात को जहाज पर विदेश जाना है। मैं उससे पहले ही तुम्हारा काम समाप्त कर दूँगा।'

सुरेश के ऊपर उठे हुए हाथ गिर गए। अब उनमें शक्ति शेष नहीं रह गई थी। तभी उसके मस्तिष्क में आशा की एक किरण कौंध गई।

उसने जोर से चिल्ला कर कहा, 'मेरी हत्या करने से पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर दो, बताओ तुम्हारी बहन को मरे कितना समय हुआ?'

'अट्ठारह वर्ष,' उस आदमी ने कहा, 'लेकिन तुम मुझसे यह क्यों पूछ रहे हो। मेरे सामने वर्षों का कोई महत्व नहीं है।'

'अट्ठारह वर्ष।' सुरेश एक बार जोर से हँसा। उसके स्वर में विजय की छाप स्पष्ट अंकित थी। उसने कहा, 'मुझे लैंप के नीचे ले जाकर मेरा चेहरा देखो। क्या मेरे जीवन से अट्ठारह वर्ष पुरानी किसी प्रेम कहानी का सम्बन्ध हो सकता है?'

मधुकर एक क्षण को हिचका। उसकी समझ में नहीं आया कि सुरेश का अभिप्राय क्या है। इसके बाद वह उसे धक्का देता हुआ सड़क पर लगे लैंप के नीचे ले आया।

धीमी-धीमी बयार से लैंप का प्रकाश काँप रहा था। उसी प्रकाश में मधुकर ने एक बार गौर से सुरेश के चेहरे की ओर देखा। वह उसे अवाक् देखता रह गया। जिस आदमी की वह हत्या करने जा रहा था उसमें तो अभी यौवन भी पूर्ण रूप से विकसित नहीं हुआ। उसके चेहरे पर तो शैशव की पवित्रता अब भी विद्यमान है। उसके मुख पर कुटिलता का कहीं नाम भी नहीं है।

मधुकर को लगा मानों सुरेश की आयु बीस वर्ष से एक दिन भी अधिक नहीं है। उसे विश्वास हो गया कि यह वह आदमी कभी भी नहीं हो सकता। उसे कितना बड़ा भ्रम हुआ है। उसका शिकंजा ढीला पड़ गया। उसने पश्चाताप के स्वर में कहा, 'हे ईश्वर, यदि मैं तुम्हारी हत्या कर देता।'

सुरेश ने सन्तोष की साँस ली। तूफ़ान शान्त हो गया था। उसने संयत स्वर में कहा, 'तुम अभी एक भयंकर अपराध करने जा रहे थे। तुम्हें भविष्य में ऐसा काम कभी नहीं करना चाहिए।'

'मुझे क्षमा कर दीजिए,' मधुकर ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, 'मुझे सचमुच ही धोखा हुआ है।'

'अच्छा, अब तुम्हें घर लौट जाना चाहिए। नहीं तो हो सकता है तुम संकट में पड़ जाओ,' सुरेश ने गली के दूसरी ओर धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए कहा।

मधुकर सड़क पर खड़ा हुआ आतंक से उसकी ओर देखता रह गया। वह सिर से पाँव तक काँप रहा था।

कुछ ही देर बाद एक काली-सी छाया अँधेरे से निकल कर उसके सामने आ खड़ी हुई। उसने धीरे से उसके कन्धे पर हाथ रखा। मधुकर एकदम से चौंक पड़ा। वह एक स्त्री थी जो उसी गन्दे मदिरालय में बैठी मदिरा पी रही थी।

'तुमने उसकी हत्या क्यों नहीं की?' स्त्री ने अपना मुँह मधुकर के मुँह के बिल्कुल पास लाकर धीमे से कहा, 'मैं जानती हूँ कि तुम उसका

पीछा कर रहे थे। तुम मूर्ख हो। तुम्हें उसकी हत्या कर देनी चाहिए थी। उसके पास बहुत धन है और वह बहुत बुरा आदमी भी है।'

'लेकिन वह आदमी नहीं है जिसकी मैं खोज कर रहा था। मैं किसी का धन नहीं चाहता। मैं एक आदमी का जीवन चाहता हूँ। मैं जिस आदमी का जीवन चाहता हूँ वह इस समय लगभग चालीस वर्ष का होगा। और इसमें तो अभी यौवन भी पूर्ण रूप से नहीं फूटा है। अच्छा हुआ जो आज मेरे हाथ एक बेकसूर के रक्त से नहीं रँगे।'

स्त्री की कर्कश हँसी एक बार सूनी गलियों में दूर तक गूँज गई। उसने कहा, 'वह बालक है? मेरी ओर देखो। उसी ने मेरी यह दशा की है और मैं अट्ठारह वर्षों से इसी प्रकार का पतित जीवन बिता रही हूँ।'

'तुम झूठ बोलती हो।'

स्त्री ने आकाश की ओर अपना हाथ उठा कर कहा, 'मैं ईश्वर की शपथ खाकर कहती हूँ कि जो कुछ मैंने कहा है वह बिल्कुल सच है।'

'तुम ईश्वर की शपथ लेती हो?'

'हाँ, मेरा विश्वास करो। यहाँ आने वाले आदमियों में वह सबसे खराब है। आज से अट्ठारह वर्ष पूर्व एक दिन सभ्य समाज में उससे मेरी भेंट हुई थी। मैं उसे तभी से देखती आ रही हूँ। वह आज भी वैसा ही है जैसा उस दिन था। उसमें अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है। लोग कहते हैं कि उसने शैतान से समझौता कर लिया है।'

'क्या तुम विश्वास से कह सकती हो?'

'हाँ, मैं विश्वास से कह सकती हूँ। लेकिन तुम उसके सामने मेरी चर्चा न करना। मैं उससे बहुत डरती हूँ।'

मधुर की उत्तेजना बढ़ने लगी। वह दौड़ कर गली में घुस गया और दूर-दूर तक झाँक कर देखने लगा। लेकिन सुरेश का कहीं पता नहीं था। वह अदृश्य हो चुका था।

१५

दूसरे दिन सुरेश अपने घर से बाहर नहीं निकला। उसका अधिकांश समय उसके कमरे में ही कटा। उसके मन में मृत्यु की सी प्रतारणा हो रही थी; भय की यह भावना कि कोई उसका पीछा कर रहा है और उस पर हमला करने का प्रयत्न कर रहा है उसके मन को आतंकित किये दे रही थी। यदि हवा से कमरे के पर्दे हिल जाते तो वह भय से काँप उठता। कहीं से किसी की आहट पाते ही वह चौंक उठता। उसे जीवन में निराशा और वैराग्य के सिवा और कुछ भी दिखाई न देता। रात्रि के अँधियारे में जब वह बिस्तर पर पड़ा-पड़ा अपनी आँख बन्द करता तो उसे लगता मानो खिड़की के शीशों के पीछे वही नाविक अपनी क्रूर दृष्टि से उसे निहार रहा है। तब वह उठ बैठता और उसके अधरों से अनायास ही एक बुभुक्षित चीत्कार-सा निकल पड़ता।

किन्तु शायद यह उसके भ्रम के सिवा और कुछ भी नहीं है। उसका वास्तविक जीवन नष्ट हो चुका है। वह सोचता है कि प्रत्येक पाप के बाद उसका पश्चाताप करना होता है। वह यह भी सोचता है कि प्रत्येक बुरे काम का नतीजा बुरा होता है। किन्तु यह भी उसके भ्रम के सिवा और क्या हो सकता है। वास्तविक जगत में बुरे आदमियों को दण्ड और अच्छे व्यक्तियों को पुरस्कार नहीं मिलता। वहाँ तो शक्तिशाली को सफलता और निर्बल को विफलता मिलती है। बस यही दुनिया का नियम है।

यदि कोई उसके बँगले की चारदीवारी को लाँघ कर उसके कमरे तक चला आता तो क्या चौकीदार उसे नहीं देखता ? क्या माली घास के

मैदानों पर किसी अनजान व्यक्ति के पैरों के निशानों की सूचना इसे नहीं देता ? हाँ, यह केवल उसका भ्रम है। पार्वती का भाई उसकी हत्या करने यहाँ नहीं आ सकता। अब वह अपने जहाज में बैठ कर कहीं दूर निकल गया होगा। कम से कम उसे अब उससे कोई भय नहीं है। वह आदमी तो उसे पहचान भी नहीं सका। उस रात यौवन के पर्दे ने उसकी रक्षा कर ली।

किन्तु यदि यह उसका भ्रम ही है तो यह कितनी विचित्र बात है कि आत्मा ऐसे भयंकर चेहरों को जन्म देकर उनमें जीवन फूँक देती है। यदि जिन रात मूक दिशाओं से अपराधों की वे भयंकर छाया उसकी ओर क्रूर दृष्टि से देखती रहेगी तो उसका जीवन कैसा हो जायगा। जब वह अपने कमरे में एकाकी बैठा होता है तो ये छायायें पर्दों के पीछे से निकल कर उसे चिढ़ाने लगती हैं। जब वह भोजन करने बैठता है तो वे उसके कानों में फुसफुसाकर उसके पापों की याद दिला देती हैं। जब रात के समय वह अपने मखमली पलँग पर सोने लगता है तो वे अपनी बर्फ सी उँगलियों से छूकर उसे बार-बार जगा देती हैं। तब उसका चेहरा पीला पड़ जाता है और उसकी आत्मा भय से काँपने लगती है।

उसने कैसे पागलपन के क्षणों में अपने मित्र की हत्या की। उस दृश्य की कल्पना भी कितनी भयानक है। वह दृश्य उसकी आँखों में आज भी नाच रहा है। मृत हेमन्त का वह चेहरा नित्य एक नया रूप धर कर उसके सम्मुख आ खड़ा होता है और उसे भयभीत कर जाता है।

तीन दिन तक सुरेश घर से बाहर नहीं गया। चौथे दिन उसके मन का सन्तुलन कुछ-कुछ लौट आया। उसे विश्वास हो गया कि यह सब उसका भ्रम है।

× × ×

आज शिकार का कार्यक्रम था। मधुरिमा तथा सुरेश के अन्य मित्रों ने उसे शिकार पार्टी में शामिल होने के लिए तैयार कर लिया।

ओस घास पर बर्फ की तरह फैली हुई थी। नीलाकाश आज बहुत उज्ज्वल दीख रहा था।

जब ये लोग चीड़ के उस घने जंगल के किनारे पहुँचे तो सुरेश ने देखा कि मधुरिमा का भाई और रायसाहब मोहन सिंह अपनी बन्दूकों से खाली कारतूस निकाल कर फेंक रहे हैं।

सुरेश ने आगे बढ़ कर रायसाहब से पूछा, 'कहिये, शिकार कैसा रहा।'

'बिल्कुल अच्छा नहीं रहा सुरेश, ऐसा लगता है मानों अधिकांश पक्षी जंगलों को छोड़ कर आकाश में उड़ गए हैं। मेरे विचार में खाना खाने के बाद ही शिकार पर चलना ठीक रहेगा।'

सुरेश ने एक बार घने जंगल की ओर देखा। ठंडी बयार बह रही थी। जंगल के भीतर से कभी-कभी लाल और पीला प्रकाश चमक उठता था। थोड़ी-थोड़ी देर बाद कहीं दूर से ढोल पीटने का स्वर और बहुत से लोगों की कर्कश आवाज सुनाई दे जाती थी। एक बार कई बन्दूकें एक साथ छूटने की आवाज आई। सुरेश के मन पर नशा छाने लगा। उसके मन में स्वाधीनता की जाने कैसी भावना भर गई। उत्साह और उल्लास ने एक बार उसके हृदय पर पूर्णतया अपना अधिकार जमा लिया।

तभी लगभग बीस गज के फासले पर ऊँची और घनी घास के बीच अपने कान उठाये हुए एक बड़ा-सा खरगोश दौड़ता दिखाई दिया। रायसाहब तुरन्त ही कन्धे पर बन्दूक लगा कर खरगोश पर निशाना साधने लगे। किन्तु उस नन्हे से पशु में सुरेश को जाने कैसा सौन्दर्य दिखाई दिया कि वह एकदम से चिल्ला उठा, 'इसे मत मारो मोहन सिंह, इसे जीवित रहने दो।'

'यह कैसी मूर्खता है सुरेश।' रायसाहब ने हँस कर एक बार कनखियों से सुरेश की ओर देखा और फिर जैसे ही खरगोश ने जंगल में प्रवेश किया, उन्होंने गोली दाग दी। तभी दो आर्तनाद सुनाई पड़े।

एक चीत्कार खरगोश की थी जो बड़ी भयंकर थी और दूसरी एक आदमी की आवाज थी जो उससे भी अधिक डरावनी थी।

'हे भगवान, मैंने किसी हाँकिये के गोली मार दी। लेकिन वह आदमी भी कितना गधा था जो मेरी बन्दूक के सामने आ गया। गोली चलाना बन्द करो,' रायसाहब ने अपनी तेज आवाज में चिल्ला कर कहा, 'कोई आदमी घायल हो गया है।'

जमादार हाथ में छड़ी लिए दौड़ता हुआ आया, और पूछा, 'कहाँ हजूर, वह कहाँ है ?'

जंगल से गोलियाँ चलने की आवाज आनी बंद हो गई थी।

'वह वहाँ है,' रायसाहब ने क्रोध से कहा और फिर स्वयं भी जंगल की ओर चल दिए, 'तुम अपने आदमियों को पीछे क्यों नहीं रखते। उसने हमारा शिकार का मजा किरकिरा कर दिया।'

सुरेश चुपचाप खड़ा उन्हें देखता रहा। उन्होंने घनी घास और पत्तियों को एक ओर हटाया। कुछ ही देर में वे रक्त से लथपथ एक शरीर को खींच कर प्रकाश में ले आये।

सुरेश भय से पीला पड़ गया। वह जहाँ भी जाता है दुर्भाग्य उसका पीछा नहीं छोड़ता। उसने जमादार की भारी आवाज सुनी। वह कह रहा था कि वह आदमी मर गया है। सुरेश को लगा मानो वृक्षों की हर टहनी पर एक चेहरा उग आया है और उसकी ओर देख कर विचित्र हँसी हँस रहा है। उसके कानों में हजारों लोगों के रुदन का स्वर गूँजने लगा। एक बार वह सहम गया। उसे लगा मानो ये दो-तीन क्षण दो-तीन युगों के बराबर लम्बे हो गए हैं। उसने एक बार घबरा कर चारों ओर देखा।

कुँवर राजेन्द्र कह रहा था, 'मैंने आज उन लोगों से शिकार बन्द करने के लिए कह दिया है। ऐसी दशा में और शिकार खेलना अच्छा नहीं लगेगा।'

'काश, रक्त बहाने का यह खेल सदा के लिए बन्द हो जाता,'

सुरेश ने जाने कैसे स्वर में कहा, 'यह खेल बड़ा कुरूप और अमानुषिक है। क्या आदमी······।'

कुँवर राजेन्द्र ने बीच में ही कहा, 'शायद गोली सीधी उसकी छाती में लगी है। वह तुरन्त ही मर गया होगा। आओ, अब हमें घर चलना चाहिये।'

दोनों साथ-साथ डाक बँगले की ओर चल दिए। पाँच मिनट तक उनमें से कोई भी नहीं बोला। फिर सुरेश ने राजेन्द्र की ओर देखा और एक गहरी साँस लेकर कहा, 'आज अपशकुन हुआ है राजेन्द्र, बहुत बुरा शकुन हुआ है।'

'यह तो अवसर की बात है सुरेश,' राजेन्द्र ने धीमे स्वर में कहा, 'हम इस दुर्घटना को रोक भी कैसे सकते थे। इसमें उसी आदमी का दोष था। वह हमारी बन्दूक के सामने क्यों आ गया। लेकिन हमें उस दुर्घटना से क्या मतलब है। जो कुछ विपदा पड़ेगी, रायसाहब पर पड़ेगी। हमें उस घटना के सम्बन्ध में बातें नहीं करनी चाहिए।'

सुरेश ने अपना सिर हिलाया। उसने कहा, 'वह बहुत बुरा शकुन है। मुझे लगता है कि कोई बहुत भयंकर घटना घटने वाली है। मैं सोचता हूँ कि हममें से किसी पर या शायद मुझ पर ही कोई बड़ा संकट आयेगा।' सुरेश के स्वर से लगा मानो उसका हृदय पीड़ा से फटा जा रहा है।

राजेन्द्र हँस दिया। उसने कहा, 'उदासी और निष्क्रियता से बुरी चीज दुनिया में दूसरी नहीं है सुरेश। वह ऐसा पाप है जिसका कोई भी पश्चाताप नहीं हो सकता, किन्तु यदि खाने के समय उन लोगों ने इस दुर्घटना का जिक्र नहीं किया तो हम पर इस पाप की छाया नहीं पड़ेगी। मैं उनसे कहूँगा कि अब वे इस दुर्घटना को भूल जायें। जहाँ तक शकुन का सवाल है, दुनिया में शकुन जैसी कोई चीज ही नहीं है। भाग्य हमारे जीवन में कभी सुख या दुख की वर्षा नहीं करती। इसके लिये वह बहुत चतुर या बहुत क्रूर है। लेकिन तुम पर दुनिया की कौन-सी आपदा

आ सकती है ? मनुष्य इस दुनिया में जिस वस्तु की आकांक्षा कर सकता है, वे सभी तो तुम्हें प्राप्त हैं। संसार में ऐसा कोई भी आदमी नहीं होगा जो तुमसे अपना जीवन बदलने में प्रसन्नता का अनुभव न करे।'

'लेकिन दुनिया में ऐसा कोई भी आदमी नहीं है राजेन्द्र जिससे मैं अपना जीवन बदलना नहीं चाहता। तुम इस तरह हँस क्यों रहे हो ? मैंने तुमसे सत्य ही कहा है। वह गरीब और निराश मजदूर जिसकी अभी हत्या हुई, मुझसे कहीं अधिक अच्छा है। मुझे मृत्यु का भय नहीं है। मृत्यु के आगमन का भय ही मुझे आतंकित किए देता है। तब उसकी घुटन मेरे जीवन के कण-कण में समा जाती है। देखो, उधर पेड़ों के पाछे क्या तुम्हें कोई आदमी छिपा हुआ नहीं दिखाई दे रहा है। वह मेरा पीछा कर रहा है। मेरी प्रतीक्षा कर रहा है।'

कुँवर राजेन्द्र ने उस दिशा में पेड़ों के पीछे दूर तक देखा। फिर उसने मुस्करा कर कहा, 'हाँ, वहाँ बाग का माली तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। शायद वह तुमसे पूछना चाहता है कि आज तुम खाने की मेज पर कौन से फूल लगवाना पसन्द करोगे। तुम इन दिनों कितने निर्बल हो गए हो। तुम्हें किसी अच्छे डाक्टर का इलाज कराना चाहिए।'

बाग के माली को देख कर सुरेश ने शान्ति की साँस ली। माली ने सुरेश को एक पत्र देते हुए कहा, 'मेम साहब ने कहा था कि मैं उसका उत्तर ले आऊँ।'

सुरेश ने पत्र लेकर अपनी जेब में रख लिया। फिर उसने ठंडे स्वर में कहा, 'मेम साहब से कहो, मैं वहीं आ रहा हूँ।'

माली चला गया तो कुँवर राजेन्द्र जोर से हँस पड़ा। उसने कहा, 'स्त्रियाँ खतरनाक काम करने की कितनी शौकीन होती हैं। उनके इस गुण को मैं बहुत पसन्द करता हूँ। यदि दुनिया के लोग किसी स्त्री को पसन्द करते हैं तो वह उनके साथ किसी भी प्रकार का सम्बन्ध स्थापित करने में संकोच नहीं करती।'

'तुम खतरनाक बात कहने के कितने शौकीन हो राजेन्द्र। तुम्हारा

यह उदाहरण तो बिल्कुल ही भ्रमपूर्ण है। मुझे मधुरिमा बहुत पसन्द है, लेकिन मैं उससे जरा भी प्रेम नहीं करता।'

'और मधुरिमा तुमसे बहुत प्रेम करती है, लेकिन वह तुम्हें अधिक पसन्द नहीं करती। इस प्रकार तुम्हारा यह जोड़ा बहुत अच्छा है।'

'तुम पाप की बात कर रहे हो राजेन्द्र, लेकिन हमारी मित्रता में पाप का कोई स्थान ही नहीं है,' सुरेश के स्वर में गहरी व्यथा भरी थी, 'काश, मैं किसी से प्रेम कर सकता। यदि कोई ऐसा क्षण आता तो उस एक क्षण पर मैं अपने सारे जीवन को न्योछावर कर देता। वह क्षण मेरे जीवन का सबसे सुनहरा क्षण होता। लेकिन आज मुझे लगता है मानो मेरे जीवन में वासना-आकांक्षा कुछ भी नहीं है। मेरे मन की सारी इच्छाएँ मुझसे किनारा कर गई हैं। आज मैं स्वयं अपने पर ही केन्द्रित हो गया हूँ। मेरा व्यक्तित्व आज मेरे लिए भार बन उठा है। मैं उससे मुक्ति पाना चाहता हूँ। मैं अपने अतीत और वर्तमान को भुला देना चाहता हूँ। मैंने यहाँ आकर बड़ी भूल की। मैं दुनिया से दूर किसी एकाकी स्थान में रहना चाहता हूँ। वहाँ मैं पूर्णतया सुरक्षित रहूँगा।'

'सुरक्षित रहोगे? क्या तुम किसी संकट में हो? मुझे बताओ, तुम जानते हो मैं तुम्हारी बहुत सहायता कर सकता हूँ।'

'मैं तुम्हें कुछ नहीं बता सकता,' सुरेश ने गम्भीर और निराश स्वर में कहा, 'मैं यह भी जानता हूँ कि वह सब मेरा भ्रम है। इस दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना ने मेरे मन का सन्तुलन नष्ट कर दिया है। मेरे मन में जाने कैसा भयंकर विचार उठ रहा है। मैं सोचता हूँ कि मुझ पर कोई बड़ा संकट आने वाला है।'

'ये सब व्यर्थ की बातें हैं।'

'मैं चाहता हूँ कि ये बातें सचमुच ही व्यर्थ की बातें बन कर रह जायँ, लेकिन मैं लाचार हूँ राजेन्द्र। हर समय जाने कैसा भय मुझे आतंकित किए रहता है। जाने कैसी हीन भावना मेरे मन पर जम कर

बैठ गई है। मैं उससे मुक्ति पाना चाहता हूँ। सदा के लिए मुक्ति पा जाना चाहता हूँ।'

राजेन्द्र ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह सुरेश के साथ चुपचाप डाक बंगले की लम्बी क्यारियों को पार कर रहा था।

कुछ ही देर में वे लोग वहाँ पहुँच गए जहाँ मधुरिमा सुरेश की प्रतीक्षा कर रही थी। उन्हें देखते ही मधुरिमा ने कहा, 'मैंने उस दुर्घटना की बात सुन ली है। रायसाहब बहुत परेशान मालूम होते हैं। वे कहते थे कि गोली चलाने से पहले तुमने उनसे कहा था कि वे खरगोश को न मारें। यह बात कितनी विचित्र है।'

'हाँ, यह बात सचमुच ही बड़ी विचित्र है। मैं नहीं जानता कि मेरे भीतर की कौन-सी भावना ने वह बात मेरे मुख से कहलाई थी। उस समय मुझे लगा था कि वह खरगोश जीवित प्राणियों में सबसे अधिक सुन्दर है। लेकिन मुझे दुख है कि उन लोगों ने तुमसे उस आदमी का भी जिक्र कर दिया। तुम्हारे कोमल हृदय को उससे अवश्य ही व्यथा पहुँची होगी। यह बड़ा भयंकर और कुरूप विषय है।'

'नहीं, यह केवल क्रोधित कर देने वाला विषय है,' राजेन्द्र ने अपनी कर्कश आवाज में कहा, 'इसका कोई भी मनोवैज्ञानिक महत्व नहीं। यदि रायसाहब ने जानबूझकर ही उसकी हत्या की होती तो वे कितने दिलचस्प आदमी होते। मुझे तो अब तक कोई ऐसा आदमी ही नहीं मिला जिसने कभी जानबूझकर हत्या की हो।'

'यह तुम्हारी कैसी भयंकर बात है राजेन्द्र,' मधुरिमा ने चिल्ला कर कहा, 'देखो, सुरेश बेहोश हुआ जा रहा है।'

सुरेश ने अपने को सम्भाल कर मुस्कराते हुये कहा, 'नहीं, मुझे कुछ नहीं हुआ है मधुरिमा। केवल आज मैं अपने वश में नहीं हूँ। आज मैं बहुत थक गया हूँ। राजेन्द्र ने जो कुछ कहा, वह मुझे सुनाई नहीं दिया। क्या उसने कोई बहुत बुरी बात कही है? तुम किसी दूसरे समय

वह बात मुझे बताना। अब मैं आराम करना चाहता हूँ। उसके लिये क्या तुम मुझे क्षमा नहीं कर सकती?'

मधुरिमा ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह सुरेश को अपने हाथों का सहारा देकर चुपचाप डाकबँगले के ऊपर वाले कमरे तक पहुँचा आई।

जब मधुरिमा लौटी तो राजेन्द्र ने अपनी स्वप्निल आँखों से उसकी ओर देखते हुये पूछा, 'क्या सचमुच ही तुम उससे बहुत प्रेम करती हो मधुरिमा?'

बहुत देर तक मधुरिमा ने राजेन्द्र की इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह दूर तक फैले हुये घने और काले जंगल को देखती रही। फिर उसने धीमे स्वर में कहा, 'काश, मैं स्वयं ही वह बात जान सकती।'

कुँवर राजेन्द्र को लगा मानो मधुरिमा के मन में तूफान मचल रहा है और उसे छिपाने का वह असफल प्रयत्न कर रही है। राजेन्द्र को उसकी पीड़ा से सुख मिला। उसने अपना सिर हिला कर कहा, 'लेकिन उस बात की जानकारी बड़ी ही अनिष्टकारी होगी मधुरिमा। यह एक सत्य है कि प्रेम की अनिश्चितता ही मनुष्य को आकर्षित करती है। आवरण बहुत सी चीजों को बहुत सुन्दर बना देता है।'

'तब तो किसी के लिये भी मार्ग भूलना असम्भव नहीं है।'

'लेकिन सभी रास्ते एक ही मंजिल पर जाकर मिलते हैं।'

'वह कौन सी मंजिल है?'

'धोखे और झूठ की मंजिल।'

'जीवन में यह मेरा प्रथम प्रेम है।' मधुरिमा ने ठंडी साँस ली। आज मैं अपने वैभव और ऐश्वर्य से ऊब गई हूँ। अपने इस बनावटी और कृत्रिम जीवन के प्रति अब मेरा कोई आकर्षण नहीं रहा है। अपने पति के साथ नगर के धनी-मानी लोगों के बीच बैठ कर मुझे लगता है मानो वह मेरा वास्तविक जीवन नहीं है। मैं अब किसी बन्धन को स्वीकार करना नहीं चाहती। मैं स्वच्छन्द पक्षी की भाँति पाँव फैला कर

आकाश में विहार करना चाहती हूँ। धन के प्रति मुझे मोह नहीं, ऐश्वर्य के प्रति मेरा आकर्षण नहीं। आज मैं दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति से मेरा······। मधुरिमा बीच ही में रुक गई। उसने कहा, 'लेकिन तुम इस तरह चारों ओर क्या देख रहे हो?'

'मैं बाग में किसी अच्छे से फूल को देख रहा हूँ, जिसे तोड़ कर तुम्हारे कोट में लगा दूँ। आज तुम्हारी आँखें बहुत सुन्दर लग रही हैं।'

मधुरिमा को एक बारगी सूझा नहीं कि वह क्या कहे। उसके गुलाबी अधरों पर एक हलकी सी मुस्कान फैल गई और कुँवर राजेन्द्र एक बार जोर से ठठाकर हँस पड़ा।

डाक बँगले के ऊपर वाले कमरे में सुरेश मन में आतंक भरे चुप-चाप सोफे पर बैठा था। उसका मन जाने क्यों भय से बार-बार काँप उठता। आज उसका जीवन उसके सामने रूप एक कुबोझ के सिवा और कुछ भी नहीं है। वह उसका भार वहन करने में असमर्थ है। घने जंगल में उस अभागे मजदूर की हत्या ने उसके जीवन पर आज जाने कैसी छाप छोड़ दी है। वह आज स्वयं ही मृत्यु की प्रतारणा का अनुभव कर रहा है।

शाम को लगभग पाँच बजे उसने नौकर को बुला कर अपना सामान बाँधने की आज्ञा दी। वह आज ही रात को यहाँ से चला जायगा। यह जगह अच्छी नहीं है। यहाँ आते ही अपशकुन हुआ है। यहाँ सूर्य के प्रकाश में भी मृत्यु डोलती है। जंगल की हरी घास रक्त के धब्बों से कलंकित है।

तभी उसके नौकर ने आकर कहा कि जंगल का जमादार उससे मिलना चाहता है। उसने अपने होंठ काट लिये। कुछ देर बाद उसने धीमे स्वर में कहा, 'उसे भीतर भेज दो।'

जमादार के कमरे में प्रवेश करते ही सुरेश ने पूछा, 'मैं जानता हूँ तुम आज की अभागी घटना के सम्बन्ध में ही मुझसे मिलने आये हो।'

'जी हाँ,' जमादार ने विनीत स्वर में कहा।

'क्या वह आदमी विवाहित था ? क्या कुछ लोग उस पर आश्रित थे ? यदि ऐसा है तो जितना धन तुम कहोगे मैं दूँगा। मैं नहीं चाहता कि वे उसके अभाव और दुख सहते-सहते मर जायँ।'

'लेकिन हम लोग नहीं जानते कि वह आदमी कौन है। मैंने इसीलिये आपको कष्ट दिया है।'

'तुम नहीं जानते कि वह कौन है। क्या वह तुम्हारा आदमी नहीं था ?'

'जी नहीं, मैंने पहले उसे कभी नहीं देखा। वह कोई नाविक मालूम होता है।'

सुरेश का माथा पसीने से तर हो गया। उसके हृदय का रक्त खट-खट करके बजने लगा। उसने चिल्ला कर कहा, 'क्या वह नाविक है ? क्या वह सचमुच ही नाविक है ?'

'जी हाँ, वह नाविक ही लगता है। उसके दोनों हाथों पर गोदना भी गुदा हुआ है।'

'क्या उसके पास से कोई और चीज बरामद नहीं हुई, सुरेश ने जमादार की आँखों में देखते हुये कहा, 'कोई ऐसी चीज जिससे उसका नाम और पता मालूम हो सके ?'

'उसके पास थोड़ा सा धन और एक पिस्तौल मिली है। किसी भी चीज से उसका नाम मालूम नहीं हो सका। वह देखने में सुन्दर लगता है।'

सहसा ही सुरेश के मन में एक नई आशा का संचार हुआ। उसने तुरन्त ही खड़े होकर जमादार से कहा, 'वह शव कहाँ है ? मैं उसे देखना चाहता हूँ।'

'हमने उसे अस्तबल में रख दिया है। गाँव वाले उसे अपने घर में रखना नहीं चाहते थे। उनके मत में शव दुर्भाग्य की निशानी होती है।'

पाँच मिनट के भीतर ही सुरेश अस्तबल में पहुँच गया। मार्ग में ऊँचे-ऊँचे पेड़ सड़क पर अपनी विशाल छाया डाल रहे थे। ठंडी ठंडी हवा चल रही थी और आकाश पर हल्के-हल्के बादल घुमड़ आये थे। अस्तबल के द्वार पर जाकर वह एक क्षण को रुका। दूसरे ही क्षण उसके

सामने एक ऐसा रहस्य खुलने जा रहा है जिस पर उसके सारे जीवन की खुशी निर्भर है। उसने द्वार खोला और जल्दी से भीतर घुस गया।

अस्तबल के एक कोने में घास के ढेर के ऊपर शव पड़ा हुआ था। उसने नीली पतलून और सफेद कमीज पहन रखी थी। रक्त से भरा हुआ एक रुमाल उसके मुँह पर पड़ा था जिससे उसका चेहरा बिल्कुल ढक गया था।

एक क्षण को सुरेश रुका। उसे स्वयं उसके चेहरे से रुमाल उठाने का साहस नहीं हुआ। उसने जमादार से कहा, 'उसके चेहरे से वह रुमाल हटाओ। मैं उसे देखना चाहता हूँ।'

जमादार ने शव के चेहरे से रुमाल हटा दिया। सुरेश आगे बढ़ा। तभी उसके होठों से खुशी की एक चीख-सी निकल गई। वह शव मधुकर का ही था। वह कुछ देर वहाँ खड़ा चुपचाप शव के चेहरे को देखता रहा। उसका मन आनन्द और उल्लास से झूमने लगा। जब वह घर लौट रहा था तो उसकी आँखों में आँसू भरे थे। अब उसे विश्वास हो गया था कि उसका जीवन पूर्णतया सुरक्षित है।

१६

'तुम मुझसे यह क्यों कहते हो कि अब तुम अपने जीवन को सुधार रहे हो?' कुँवर राजेन्द्र ने फूलों वाले उस सुन्दर बर्तन के पानी में अपनी अँगुलियाँ डुबाते हुये कहा, 'अब तुम पूर्ण हो गये हो। अब तुम्हें बदलना नहीं चाहिये।'

सुरेश ने अपना सिर हिला कर कहा, 'नहीं राजेन्द्र, मैंने जीवन में बहुत से भयंकर काम किये हैं लेकिन उन कामों को अब मैं पूर्णतया तिलांजलि दे चुका हूँ। कल से मैंने अच्छे काम करने शुरू कर दिये हैं।'

'कल तुम कहाँ गये थे?'

'कल मैं गाँव गया था। वहाँ मैं एक छोटी सी सराय में ठहरा था।'

कुँवर राजेन्द्र ने मुस्करा कर कहा, 'हाँ सुरेश, गाँव में कोई भी अपना

जीवन सुधार सकता है। वहाँ आगे बढ़ने की होड़ नहीं रहती। इसीलिये जो लोग शहरों से दूर गाँवों में रहते हैं वे पूर्णतया असभ्य होते हैं। सभ्य होना कोई आसान बात नहीं है। दो ही मार्गों पर चलकर मनुष्य सभ्य बन सकता है। एक रास्ता संस्कृति का है और दूसरा पतन का। ग्रामीणों के सामने उनमें से कोई भी मार्ग खुला नहीं रह गया है। इसीलिये वे कभी भी उन्नति नहीं कर सकते।'

'संस्कृति और पतन। मेरे जीवन में दोनों ही चीजों का स्थान रहा है। मैंने दोनों को ही बहुत निकट से देखा है। अब मेरे जीवन में ये दोनों चीजें कभी भी साथ-साथ नहीं रह सकतीं। आज मैंने एक नया आदर्श अपनाया है। मैं अब नये सिरे से जीवन आरम्भ कर रहा हूँ। मैंने अपने को बहुत कुछ बदल डाला है।'

'तुमने अभी मुझे यह नहीं बताया कि तुमने कौनसा अच्छा काम किया है?' राजेन्द्र ने सुरेश के चेहरे पर आँखे गड़ाते हुए पूछा।

'मैं तुम्हें बताऊँगा राजेन्द्र। यह कोई ऐसी कथा नहीं है, जो मैं किसी और से कह सकूँ। मैंने कल प्रथम बार ही एक स्त्री का निमंत्रण स्वीकार नहीं किया। मैंने उसके जीवन से खेलकर उसे नष्ट करना नहीं चाहा। यह बात तुम्हें विचित्र लगेगी, लेकिन जानते हो मेरा अभिप्राय क्या है? वह पार्वती की ही तरह सुन्दर और मधुर थी। शायद उसके इसी रूप ने मुझे प्रथम बार आकर्षित किया। मैंने उसमें पार्वती की छाया देखी। मुझे पार्वती अब तक याद है। जीवन के उस प्रथम प्रेम को मैं कभी भी नहीं भुला सकता। वह बात अब कितनी पुरानी हो गई है लेकिन उसकी स्मृति आज भी मेरे हृदय में प्रकाश की भाँति चमक रही है। यह लड़की हमारे अपने दर्जे की नहीं थी। वह गाँव की सरल कन्या थी किन्तु फिर भी जाने क्यों मैं उसे प्यार करने लगा। मुझे विश्वास है कि मैं उससे प्रेम करता था। मैं प्रति सप्ताह दो या तीन बार वहाँ जाता और उससे भेंट कर आता। कल वह मुझे अकेली जंगल में मिली। वह नदी से पानी भर कर लौट रही थी। उसने मुझे देखा और मुस्करा कर मेरा

स्वागत किया। तभी मेरे मन में जाने कैसी भावना जाग्रत हो गई। मैंने सोचा कि मैं उसका जीवन बरबाद नहीं करूँगा। उसकी फूलों जैसी सरल मुस्कान, मैं कभी नहीं भूलूँगा। मैंने उससे क्या कहा, यह मुझे स्वयं भी नहीं मालूम। लेकिन मुझे संतोष है कि मैंने उसका जीवन बरबाद नहीं किया।'

'ठीक है, मैं इसे तुम्हारे विचारों की नवीनता कहूँगा। जब तुम्हारे मन में ये विचार उठे होंगे तो तुम्हारा मन वास्तविक आनन्द से भर गया होगा। लेकिन मैं तुम्हारे इन आदर्शों को तुम्हीं तक छोड़ता हूँ। तुमने उसे अच्छे उपदेश दिये और उसका दिल तोड़ दिया। यही तुम्हारे सुधारों का आरम्भ है। यही उनकी आधारशिला है।'

सुरेश को असह हो उठा। उसने एक साथ ही चिल्ला कर कहा, 'तुम बहुत भयंकर हो राजेन्द्र! तुम्हें ऐसी भयंकर बातें नहीं कहनी चाहिये। उसका दिल नहीं टूटा है। पीड़ा के मारे उसके अधरों से एक बार बुभुक्षित चीत्कार-सा अवश्य निकला, किन्तु इससे अधिक कुछ नहीं हुआ। उसने कोई पाप नहीं किया है। उसके जीवन पर कोई धब्बा नहीं है। मेरे सम्पर्क में आने के बाद भी कोई स्त्री पवित्रता से अपना जीवन व्यतीत कर सकती है, इसमें अधिक सुख और आनन्द की बात मेरे लिये और कौन-सी हो सकती है।'

कुँवर राजेन्द्र आरामकुर्सी पर कमर लगा कर लेट गया। उसने कहा, 'तुम बहुत भोले हो सुरेश। क्या तुम समझते हो कि वह लड़की अब अपने ही दर्जे के किसी आदमी से प्रेम कर सकेगी? एक दिन उसका विवाह किसी हिंसक मजदूर या नीरस किसान के साथ हो जायगा। किन्तु वह तुम्हारे ही जैसे किसी पति की कल्पना करेगी और उसके न मिलने पर उसका जीवन निराशा और उदासी से भर जायगा। तब उसके जीवन में खुशी के लिये कोई भी स्थान शेष नहीं बचेगा। नैतिकता के दृष्टिकोण से भी तुम्हारा यह काम बहुत बड़ा नहीं है। आरम्भ होते हुये भी यह कोई बड़ा आरम्भ नहीं कहा जा सकता। उसके अतिरिक्त तुम यह भी कैसे कह सकते हो कि इस समय तक उस लड़की ने गाँव के किसी तालाब या नदी में डूब कर आत्महत्या नहीं कर ली होगी।'

'मैं इसे सहन नहीं कर सकता राजेन्द्र ! तुम दुनिया में हर बात का मजाक उड़ाते हो और उनके सम्बन्ध में भयंकरतम बातें करने लगते हो। मुझे दुख है कि मैंने तुमसे यह बात कही। तुम मुझे क्या समझते हो उसकी मुझे चिन्ता नहीं है। मैं जानता हूँ कि मैंने जो किया है अनुचित नहीं किया है। वह बहुत अच्छी लड़की थी। आज प्रातः जब मैं घोड़े पर उस गाँव से गुजर रहा था तो मैंने देखा कि वह उदास आँखों से अपने मकान की खिड़की से झाँक रही है। लेकिन अब मैं इस सम्बन्ध में बात करना नहीं चाहता और तुम भी मुझे यह बताने का प्रयत्न मत करो कि वर्षों बाद किया गया मेरा एक अच्छा काम और मेरा छोटा सा बलिदान भी वास्तव में मेरा पाप ही है। मैं अपने जीवन को सुधारना चाहता हूँ। एक दिन मैं उसे अवश्य ही सुधार लूँगा। आज मैं तुम्हारी बात नहीं सुनना चाहता। मैं कई दिनों से क्लब नहीं गया हूँ।'

'लोग वहाँ अब भी हेमन्त के अचानक लापता हो जाने की चर्चा करते हैं।'

'मैं तो समझता था कि अब तक वे लोग इस चर्चा से थक गये होंगे।'

'नहीं सुरेश, दूसरों की बुरी बातों को लोग जल्दी नहीं भूलते। यहाँ की पुलिस कहती है कि हेमन्त उसी रात को गाड़ी से यहाँ से रवाना हो गया लेकिन बम्बई की पुलिस का कहना है कि वह वहाँ कभी आया ही नहीं।'

'अच्छा, तुम हेमन्त के बारे में क्या सोचते हो ?' सुरेश ने संयत स्वर में पूछा।

'मैंने उसके बारे में कभी सोचा ही नहीं है। यदि हेमन्त अपने को छिपाना चाहता है तो मैं उसे ढूँढ़ने का प्रयत्न क्यों करूँ। यदि वह मर चुका है तो मैं उसके बारे में सोचना नहीं चाहता। मुझे इस बड़ी दुनिया में केवल मृत्यु से ही भय लगता है। मैं मृत्यु से घृणा करता हूँ।'

'क्यों ?' सुरेश ने प्रश्न किया।

'क्योंकि आज के युग में मनुष्य मृत्यु को छोड़ कर और सभी चीजों से अपनी रक्षा कर सकता है,' राजेन्द्र ने अपने स्वाभाविक स्वर में कहा, 'लेकिन क्या आज तुम वायलन नहीं सुनाओगे सुरेश। तुम जानते हो कि मेरी पत्नी भाग गई है। जिसके साथ वह गई है वह बहुत अच्छा वायलन बजाता था। मैं अपनी पत्नी को बहुत पसन्द करता था। उसके बिना मकान कुछ सूना सा लगता है। विवाहित जीवन भी एक आदत है, एक बुरी आदत है। किन्तु यदि कोई आदमी अपनी बुरी आदत को भी छोड़ता है तो उसे पछतावा होता है। और शायद मनुष्य को बुरी आदतें छोड़ने पर ही सबसे अधिक पछतावा होता है। वह आदमी के व्यक्तित्व का एक आवश्यक अंग है।'

सुरेश ने राजेन्द्र की इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह उठा और वायलन लाकर द्रुतगति से बजाने लगा। वह कितनी देर मंत्रमुग्ध सा बैठा उसे बजाता रहा यह उसे स्वयं भी मालूम नहीं। बहुत देर बाद अचानक ही वायलन के तारों पर दौड़ती हुई उसकी अँगुलियाँ रुक गईं। उसने राजेन्द्र की ओर देख कर कहा, 'क्या तुमने कभी सोचा है राजेन्द्र कि हेमन्त की हत्या भी हो सकती है।'

राजेन्द्र हँसा। उसने कहा, 'हेमन्त बहुत लोकप्रिय था। उसकी हत्या कौन कर सकता है। वह इतना चतुर भी नहीं था कि कोई उसका शत्रु बन जाय। हेमन्त का कला बहुत उच्चकोटि की थी लेकिन उसमें जीवन नहीं था।'

'मैं हेमन्त और उसकी कला को बहुत पसन्द करता था,' सुरेश ने स्वर में उदासी भर कर कहा, 'लेकिन क्या लोग यह नहीं कहते कि उसकी हत्या कर दी गई है?'

'कुछ पत्रों ने ऐसा लिखा है। लेकिन मैं उन पर विश्वास नहीं करता। बम्बई में बहुत सी खतरनाक जगहें हैं, लेकिन हेमन्त ऐसा नहीं था जो वहाँ जाता। जीवन के प्रति उसके मन में उत्सुकता नहीं थी और यही उसका सबसे बड़ा अवगुण था।'

सुरेश ने एक बार गौर से राजेन्द्र की आँखों में देखा। फिर अचानक ही उसने कहा, 'यदि मैं कहूँ कि मैंने हेमन्त की हत्या की है तो क्या तुम उस पर भी विश्वास नहीं करोगे ?'

'तब मैं कहूँगा सुरेश, कि तुम एक ऐसी बात कह रहे हो जो तुम कभी कर ही नहीं सकते। सभी अपराध कुरूप होते हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे किसी भी तरह की कुरूपता अपराध होती है। हत्या करने का साहस तुम कभी कर ही नहीं सकते। यदि मेरी इस बात से तुम्हारे आत्म-सम्मान को ठेस पहुँची हो तो मैं तुमसे क्षमा माँग लूँगा। लेकिन जो मैं कह रहा हूँ उसमें जरा भी झूठ नहीं है। मैं तो यही मानता हूँ कि अपराध उत्तेजना फैलाने का एक तरीका है।'

'उत्तेजना फैलाने का एक तरीका है ? तो तुम यह भी मानते होगे कि जो एक बार हत्या कर देता है वह बार-बार वही अपराध कर सकता है। तुम ऐसी भयंकर बात मुझसे मत कहो।'

'यदि कोई आदमी किसी बात को बार-बार करता है तो फिर उसे उसी में रस मिलने लगता है। यही जीवन का सच्चा रहस्य है। मैं स्वीकार करता हूँ कि हत्या करना मनुष्य की एक बड़ी गलती है। उसे ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिये जिसकी खाने के समय वह खुले हृदय से चर्चा न कर सके। काश, मैं इस बात पर विश्वास कर सकता कि हेमन्त की हत्या जैसी रोमाञ्चकारी घटना घटी होगी, लेकिन मुझे उस बात पर यकीन नहीं होता। गत दस वर्षों से उसकी कला निरन्तर पतन की ओर बढ़ती जा रही थी।'

सुरेश के अधरों से एक गहरा श्वास निकल गया। वह शून्य नेत्रों से छत की ओर निहार रहा था।

राजेन्द्र ने कुछ देर चुप रहने के बाद फिर कहा, 'निस्सन्देह उसकी कला पतन की ओर जा रही थी। ऐसा लगता था कि अब उसमें जीवन शेष नहीं रह गया है। उसका आदर्श नष्ट हो चुका था। जब से तुम दोनों की मित्रता समाप्त हुई तब से उसकी कला भी समाप्त हो गई।

लेकिन तुम्हारे उस सुन्दर चित्र का क्या हुआ जो हेमन्त ने तुम्हारे लिये बनाया था। मैंने फिर उसे कभी नहीं देखा। शायद कई वर्ष पूर्व तुमने मुझसे एक दिन कहा था कि वह चित्र कहीं खो गया है। क्या वह चित्र तुम्हें फिर कभी नहीं मिला? वह वास्तव में हेमन्त की सर्वश्रेष्ठ कृति थी। मुझे याद है, मैं उसे खरीदना चाहता था। मैं अब भी उसे खरीदना चाहता हूँ। क्या तुमने पत्रों में उसके खोने की सूचना निकाली थी?'

'मुझे ठीक याद नहीं है,' सुरेश ने कहा, 'शायद मैंने ऐसा किया हो। लेकिन मुझे वह चित्र कभी पसन्द नहीं आया। उसकी स्मृति भी मेरे हृदय में घृणा पैदा कर देती है।'

राजेन्द्र कुर्सी पर आराम से पाँव फैला कर बैठ गया। उसने थोड़ी देर बाद कहा, 'यदि कोई व्यक्ति सारे संसार को जीत कर हार जाय तो उसके हाथ कितना लाभ लगता है। तब क्या उसके पास उसकी आत्मा को छोड़ कर और भी कोई चीज शेष रह जाती है?'

सुरेश स्तब्ध रह गया। उसने कहा, 'तुम मुझसे ऐसा प्रश्न क्यों पूछ रहे हो?'

राजेन्द्र के अधरों पर मुस्कान की रेखा दौड़ गई। उसने कहा, 'उस दिन मैं उस बड़े मन्दिर के नीचे से गुजर रहा था। वहाँ कुछ लोग जमा थे और एक गन्दा उपदेशक उन्हें कोई उपदेश दे रहा था। जब मैं उसके पास से गुजरा तो वह उन लोगों से यही प्रश्न पूछ रहा था। यह प्रश्न जाने क्यों मेरे अन्तर को छू गया। मैंने उससे कहना चाहा कि कला की आत्मा होती है, लेकिन उस आदमी के आत्मा नहीं है। फिर मैंने सोचा कि शायद वह मेरी बात समझ नहीं सकेगा।'

'नहीं राजेन्द्र, आत्मा तो एक वास्तविकता है। वह खरीदी और बेची जा सकती है। उसका सौदा भी किया जा सकता है। उसे विष की तरह कडुवा भी बनाया जा सकता है और शब्द की तरह मीठा भी। हम में से प्रत्येक के भीतर एक आत्मा है। मैं उस आत्मा को खूब पहचानता हूँ।'

'यह तुम्हारे भ्रम के सिवा और कुछ भी नहीं है सुरेश। जिन बातों

को मनुष्य बिल्कुल निश्चित समझता है, वे कभी भी सच्ची नहीं होतीं। लेकिन तुम इतने उदास क्यों हो रहे हो? इतने गम्भीर मत बनो। हमें अपने युग के इस अन्धविश्वास से क्या प्रयोजन है। नहीं, अब हमें आत्मा में विश्वास नहीं है। लेकिन आज मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ। मैं पूछना चाहता हूँ कि तुमने अब तक अपना यौवन किस प्रकार बनाये रखा है। इसमें अवश्य ही कोई रहस्य है। मैं तुमसे केवल दस ही वर्ष बड़ा हूँ। लेकिन मेरे माथे और गालों पर झुर्रियाँ पड़ गई हैं। मेरे शरीर में रक्त का कहीं नाम भी नहीं है। तुम बहुत विचित्र हो सुरेश। आज विगत स्मृतियाँ मेरे नयनों में नाच रही हैं। वह दिन मुझे अब भी याद है जब तुम प्रथम बार मुझसे मिले थे। उस दिन तुम बहुत लजीले और सुन्दर थे। आज तुम बहुत बदल गये हो लेकिन तुम्हारे रूप में जरा भी अन्तर नहीं आया है। मैं भी तुम्हारी तरह युवक बनना चाहता हूँ। उसके लिये दुनिया का कोई भी काम मैं उठा नहीं रखूँगा। यौवन के समान दुनिया में कोई चीज नहीं है। हमें इस बात का दुख नहीं होता कि हम बूढ़े हो गये हैं, हमें केवल इसी बात का क्षोभ रहता है कि दूसरों के जीवन में यौवन अब भी अठखेलियाँ कर रहा है। मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है। तुम कितने सुखी हो, तुमने जीवन में क्या नहीं पाया। तुमने संसार के प्रत्येक आनन्द का रसास्वादन किया है। तुम्हारे सामने दुनिया का कोई भी रहस्य रहस्य नहीं है। किन्तु तुम फिर भी नष्ट नहीं हुये। तुम आज भी बिल्कुल वैसे ही हो।'

'मैं अब बहुत बदल गया हूँ राजेन्द्र। अब अतीत का कोई भी छाया मेरे भीतर शेष नहीं रह गई है।'

'नहीं, तुम जरा भी नहीं बदले हो। मैं नहीं जानता कि तुम्हारा आगे का जीवन कैसा होगा। लेकिन आज एक बात कहता हूँ। वैभव और ऐश्वर्य में ही मनुष्य के जीवन की महत्ता है। तुम सन्यास लेकर अपने जीवन को नष्ट मत करना। इस समय तुम पूर्ण कहे जा सकते हो। कोई निरर्थक काम करके अपने को अपूर्ण मत बनाना। तुम जानते

हो कि आज तुममें कोई अभाव नहीं है। अपने को धोखा देने की कोशिश मत करो। इच्छाओं और उद्देश्यों से जीवन पर नियंत्रण नहीं किया जा सकता। आज हम अपने को सुरक्षित और सशक्त अनुभव कर सकते हैं लेकिन दूसरे ही क्षण मृत्यु की विकराल बाहें हमें अपने अन्धेरे आँचल में समेट सकती है। उस दिन के आने तक हमें जीवन के सभी अभावों को दूर कर लेना चाहिये सुरेश! काश, मैं तुमसे अपना जीवन बदल सकता। विश्व ने सदा ही तुम्हारी उपासना की है। वह सदा ही तुम्हारी आराधना करता रहेगा।' तुम्हारा जीवन ही तुम्हारी सच्ची कला है।

सुरेश ने एक बार अपना हाथ अपने सुनहरे गालों पर फेरा। फिर उसने एक गहरी साँस लेकर कहा, 'मैं मानता हूँ, मेरे जीवन ने मुझे बहुत कुछ दिया है। लेकिन अब मैं वैसा जीवन व्यतीत करना नहीं चाहता। इस सम्बन्ध में मैं आज तुम्हारी कोई भी बात नहीं सुनूँगा। तुम मेरे जीवन की सभी बातों से परिचित नहीं हो। यदि तुम उन्हें जानोगे तो तुम भी मुझसे घृणा करने लगोगे। तुम हँस रहे हो। नहीं, इस तरह मत हँसो।'

राजेन्द्र बहुत देर तक हँसता रहा। फिर उसने कहा, 'आज क्लब नहीं चलोगे? सेठ हरिदास का बड़ा पुत्र तुमसे मिलना चाहता था। वह तुम्हारा परिचय प्राप्त करने को बहुत उतावला है। उसने तुम्हारे टाई बाँधने के ढंग की नकल करनी पहले ही शुरू कर दी है। वह बहुत अच्छा और सीधा लड़का है।'

सुरेश की आँखों में जाने कैसी उदासी भरी थी। उसने कहा, 'आज मैं बहुत थक गया हूँ राजेन्द्र। ग्यारह बज चुके हैं। अब मैं क्लब जाना नहीं चाहता। मैं आराम करना चाहता हूँ। क्लब के जीवन के प्रति अब मेरे मन में कोई आकर्षण नहीं है। अब मैं अपने जीवन को पूर्णतया बदल देना चाहता हूँ।'

'यह बड़ी विचित्र बात है सुरेश। तुम लोगों को उन पापों के विरुद्ध चेतावनी दोगे जिन्हें करते-करते तुम थक गये हो। किन्तु इसका कोई भी लाभ नहीं है। आदमी का व्यक्तित्व कभी नहीं बदलता। किसी

के उपदेशों से उसके जीवन में कोई अन्तर नहीं आता। अच्छे और बुरे कामों का भी उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। लेकिन आज हम इन बातों पर विचार नहीं करेंगे। रात बहुत बीत चुकी है।'

राजेन्द्र उठा और सुरेश का अभिवादन करके बाहर जाने लगा। दरवाजे के पास आकर वह एक क्षण को रुका मानों कोई और बात कहना चाहता हो। लेकिन तभी उसके अधरों पर एक हल्की सी मुस्कान फैल गई और वह चुपचाप बाहर निकल गया।

१७

आज की रात बहुत अकेली और उदास थी। हवा रुक गई थी और उमस बढ़ने लगी थी। उसने अपना कोट उतार कर कन्धे पर डाल लिया और चुपचाप सिगरेट का धुआँ उड़ाता हुआ अपने बँगले की ओर बढ़ने लगा। तभी उसके पास से मूल्यवान वस्त्र पहने हुये दो युवक गुजरे। उनमें से एक ने अपने साथी से कहा, 'यही सुरेश है।' उसे याद आया कि पहले जब कोई उसकी ओर इशारा करता था या उसके सम्बन्ध में बातें करता था तो उसे कितना सुख मिलता था। लेकिन अब वह अपना नाम सुनते-सुनते उससे भी थक गया है। वह शहर के कोलाहल से दूर गाँवों में केवल इसीलिये जाता है कि वहाँ उसे कोई नहीं जानता। उसने उस लड़की से कहा था कि वह बहुत गरीब है और उसने सुरेश की इस बात पर विश्वास कर लिया था। एक बार उसने उससे कहा था कि वह बहुत बुरा आदमी है। लड़की को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ था और वह उसकी ओर देख कर हँस दी थी। उसने कहा था कि बुरे आदमी सदा ही बूढ़े और कुरूप होते हैं। उसकी वह बात उसे अब तक याद है। वह लड़की बहुत भोली थी लेकिन उसमें वे सभी गुण थे जिन्हें वह पूर्णतया खो चुका था।

जब सुरेश घर पहुँचा तो उसका नौकर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने उसे छुट्टी दे दी और आराम से सोफे पर बैठ गया। आज उसका

मस्तिष्क उसके वश में नहीं था। वह कुँवर राजेन्द्र की बहुत-सी बातों पर विचार कर रहा था।

क्या यह सत्य है कि कोई भी व्यक्ति कभी नहीं बदल सकता। क्या उसका फूल-सा पवित्र और निष्कलंक बचपन एक बार फिर से लौट कर नहीं आ सकता! वह जानता है कि उसने स्वयं ही अपना जीवन नष्ट कर लिया है। आज उसके भीतर पापों की दलदल के सिवा और कुछ भी नहीं है। उसने अनेक व्यक्तियों का जीवन बरबाद किया है। इसमें उसे सुख मिला है। जाने कैसे आनन्द से उसका मन भरा-पूरा हो गया है। आज वह अपने जीवन के लज्जा के भार से स्वयं ही दबा जा रहा है। किन्तु क्या उसका कोई भी प्रायश्चित नहीं है? क्या उसके लिए आशा की कोई भी किरण शेष नहीं बची है।

अभिमान और वासना के एक भयंकर क्षण में उसने कामना की थी कि उसका वह चित्र उसके जीवन का सारा भार ढोता चला जाय और उसका अपना यौवन कभी समाप्त न हो। उसकी ग्लानि उसके मन में आज तक बनी हुई है। उसकी सारी असफलतायें केवल उसी चित्र के कारण है। कितना अच्छा होता यदि उसके जीवन का प्रत्येक पाप अपने साथ ही अपनी सजायें भी ले आता। दण्ड पाने से आदमी पवित्र हो जाता है।

आज जाने कैसा तूफान सुरेश के मन में उथल-पुथल मचाने लगा। वह उठा और एक बड़े से शीशे के सामने जा खड़ा हुआ। यह शीशा उसे कुँवर राजेन्द्र ने भेंट किया था।

सुरेश अश्रु भरे विस्फारित नेत्रों से शीशे में देखने लगा। एक बार उसकी किसी प्रेयसी ने उसे एक प्रेम पत्र में लिखा था कि, 'तुममें दुनिया को बदल डालने की शक्ति है। तुम्हारे अधरों की एक मुस्कान से इतिहास बदल सकता है।' आज उसके वही शब्द सुरेश के स्मृति-पटल पर चक्कर लगाने लगे। उसने उन्हें कई बार अपने अधरों से दुहराया। तभी एक चमत्कारी घटना घटी। उसे अपने सौन्दर्य से घृणा होने लगी।

उसने शीशा जोर से जमीन पर पटक दिया और उसे निर्दयता से पावों से कुचलने लगा। उसके सौन्दर्य ने ही उसे नष्ट किया है। उसी रूप और यौवन के आवरण में छिप कर वह पाप करता रहा। और अब उसका जीवन पतन के एक निर्जीव और कुरूप लोक के सिवा और कुछ भी नहीं है। सचमुच ही उसे उसके यौवन ने नष्ट कर दिया।

लेकिन अब वह अतीत की स्मृतियों को मन से निकाल देगा। अतीत को कोई नहीं बदल सकता। अब उसे अपने भविष्य पर विचार करना है। मधुकर का शव आग की लपटों में सदा के लिये सो गया है। सुधांशु ने अपनी ही प्रयोगशाला में आत्महत्या कर ली है और सुरेश का वह गम्भीर रहस्य वह अपने साथ ही ले गया है। हेमन्त के लापता हो जाने की चर्चा अब क्षीण हो चली है। कुछ ही दिनों में वह समाप्त हो जायगी। आज वह पूर्णतया सुरक्षित है। हेमन्त की मृत्यु से वह दुखी नहीं है। आज तो उसकी अपनी आत्मा की जीवित मृत्यु ही उसे खाये जा रही है। हेमन्त के उस चित्र ने ही उसका जीवन नष्ट किया। वह उसे कभी क्षमा नहीं कर सकता। हेमन्त ने उससे ऐसी बातें कहीं जो उसके लिए असह्य थी लेकिन वह फिर भी उन्हें सहता रहा। हेमन्त की हत्या तो उसके क्षणिक आवेश का ही फल था।

अब सुरेश अतीत को भुला कर नये सिरे से जीवन आरम्भ करना चाहता है। वह अपने भीतर एक नये सबेरे की प्रतीक्षा कर रहा है। उसे आशा की एक किरण दिखाई दे रही है। उसने एक भोली लड़की का जीवन नष्ट नहीं किया। भविष्य में भी वह कभी किसी लड़की का यौवन अपने क्रूर हाथों से नहीं मसलेगा। वह अपने को सुधारेगा। एक दिन वह अवश्य अच्छा आदमी बन जायगा।

उसने सोचा कि क्या उसके जीवन के साथ ही साथ उस चित्र की कुरूपता भी कम हो गई होगी ? उसके एक अच्छे काम का प्रकाश क्या उस चित्र के चेहरे पर भी चमक आया होगा ? निस्सन्देह अब चित्र में अवश्य ही कुछ परिवर्तन हुआ होगा। यदि उसका जीवन पवित्र हो गया:

है तो चित्र के चेहरे पर भी पाप की कोई छाया शेष नहीं रहेगी। हो सकता है अब तक उसके चेहरे से पाप की वह काली छाया अदृश्य भी हो चुकी हो।

उसने लैंप उठाया और स्टोर के पीछे वाले उस कमरे को खोलने लगा। जैसे ही उसने द्वार खोला उसके अधरों पर आनन्द की एक विचित्र-सी मुस्कान फैल गई। हाँ, अब वह अवश्य ही अच्छा आदमी बन जायगा। अब वह चित्र उसके लिए आतंक का कारण नहीं बन सकेगा। एक बार उसे लगा मानो किसी के अदृश्य हाथों ने उसके सिर से वह भारी-भरकम बोझ उठा लिया है जो सदा ही उसे पीड़ा पहुँचाता रहा है।

उसने जल्दी से भीतर जाकर द्वार बन्द कर लिए और चित्र के ऊपर से वह बड़ा और मूल्यवान पर्दा हटा दिया।

किन्तु वह स्तब्ध-सा चित्र को देखता रह गया। उसके अधरों से अनायास ही एक बुभुक्षित चीत्कार-सा निकल पड़ा। उसे लगा मानो पीड़ा के मारे उसका हृदय फट जायगा। उसे चित्र में कोई भी परिवर्तन दिखाई नहीं दिया। उसकी आँखों में अब भी कालिमा भरी थी। पतित व्यक्तियों की भाँति उसका चेहरा विकृत हो गया था। उसे चित्र के हाथों पर रक्त के चमकीले धब्बे दिखाई दिए। उसका सिर चकराने लगा। उसके हाथ काँपने लगे। उसने लैंप मेज पर रख दिया। यह चित्र घृणास्पद है, पहले से भी अधिक घृणास्पद है। उसके एक अच्छे काम का कोई भी मूल्य नहीं है। क्या उसका वह अच्छा काम जीवन में नई हलचल मचाने की इच्छा मात्र था?

चित्र के हाथों पर रक्त के वे दाग अब पहले से अधिक उज्ज्वल बन गए हैं। वे झुर्रीदार अँगुलियों पर भयंकर रोग की भाँति फैलते जा रहे हैं। चित्र के पावों के समीप रक्त बह रहा है। यह सब क्या है? इसका अभिप्राय क्या है? क्या वह अपने पापों को स्वीकार करने जा रहा है? क्या वह दुनिया के सामने स्वीकार कर लेगा कि जीवन में उसने अनेक अमानवीय कार्य किये हैं?

सुरेश हँसा। उसे लगा मानो यह विचार बहुत भयंकर है। यदि वह उन पापों को स्वीकार भी कर ले तो उन पर कौन विश्वास करेगा? हेमन्त की हत्या का अब कोई भी सबूत बाकी नहीं बचा है। उसने स्वयं उसकी सभी चीजों को आग को भेंट कर दिया था। यदि सुरेश आज वह बात प्रकट भी कर दे तो दुनिया उसे पागल के सिवा और क्या कह सकती है, किन्तु फिर भी पापों को स्वीकार कर लेना उसका कर्तव्य है। ईश्वर पृथ्वी या स्वर्ग में मनुष्य से उसके पापों का जवाब जरूर माँगता है।

किन्तु क्या यह चित्र उसके जीवन का वास्तविक दर्पण है? उसने एक अच्छा काम किया। उसने एक लड़की का जीवन नष्ट नहीं किया। किन्तु उस अच्छे काम को इस चित्र पर हलकी-सी छाया भी नहीं है। क्या उसके जीवन में पाप, कुटिलता और अमानुषिकता के सिवा और कुछ है ही नहीं? हाँ, शायद उसके जीवन में इसके सिवा और कुछ भी नहीं है। जो कुछ उसने किया है वह दिखावा है, छल है, धोखा है। उसने अपना बड़प्पन दिखाने के लिए ही उस लड़की का जीवन नष्ट नहीं किया। अब वह अपने को खूब पहचान गया है।

लेकिन क्या इस हत्या की प्रतारणा उसे जीवन भर दुखित करती रहेगी? क्या वह अपने अतीत का बोझा कभी भी अपने सिर से नहीं उतार सकेगा? क्या वास्तव में ही उसके अपराध दुनिया के सामने प्रगट हो जायेंगे? नहीं, ऐसा कभी नहीं होगा। उसके विरुद्ध केवल यही चित्र एक सबूत रह गया है। वह इस सबूत को भी नष्ट कर देगा। एक दिन था जब उसे इस चित्र को बदलते हुये देख कर आनन्द का अनुभव होता था। लेकिन अब उसके मन में सुख की कोई भी रेखा जाग्रत नहीं होती। इसी चित्र के कारण उसने अनेक रातें जाग कर बिताई हैं। दुनिया की नजरों से इसे बचाने के लिये उसने कितना संघर्ष किया है। इसकी स्मृति मात्र से ही उसके जीवन के सबसे सुखद क्षण प्रतारणा के युग बन गये हैं। यह चित्र उसकी आत्मा की भाँति कभी भी उसके व्यक्तित्व से ओझल नहीं हुआ है। वह उसे नष्ट कर देगा। जरूर नष्ट कर देगा।

उसने चारों ओर देखा। सामने वह छुरा अब भी रखा हुआ जिससे उसने हेमन्त की हत्या की थी। हाँ, इसी छुरे से वह उस महान कलाकार की सर्वश्रेष्ठ कृति की भी हत्या करेगा। इस चित्र के साथ ही साथ उसका अतीत भी समाप्त हो जायगा। तब वह पाप के इन बन्धनों से मुक्त हो जायगा। तब उसके जीवन में शान्ति वास करेगी। अब वह अधिक सहन नहीं कर सकता। वह जीवन में सुख चाहता है, शान्ति चाहता है। उसने छुरा उठाया और पागलों की भाँति बार-बार चित्र पर मारने लगा।

तभी एक भयंकर चीत्कार सुनाई पड़ा। यह चीत्कार इतना भयंकर था कि भय से काँपते हुये नौकर अपने कमरों से बाहर निकल आये। सड़क पर जाते हुये दो आदमी रुक गये और आश्चर्य से उस विशाल अट्टालिका की ओर देखने लगे। अट्टालिका में अन्धकार छाया हुआ था। केवल ऊपर वाली खिड़की से हलका-हलका प्रकाश निकल रहा था।

कुछ ही देर में सड़क पर काफी भीड़ जमा हो गई। पुलिस के एक सिपाही ने द्वार पर लगी घंटी बजाई लेकिन भीतर से कोई उत्तर नहीं आया। अन्त में द्वार तोड़े गये और बहुत से लोगों ने एक साथ भीतर प्रवेश किया। इन लोगों में कुँवर राजेन्द्र भी था जो सुरेश को कल... जाने के लिये उसी समय वहाँ आया था।

जैसे ही राजेन्द्र ने स्टोर के पीछे वाले उस कमरे में प्रवेश किया, उसने लैंप के धीमे प्रकाश में देखा कि सामने दीवार पर सुरेश का वह विशाल चित्र टँगा है। वह आज भी वैसा ही सुन्दर और आकर्षक है जैसा हेमन्त की चमत्कारी तूलिका ने उसे एक बार चित्रित किया था। सुरेश के यौवन और सौन्दर्य की छाया उसमें ज्यों की त्यों विद्यमान है। उसके अधरों पर आज भी फूलों जैसी मुस्कान फैली है और उसी के नीचे फर्श पर एक मृत व्यक्ति पड़ा है। उसकी छाती में छुरा घुसा है और उससे रक्त निकल कर सफेद फर्श पर फैल रहा है। उसका चेहरा मुरझाया हुआ है। उसके शरीर पर झुर्रियाँ पड़ी है। जीवन भर वासना में लिप्त रहने के कारण उसका चेहरा घृणास्पद बन गया है। जब तक लोगों ने उस व्यक्ति की अँगूठी नहीं देख ली, वे यह भी नहीं पहचान सके कि वह कौन है।